बाल विज्ञान पत्रिका

चकमक

रु. 2.50

नवंबर, 85

इस अंक में

चकमक समाचार	1
पाठक लिखते हैं	2
कागज का खेल	4
एक नन्ही-काली मछली (फारसी से नासिरा शर्मा द्वारा अनूदित)	5
एक मजेदार खेल	9
जब मैंने चुनाव देखा	10
जब घर में कथा हुई	11
जब मैं घर पर अकेला था	13
ऐसे सीखा साइकिल चलाना	15
सपने की बात	17
अपनी प्रयोगशाला	18
चित्रों के पन्ने	19
भारत के बच्चे	23
पर्याप्त भोजन– किसे और क्यों	26
चित्र का पन्ना	27
गरीबी और पोषण	28
माथा पच्ची	30
कविता का पन्ना	32
चित्र का पन्ना	33
खेल खेल में	34
कैसी खाने की जुगाड़	35
जब हमारी गाय जनी	36
भूरी भैंस बियानी है	37
खेत में लगाया लबोदा	38
सवालीराम	39
चकमक कथाएं	40

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका भाग 1 अंक 5 नवंबर, 1985

संपादक : रेक्स
संपादन : राजेश उत्साही, निशा व्यास
कला : जया विवेक
उत्पादन/वितरण : हिमांशु बिस्वास, हरगोविंद राय, गोपाल राठी, कमल सिंह
समन्वय : विनोद रायना
इस अंक में सहयोग : हृदयकांत एवं शहीद भगत सिंह पुस्तकालय, पिपरिया के कार्यकर्ता

चंदे की दरें
6 महीने : 15 रुपए
1 साल : 30 रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, पोस्टल आर्डर, मनी आर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजिए।
ड्राफ्ट एकलव्य के नाम पर बनवाइए।

पत्र/चंदा भेजने का पता
एकलव्य,
ई 1/208 अरेरा कालोनी,
भोपाल, 462 016 (म.प्र.)

चित्र : सरीता स्टीफन
कक्षा आठवीं, सोहागपुर

चकमक | समाचार

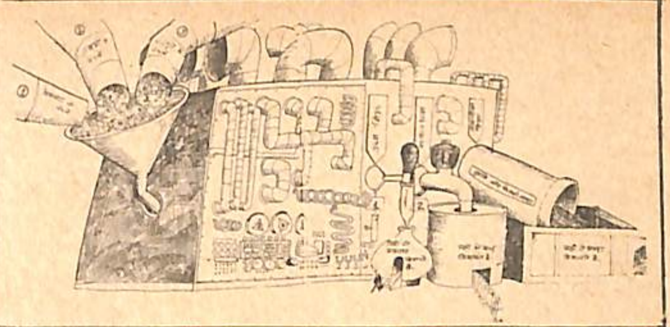

खतरा!!! स्कूल

यह चित्र हमने एक किताब से लिया है। किताब का नाम है ''डेंजर-स्कूल'', यानि ''खतरा!! स्कूल''।

यह किताब स्विटजरलैंड से निकली है।

क्या, सही में स्कूल एक खतरनाक जगह है? खतरा किस प्रकार का है?

इस चित्र को देखो। यह विशाल मशीन आखिर है क्या? यह है स्कूली व्यवस्था या शिक्षा तंत्र। इसका समाज पर क्या प्रभाव है? इस चित्र को देखकर कुछ समझ सकते हो?

चलो हम बताते हैं।

इस मशीन में कच्चा माल भेजने के तीन रास्ते हैं। जब मशीन का उत्पादन 'शिक्षित' बच्चे हैं तो कच्चा माल 'अशिक्षित' बच्चे ही होंगे। पर कच्चा माल और उत्पादन भी कई किस्म के हैं।

कच्चा माल तीन किस्म का है : अफसर और उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों के बच्चे, मध्यम वर्ग और बाबुओं के बच्चे, और फैक्टरी एवं कृषि मजदूरों के बच्चे।

यह कच्चा माल मशीन में जाता है। यानि सब स्कूल में दाखिल होते हैं। अब मशीन में देखो। मशीन के तीन हिस्से हैं– उच्च शिक्षा, सामान्य शिक्षा और कामकाज/तकनीकी शिक्षा।

अब देखो इसका उत्पादन। मशीन से उत्पादन भी तीन तरह का निकलता है। तीन पाइप निकलते हैं मशीन से। एक में से इक्के-दुक्के लोग निकल रहे हैं। ये हैं उच्च शिक्षा प्राप्त करके निकले बच्चे। दूसरे में से बड़ी संख्या में बाबू तथा मध्यम वर्ग के लोग। जिन्होंने सामान्य शिक्षा प्राप्त की। तीसरे में से थोक में फैक्टरी एवं कृषि मजदूर निकल रहे हैं। ये हैं कामकाज/तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले।

इससे यह मतलब निकलता है कि हमारी स्कूली व्यवस्था में मजदूर का बच्चा शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी मजदूर ही रहेगा। क्योंकि वह उसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त कर पाता है। अफसर के बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करके अफसर बन जाते हैं। मध्यम वर्ग के बच्चों में से अधिकतर को, शिक्षा बाबू की नौकरी ही दिला पाती है।

इससे समाज में जो वर्गीकरण है वह बना रहता है, बदलता नहीं।

क्या तुम इस मत से सहमत हो? क्या मजदूर के बच्चे अफसर नहीं बन सकते? तुम खुद अपने गांव में पता करो। कितने बच्चे कालेज गए या जाते हैं? मजदूर तथा किसानों के बच्चे कहां तक पढ़ पाते हैं? यह भी पता करना कि बाकी बच्चों का हाल क्या है?

• • •

भारत के बच्चे

चकमक का यह अंक एक प्रकार से 'बाल दिवस' पर विशेषांक है। तुम्हें पता है कि हर साल 14 नवंबर को 'बाल दिवस' मनाया जाता है। क्या तुम बता सकते हो कि इसके लिए यह तारीख ही क्यों चुनी गई?

खैर, हम इस अवसर पर अपने देश के बच्चों के बारे में कुछ जानकारी प्रकाशित कर रहे हैं। 'भारत के बच्चे' और 'गरीबी और पोषण' लेख इसी संबंध में हैं। यह जानकारी सरकारी आंकड़ों पर आधारित है। एक खास बात, इस अंक में अधिकांश सामग्री बच्चों की यानी तुम्हारी कलम और ब्रश, रंग से लिखी/बनी है। आशा है तुम्हें यह अंक पसंद आएगा। अपनी पसंद-नापसंद हमें जरूर लिखना

कहानियां...कविताएं...चित्र

पिपरिया के शहीद भगतसिंह पुस्तकालय एवं सांस्कृतिक केंद्र ने अपनी दूसरी वर्षगांठ पर बच्चों के लिए कहानी, कविता तथा चित्रकारी की प्रतियोगिता आयोजित की। कविता/कहानी लिखने तथा चित्र बनाने के लिए कुछ विषय दिए गए थे। इसमें पिपरिया, सोहागपुर, बनखेड़ी तथा गाडरवारा के बच्चों ने भाग लिया। कुछ चुनी हुई रचनाएं तथा चित्र हम प्रकाशित कर रहे हैं। इनके शीर्षक 'चकमक' के पड़ोस में रहने वाली कक्षा पांचवी की छात्रा दिव्या अग्रवाल की लिखावट में हैं।

विद्यालयों के लिए....

'चकमक' मध्य प्रदेश के शिक्षा विभाग तथा आदिम जाति एवं हरिजन कल्याण विभाग के आग्रह पर उनके द्वारा संचालित सभी माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में जुलाई, 85 से प्रति माह भेजी जा रही है। अतः विद्यालयों को चकमक के लिए चंदा भेजने की आवश्यकता नहीं है।

यदि आपके विद्यालय में पत्रिका नहीं पहुंच रही है, या आपका पता सही नहीं है, तो कृपया हमें अपना सही पता डाकघर, जिला तथा पिन कोड सहित लिख कर भेजें।

क्या मजदूर तांबा हैं?

सारे दिन हम पीठ झुकाए
गेहूं ढोएं, अंबार लगाएं।
लेकिन अब तो जगह नहीं है
ढेरों अन्न बिखरता जाए।
जहाज भरे हैं, जगह नहीं है,
अन्न नदी में गिरता जाए।
हुक्म मिला है बोरे ढोओ
जैसे हमें तांबे का समझा जाए।

जहाज भरे थे, जगह नहीं थी अन्न रखने के लिए, लेकिन फिर भी मजदूर भूखे रहते थे। उन्हें तांबा समझा जाता था। एक वस्तु या मशीन, आदमी नहीं। अन्न ज्यादा पैदा होने का यह अर्थ नहीं था कि सब लोग पेट भर खा सकें। अन्न का वितरण उन्हीं लोगों में किया जाता था जिनके पास उसका दाम चुकाने के लिए धन था। आज भी स्थिति कुछ ऐसी ही है। मजदूरों के श्रम से अन्न तो बड़ी मात्रा में पैदा किया जा रहा है, पर वह मजदूरों को ही नहीं मिल रहा। ढेर सारा अनाज विदेश भी निर्यात कर दिया जाता है। तुम शायद यकीन नहीं करोगे यदि हम कहें कि यह कविता आज नहीं बल्कि 5000 वर्ष पहले मिस्त्र में लिखी गई थी।

चकमक हमें बहुत अच्छी लगती है। चकमक में पहेली, चुटकुले, कविता, कहानी आदि चीजें अच्छी लगीं। चकमक का पहला अंक अच्छा लगा।

रुचिता द्विवेदी
कक्षा चौथी, भोपाल

मुझे चकमक बहुत अच्छी लगती है। क्योंकि इससे बच्चों का ज्ञान बढ़ता है। चकमक में कई सुंदर चित्र भी छपते हैं।

दिव्या अग्रवाल
कक्षा पांचवीं, भोपाल

हमारे विद्यालय में चकमक आई। पढ़कर प्रसन्नता हुई। विज्ञान में रुचि बढ़ाने में व नई-नई जानकारी देने में यह सहायक होगी।

अमृता जोशी
कक्षा नवमीं, कमलापुर, देवास

मैंने चकमक के तीनों अंक पढ़े, बहुत अच्छे लगे। हमारी टीचर ने हमसे माचिस का सूक्ष्मदर्शी भी बनवाया। भैया हमको माथा-पच्ची वाला स्तंभ अच्छा लगा। पर दूसरे अंक में प्रश्नों के उत्तर भी भेजा करें।

पूर्णिमा उपाध्याय
कक्षा सातवीं, औबेदुल्लागंज

पत्रिका बालोपयोगी है, ज्ञानवर्धक, पथ प्रदर्शक भी लगी।

प्रधान पाठक
मा.वि. लोंगसरी, धार

पाठक लिखते हैं

आपने चकमक के बारे में जो लिफाफा हमारे स्कूल में भेजा था, वह लिफाफा प्रिंसिपल के पास न पहुंचकर कूड़ेदानी में पहुंच गया। किसी तरह वह मेरे हाथ लग गया। बिना पत्रिका अध्ययन किए हम यह कैसे जानेंगे कि पत्रिका हमारे लिए कितनी उपयोगी है। मैं 2.50 रुपए भेज रहा हूं। आप पत्रिका की एक प्रति भेज दें। पत्रिका पढ़कर हम वार्षिक ग्राहक बन सकते हैं।

संतोष मिश्र
बिलासपुर

चम-चम करती चकमक आती,
बच्चों का यह ज्ञान बढ़ाती।
हर महीने कुछ नई कहानी,
लेकर आती चकमक रानी।
चकमक सबके मन को भाती,
नई पहेलियां लेकर आती।
मेरी चकमक कितनी प्यारी,
इसमें बच्चों की बातें न्यारी।
सबसे अच्छी सबसे सुंदर,
चित्र सुहाने इसके अंदर।
चकमक से जो पढ़े कहानी,
वही सुनाती दादी—नानी।
कितनी सुंदर चकमक प्यारी,
लगती है दिखने में भोली-भाली।

दीपा अग्रवाल
कक्षा दसवीं, भोपाल

सोहनलाल चौधरी
पेटलावद, झाबुआ

पत्रिका में ज्ञान चर्चा, विद्यार्थी -शिक्षक -पालक संबंध, कुछ आलोचनाएं, कुछ शिक्षकों, विद्यार्थियों के कर्तव्य आदि बातों का उल्लेख होना चाहिए। कुछ सामाजिक बातों का होना जरूरी है। ये बातें पत्रिका में नहीं हैं।

एस.पी. वामनकर
शिक्षक, रातामाटी, बेतूल

कल ही मैंने 'चकमक' का भाग एक पढ़ा। पत्रिका मुझे बेहद अच्छी लगी। खास तौर पर अफवाह कैसे फैलती हैं, 1, 2, 3, सवालीराम, माथापच्ची और आखिर पक्षी क्या हैं? बहुत पसंद आए। रश्मि पालीवाल को मेरी ओर से बधाई!

तारा, सोहागपुर

'चकमक' में छपे माथा पच्ची खंड के उत्तर संभव हों तो अगले अंक में देने का कष्ट करें। क्योंकि यदि कुछ बालक प्रश्न के उत्तर नहीं खोज पाते हैं, तो उनमें अनावश्यक ही मानसिक हीनता पैदा होगी जो उनके विकास में बाधक होगी।

बृजमोहन पांडेय
होशंगाबाद

कौन जीता! कौन हारा!

सितंबर के अंक में प्रकाशित इस चित्र कहानी प्रतियोगिता में हमें कई कहानियां मिली हैं। तीन कहानियां यहां प्रकाशित कर रहे हैं। उपहार की किताबें भी जल्दी भेजी जा रही हैं।

पिन्टू नाम का एक कुत्ते का बच्चा था। जिसे उसके मालिक ने पाल रखा था। एक दिन कुत्ते के बच्चे ने देखा, मालिक घर पर नहीं है। पिन्टू घर से निकल पड़ा। थोड़ी दूर जाने पर उसे भूख लगी। वह भोजन की तलाश में भटक रहा था, तभी कहीं से उसे एक रोटी का टुकड़ा मिला। वह उसे लेकर आगे बढ़ा। थोड़ी दूर पर उसे दो दूसरे कुत्ते लड़ते-झगड़ते दिखाई दिए। उनके सामने एक मांस का टुकड़ा पड़ा था। पिन्टू ने सोचा जरूर वे दोनों इस मांस के टुकड़े के लिए लड़ रहे हैं। कुछ देर तक वह दोनों का झगड़ा देखता रहा। उसके दिमाग में एक बात सूझी। वह मांस का टुकड़ा उठा लाया और रोटी का टुकड़ा वहीं छोड़कर भाग गया।

दोनों झगड़ने वाले कुत्तों ने देखा वह छोटा सा पिल्ला हमारा मांस का टुकड़ा लेकर चंम्पत हो रहा है। उनकी हिम्मत नहीं हो रही थी कि वे जाकर उस पिल्ले से अपना भोजन छीन लें। वे दोनों पछता रहे थे कि हम क्यों लड़ते रहे। उन दोनों ने फिर कभी न लड़ने की कसम खाई। अब आप ही बता सकते हैं कि उनमें से किसकी जीत हुई और हार किसकी?

राजेश जोशी
कक्षा नवमीं, धार

एक बार एक कुत्ता जो कि बहुत दिनों से भूखा था, खाने की तलाश में निकला। चलते-चलते उसे एक हड्डी का टुकड़ा मिला। उसी हड्डी को देखकर एक और कुत्ता वहां आ पहुंचा। वह भी बहुत दिनों से भूखा था। दोनों एक दूसरे को देखकर गुर्राने लगे। तब पहला कुत्ता कहता है, कि पहले मैं आया इसलिए मैं खाऊंगा। तब दूसरा कहता है, कि मैं इसे देखकर पहले आया। बस वे दोनों इस बात पर झगड़ने लगते हैं। यह सब एक कुत्ता देख रहा था। वह चुपचाप हड्डी उठाकर चलता बना।

तब तक उन दोनों कुत्तों ने फैसला किया कि क्यों न अपन दोनों आधा-आधा बांट कर खाएं। पर जब उन्होंने देखा तो हड्डी नहीं मिली। दो की लड़ाई में तीसरे का भला होता है।

राहुल मंगलरांव नगराले
कक्षा आठवीं, शुजालपुर

मोती छोटा, पर चालाक कुत्ता था। वह शरीर से लड़ने के बजाए बुद्धि से काम लेता था। अपनी चालाकी से वह अपने से बड़े को भी हरा देता था। इसके विपरीत हीरा और गबरू हर बात में लड़ाई करना ही जानते थे। वे मोती को डरपोक कहकर चिढ़ाते थे। मोती उस समय चुप रहा। पर वह इन दोनों को अपनी चालाकी दिखाने के लिए अवसर की तलाश में था।

एक दिन हीरा और गबरू को रास्ते में हड्डी पड़ी मिली। जैसी कि उन दोनों की आदत थी, वे आपस में लड़ने लगे। अंत में यह तय हुआ कि जो जीतेगा वही इसका हकदार होगा। मोती वहीं बैठा उनकी लड़ाई देख रहा था। जब तक उन दोनों की लड़ाई समाप्त हो, वह पास पड़े नारियल के छिलके को वहां रख आया और हड्डी लेकर भाग निकला। जब हीरा और गबरू की लड़ाई समाप्त हुई और उन्होंने जो देखा, उसे देखकर उनके लिए मोती की चालाकी और अपनी मूर्खता पर पछताने के सिवाए कुछ न था।

कल्पना पाठक
घटिया, उज्जैन

● ● ●

चकमक का प्रथम अंक अनायास हाथ लग गया, यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि आपने म.प्र. मे सर्वप्रथम बाल पत्रिका निकाली है। आपके सद्प्रयासों को बधाई। आप, अपने उद्देश्य मे सफल हो।

रामानंद 'स्वर्ण'
किला रोड, भिंड

भाग 1 अंक 2 अगस्त 85 की 'चकमक' की आकर्षक प्रति मिली। यह यथार्थ में बालोपयोगी है। दूसरे सारे स्तंभ आकर्षक एवं सार्थक हैं। बालकों के लिए यह मनोरंजक ही नहीं अपितु सार्थक ज्ञानवर्धक भी है। प्रत्येक शाला में इसका होना कम-से-कम आज के परिप्रेक्ष्य मे आवश्यक है। यह पत्रिका गागर में सागर है। पेंटोमीनो (एक मजेदार खेल) मेरी शाला के बालकों के लिए अति-प्रिय बन गया है। यह ज्ञान वाहिका है, जिसमें नव संजीवन मंत्र फूंकने का पर्याप्त संबल है। मैं उड़िया भाषी हिन्दी सेवी हूं तथा शाला का प्रधानाध्यापक हूं।

प्रद्युम्नदास वैष्णव
पझरापाली, रायपुर

चकमक का तीसरा अंक पढ़कर ऐसा लगा कि विषय व कलेवर दोनों दृष्टि से पत्रिका की एक अच्छी शुरुआत है। शिक्षकों व बालकों को पत्रिका में उपयोगी सामग्री मिली। विशेष रूप से विज्ञान के क्षेत्र में नई-नई बातें आपने उसमें शामिल की हैं।

के.एल. पिपलोदिया
सिद्दीकगंज, सीहोर

उच्चतर माध्यमिक शाला, कोंटा (बस्तर) के छात्रों ने कुछ चित्र बनाकर भेजे हैं। ये चित्र यहां प्रकाशित किए जा रहे हैं।

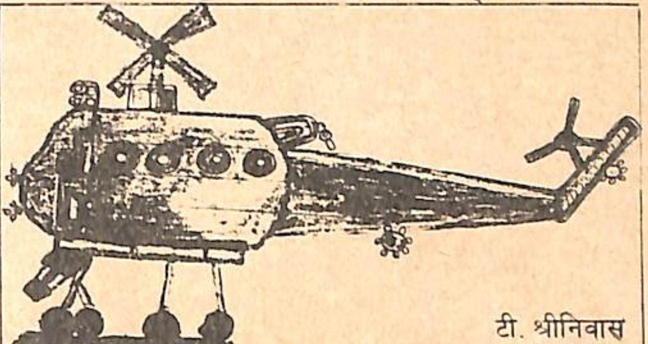
टी. श्रीनिवास
कक्षा नवमीं

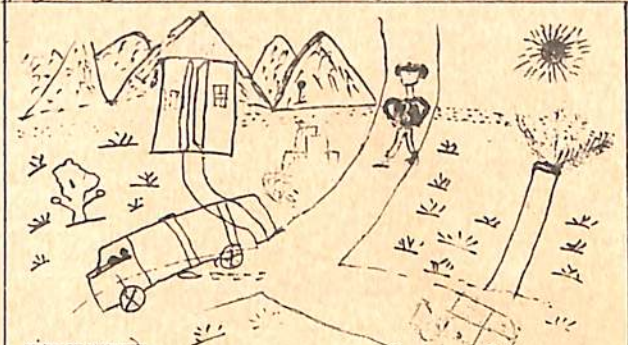
पंकज पाठले
कक्षा आठवीं

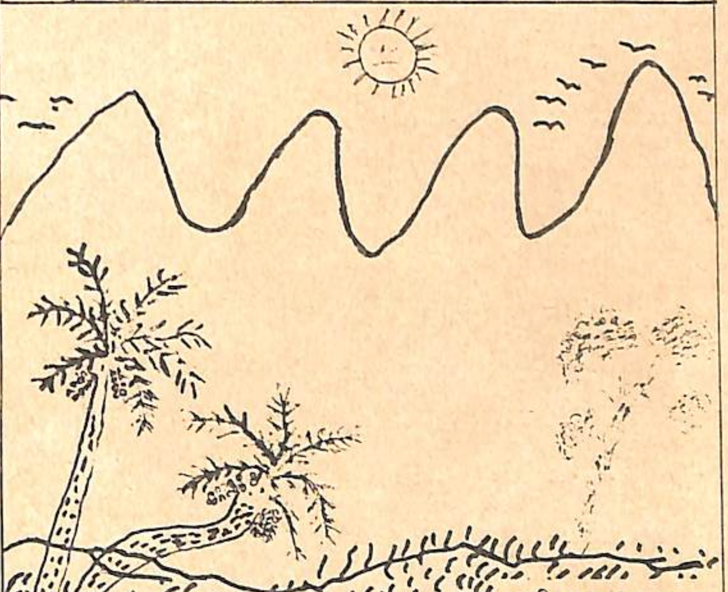
अजित प्रतुल एक्का
कक्षा छठवीं

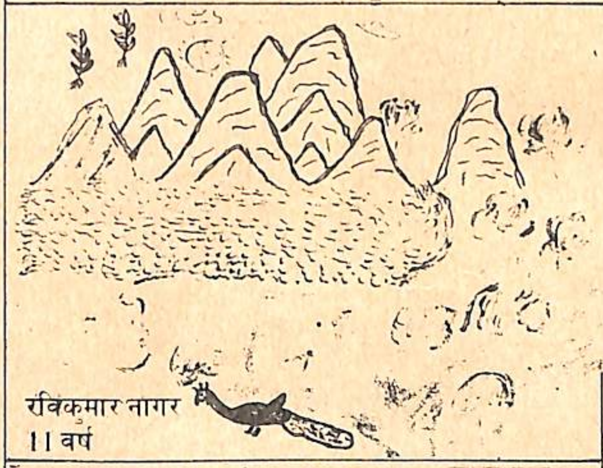
रविकुमार नागर
11 वर्ष

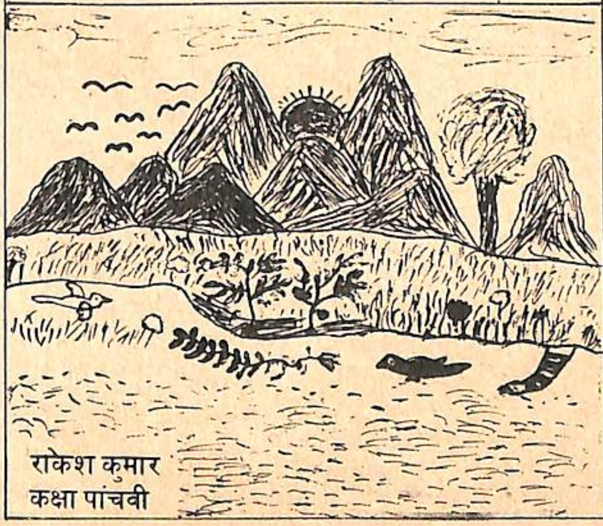
राकेश कुमार
कक्षा पांचवी

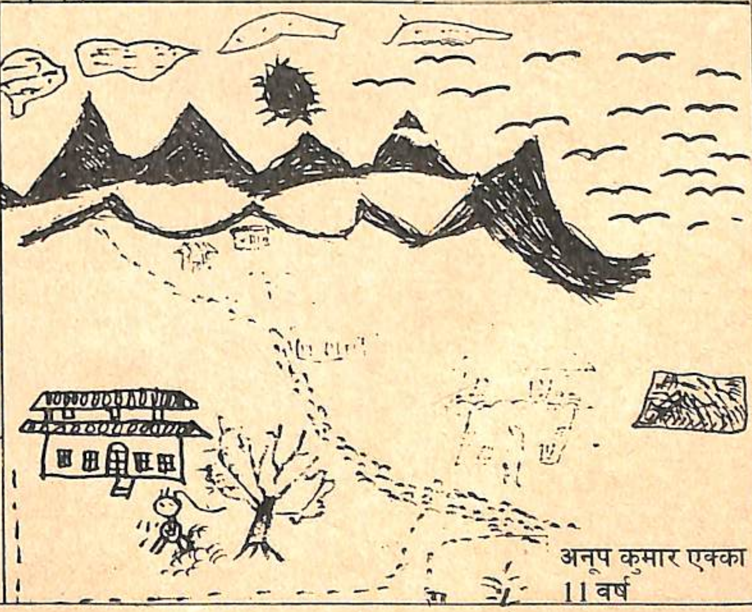
अनूप कुमार एक्का
11 वर्ष

चलने वाला भालू

तुमने विभिन्न प्रकार के चित्र और कागज के खिलौने बनाए होंगे। हम तुम्हें एक चलता हुआ भालू बनाना सिखाएंगे।

सबसे पहले एक कोरा सफेद कागज, एक पेंसिल, रबर, स्केल, रंग व ब्रुश, गोंद, एक मोटा गत्ता, कैंची, आलपिन, खाली रीफिल और रिवेट (रिपीट) पिन रख लो।

कोरे सफेद कागज पर करीब 16 सेंटीमीटर लंबा और 9 सेंटीमीटर चौड़ा (चित्र (क) के अनुसार) पेंसिल से भालू का चित्र बनाओ। वैसे ही (ख) और (ग) चित्र भी बनाओ। अब (क) व (ग) चित्र ब्रुश व रंग से विभिन्न रंगों में रंग लो।

रंगने के बाद गत्ते पर गोंद लगाकर चिपका दो। सूखने पर बाहरी रेखा से भालू की आकृति काट लो। इसी प्रकार (ख) और (ग) चित्र को भी गत्ते पर चिपका कर काट लो। छेद वाले स्थान पर तीनों में छेद कर लो। सबसे ऊपर चित्र (क), फिर चित्र (ख), फिर चित्र (ग) रखकर तीनों छेदों में रिपीट पिन (रिवेट, जो चित्र (घ) में दर्शाई गई है) अंदर घुसा दो। दूसरी तरफ, थोड़ा ढ़ीला छोड़ते हुए, पिन को मोड़ दो।

अब आलपिन लो। उसको चित्र (क) में दिखाए स्थान में घुसा दो और दूसरी तरफ निकाल दो। निकले भाग में रीफिल का एक छोटा टुकड़ा कैंची से काटकर डालो और पिन को दूसरी तरफ मोड़ लो। ध्यान रहे पिन (ख) चित्र में नहीं फंसाना।

तुम्हारा चलने वाला भालू तैयार है। इसे चलाने के लिए चित्र (ग) की पट्टी को आगे की ओर धकेलो। लो, तुम्हारा भालू चलने लगा।

वीणा भाटिया
हरदा

शहनाई

क्या तुम बिसमिल्ला खां की शहनाई बना सकते हो? बजा सकते हो? नहीं?

तो आओ, हम यह शहनाई तैयार करें।

सामग्री : मामूली मोटा गत्ता कागज, छोटी कैंची, पतंगी कागज (वह भी मात्र 10 सेंटीमीटर का टुकड़ा) या मकड़ी की झिल्ली। (वह झिल्ली जिसमें मकड़ी अंडे देकर चली जाती है। यह एक प्रकार का पतला सा सफेद 'कागज' है जो छप्पर में दीवार के कोनों पर मिल सकता है।)

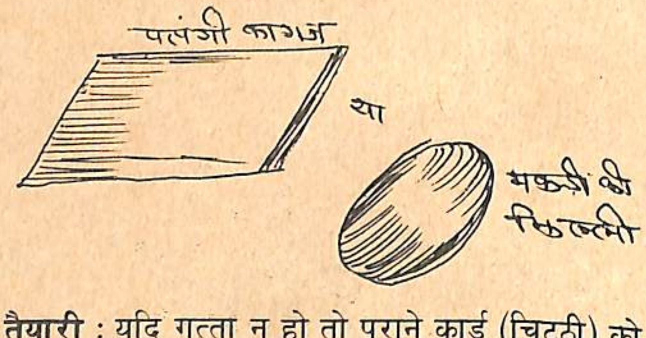

तैयारी : यदि गत्ता न हो तो पुराने कार्ड (चिट्ठी) को गोल मोड़कर धागे से मोड़ को कस दो। अब किसी भी एक तरफ बांसुरी के समान कैंची के छह छेद काट लो। अब मकड़ी की झिल्ली के टुकड़े या पतंगी कागज के टुकड़े को एक ओर बांध दो।

लीजिए शहनाई तैयार!!

(शेष पृष्ठ 9 पर)

पिछले अंक में तुमने पढ़ा कि कैसे नन्ही-काली मछली अपने घर से संसार देखने निकली। रास्ते में कई अन्य तरह के प्राणियों से उसकी मुलाकात हुई। अब आगे की कहानी पढ़ो.....

समद बहरंगी

एक नन्ही काली मछली

नदी किनारे एक गांव था। छोटी मछली कुछ समय तक वहां से आने वाली मनुष्यों की आवाज को सुनती और छोटे बच्चों को तैरते हुए देखती रही। फिर मछलियों से विदा लेकर आगे बढ़ गई। वह तैरती गई और फिर अंधेरा होने के बाद एक पत्थर के नीचे सो गई।

आधी रात को वह चांद की रोशनी से जाग गई। उसने देखा कि चारों तरफ सभी चीजें जगमगा रही थीं। छोटी मछली को चांद बहुत ही अच्छा लगता था। जब चांद की परछाईं पानी पर नाचती थी तो वह अपने झरने के घर से बाहर आकर चांद से बातचीत करती रहती थी। लेकिन हमेशा उसकी मां जाग जाती और उसे वापस घर ले जाकर सुला देती थी। आज वह अकेली थी। वह ऊपर आई और चांद को प्रणाम किया। चांद ने भी उसके अभिवादन का जवाब दिया और पूछा, "प्यारी मछली, क्या समाचार है?"

छोटी मछली बोली, "मैं पूरे संसार में घूमने के लिए निकली हूं।"

"संसार तो बहुत बड़ा है," चांद बोला। "तुम पूरे संसार को नहीं देख पाओगी।"

"खैर, मैं जितना जी पाऊंगी उतना ही देखूंगी," मछली बोली।

फिर चांद बोला, "मैं तुम्हारे साथ रहना चाहता हूं,

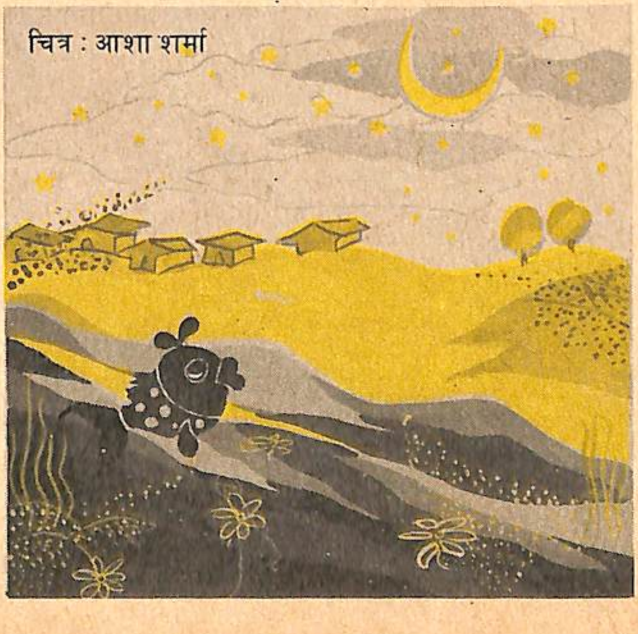

लेकिन एक बहुत बड़ा काला बादल मेरी ओर आ रहा है और वह मेरी रोशनी को रोक लेगा।"

"प्यारे चांद, मुझे तुम्हारी रोशनी बहुत अच्छी लगती है," मछली बोली। "मैं चाहती हूं कि तुम्हारी रोशनी हमेशा मुझ पर गिरती रहे।"

"मेरी प्यारी-छोटी मछली," चंद्रमा बोला, "तुम यदि सत्य जानना चाहती हो तो तुम्हें मैं यह बता दूं कि मेरे पास कोई भी रोशनी नहीं है। मुझे तो रोशनी सूरज देता है। और मैं उसे धरती पर डालता हूं। क्या तुम्हें यह मालूम है कि मनुष्य अब मुझ पर आने लगे हैं?

"लेकिन... लेकिन यह तो असम्भव है," छोटी मछली दुख से बोली।

चंद्रमा बोला, "यह मुश्किल है, लेकिन यह मनुष्य प्राणी कुछ भी कर सकते हैं।" चांद अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया कि काले बादल ने उसे ढंक लिया और रात फिर अंधेरी हो गई। छोटी मछली फिर अकेली रह गई। थोड़ी देर अंधेरे में इधर-उधर देखने के बाद वह वापस पत्थर के नीचे सो गई। दूसरे दिन सबेरे वह कुछ मछलियों की आवाजों के कारण जाग गई। जैसे ही छोटी मछली को उठा हुआ देखा, सभी मछलियां एक साथ बोलीं, "शुभ प्रभात, छोटी-काली मछली।"

छोटी मछली ने तुरंत उन्हें पहचान लिया और बोली, "तो आखिर तुम लोगों ने मेरा पीछा करने का निश्चय किया है।"

"हां," एक बोली। "लेकिन हमारा डर अभी भी हमारे साथ है।"

"सागरी सारस के विचार से अभी भी डर लग रहा है," दूसरी बीच में ही बोली।

तुम लोग बहुत ज्यादा सोचती हो," छोटी मछली बोली। "तुम्हें हमेशा ही सोचते नहीं रहना चाहिए। एक बार हमने चलना शुरू कर दिया तो हमारा डर खत्म हो जाएगा।"

छोटी मछली की बात पूरी ही हुई थी कि उन्हें ऐसा लगा कि उनके चारों तरफ पानी बढ़ गया और उनके सिर पर छतरी जैसी दिखाई दी, फिर काला अंधेरा हो गया। भागने

के लिए कोई रास्ता नहीं दिख रहा था। छोटी मछली समझ गई कि वे सब सागरी सारस की थैली में फंस गए हैं।

छोटी मछली चिल्लाई, ''हम सागरी सारस की थैली में फंस गए हैं, लेकिन अभी भी बचना संभव है।''

सभी मछलियां रोने और चिल्लाने लगीं। एक चिल्लाई, ''हमें यहां से भागने के लिए कोई रास्ता नहीं है, और इसका कारण तुम हो। तुम हमें सही रास्ते से भटकाकर गलत रास्ते पर लाईं, और अब यह सारस हमें निगल लेगा।''

तभी अचानक भयानक हंसी सुनाई दी। वह सारस हंस रहा था। सारस बोला, ''अरे! मैंने तो बहुत सी छोटी मछलियों को पकड़ लिया है। मुझे तुम सब के लिए अफसोस है.... हा.. हा.. हा.. हा... मैं तुम्हें निगलना नहीं चाहता।''

छोटी मछलियां गिड़गिड़ाते हुए बोलीं, ''आदरणीय सारस महाराज, हमने आपके बारे में बहुत कुछ सुना है। यदि आप अपना मुंह एक बार थोड़ा सा खोल दें तो हम आपके आभारी होंगे। कृपया एक बार मुंह खोल दीजिए।''

सारस बोला, ''मैं तुमको निगलना नहीं चाहता क्योंकि मेरे पास बहुत मछलियां रखी हुई हैं। जरा अपने नीचे तो देखो।''

कुछ छोटी-छोटी मछलियां थैली में मरी पड़ी थीं। मछलियां बोलीं, ''सारस महाराज, हमने कोई गुनाह नहीं किया; हम सब बेगुनाह हैं; हमें तो इसी काली मछली ने धोखा दिया है।''

छोटी-काली मछली चिल्लाई, ''अरे कायरो, क्या तुम यह सोचती हो कि यह दुष्ट सारस तुम्हारी प्रार्थना सुनकर छोड़ देगा।''

''तुम यह नहीं जानती कि तुम क्या कह रही हो?'' सभी चिल्लाईं। ''थोड़ी ही देर में तुम देखोगी कि सारस महाराज हमें छोड़ देंगे और तुम्हें निगल जाएंगे।''

सारस बोला, ''मैं तुम्हें एक शर्त पर छोड़ सकता हूं।''

''जरूर, आप केवल हमें अपनी शर्त सुनाएं,'' मछलियां बोलीं।

सारस बोला, ''तुम इस काली मछली को मार डालो तो मैं तुम्हें छोड़ दूंगा।

छोटी-काली मछली एक कोने में चली गई और बोली ''इसकी बातों में मत आओ; यह सारस हमें आपस में लड़ाना चाहता है; मेरे पास एक योजना है.....''

सभी मछलियां बाहर जाना चाहती थीं। इसलिए छोटी मछली की बात पूरी नहीं होने दी। वे सभी एक साथ काली मछली को मारने के लिए आगे बढ़ीं तो छोटी मछली थैली के कोने में घुस गई।

वह धीरे से बोली, ''कायरो, तुम लोग तो वैसे ही फंस गई हो और इतनी शक्तिशाली भी नहीं हो कि मुझे मार सको।''

''लेकिन,'' वे चिल्लाईं। ''कुछ भी हो, हमें तो आजाद होना है और इसके लिए तुम्हें मारना ही होगा।''

''क्या तुम लोगों का दिमाग खराब हो गया है? यदि तुम मुझे मार भी डालो तो क्या तुम्हें यह सारस छोड़ देगा?'' छोटी मछली चिल्लाई। ''सुनो, मैं तुम्हें यह साबित करके दिखाती हूं। मैं मरी हुई मछलियों में घुस जाती हूं और ऐसा नाटक करती हूं कि मैं मर गई। फिर देखेंगे कि यह सारस तुम्हें छोड़ता है या नहीं।'' फिर छोटी मछली ने खंजर निकाला और बोली, ''इसे मानो नहीं तो सबको इस खंजर से मार डालूंगी और थैली फाड़कर भाग जाऊंगी।''

''तुम्हारी बकवास बहुत सुन ली। मैं अब और सह नहीं सकती ऊं... आ... ऊं... आ... ऊं,'' एक छोटी मछली जोर-जोर से रोने लगी।

''अरे, तुम लोगों ने इस रोनेवाली मछली को अपने साथ क्यों लाईं? छोटी-काली मछली बोली।

उसने फिर खंजर दिखाया। सभी मछलियों को उसकी बात माननी पड़ी। उन्होंने लड़ने का नाटक किया और फिर काली मछली ने मरने का नाटक किया। फिर एक मछली ने थैली में पानी के ऊपर जाकर सारस से कहा, "सारस महाराज, हमने उस काली मछली को मार डाला है, अब हमें छोड़ दीजिए।"

सारस जोर से हंसा और बोला, "तुम लोगों ने एक बहुत अच्छा काम किया है। और इसके लिए तुम्हें इनाम देने के लिए मैं तुम सबको जीवित ही निगल लेता हूं जिससे तुम मेरे पेट में जीवित घूम सको।"

सभी मछलियां कुछ करने के पहले ही सारस के पेट में पहुंच चुकी थीं। लेकिन काली मछली थैली को खंजर से फाड़कर बाहर भाग गई। सारस वेदना से चिल्लाया और काली मछली को पकड़ने के लिए पानी में सिर डाला, लेकिन उसे पकड़ नहीं पाया। काली मछली तो तेजी से तैरती हुई बहुत दूर निकल गई।

अब पर्वत और घाटियां तो पीछे जा चुकी थीं। नदी मैदानी इलाके से गुजर रही थी। दाए और बाए तरफ स कई नदियां इस नदी में मिल रही थीं। और यह नदी और चौड़ी, और गहरी होती जा रही थी। छोटी-काली मछली पानी की इतनी मात्रा को देखकर इधर-से-उधर तैर कर खुश हो रही थी कि उसे कोई चमकती हुई चीज तेजी से उसकी ओर आती हुई दिखाई दी। उसने देखा कि एक तलवार मछली तेजी से उसकी ओर आ रही थी; उसने तेजी से मुड़कर अपने को बचाया और ऊपर की ओर आने लगी।

थोड़ी देर बाद, वह गहराई जानने के लिए नीचे जाने लगी तो मछलियों का एक झुंड उसे दिखाई दिया जिसमें हजारों मछलियां थीं। उनमें से एक को रोककर उसने पूछा, "बहन, मैं एक अजनबी हूं, तथा बहुत दूर से आई हूं। क्या तुम मुझे यह बता सकती हो कि मैं इस वक्त कहां हूं?"

दूसरी बोली, "सब झरने और नदियां यहीं पर समाप्त होते हैं। वैसे कुछ दलदलों में भी गिरते हैं।"

तीसरी बोली, "किसी भी समय तुम हमारे झुंड में शामिल हो सकती हो।"

छोटी-काली मछली अत्यंत प्रसन्न हुई क्योंकि वह सागर में पहुंच गई थी और उत्तेजना के कारण वह जोर से बोल रही थी। दूसरी मछलियां उसकी प्रसन्नता देख कर हंस रही थीं और धीरे बोलने को कह रही थीं। अंत में छोटी मछली बोली, "तुम्हारे झुंड में शामिल होने से पहले मैं चारों तरफ देखना चाहती हूं। और हां, जब अगली बार तुम मछुआरों का जाल पानी में खींचकर लाओगे तब मैं भी सब के साथ जरूर रहना चाहूंगी।"

"तुम्हारी यह इच्छा जल्दी ही पूरी होगी," एक बूढ़ी मछली बोली। "जाओ, और पहले चारों तरफ देख आओ। यदि पानी के ऊपर गई तो सावधान रहना क्योंकि सागरी बगले का साहस आजकल बहुत बढ़ गया है। ऐसा एक भी दिन नहीं गया जबकि उसने हम में से चार या पांच मछलियों को नहीं खाया है।"

छोटी मछली ने सभी मछलियों से विदाई ली और अपनी इच्छानुसार तैरने लगी। थोड़ी देर बाद वह ऊपर आई और धूप का आनंद लेते हुए कोई गीत गुनगुनाने लगी। वह सोच रही थी कि सब झरने और नदियां यहां तक आते हैं और समुद्र में बदल जाते हैं। सब अलग-अलग निर्बल होते हैं लेकिन एकता के कारण महान सागर बन जाते हैं। वैसे ही सागर की सब मछलियां कभी डरती हुई अकेली रहती थीं लेकिन एकता के कारण आज ये भी शक्तिशाली बन गईं। वह अधिक-से-अधिक जीना चाहती थी। लेकिन यदि मर भी गई तो उसे संतोष रहेगा कि उसके भाई-बहन सागर में एकता से रह रहे हैं। अब तो वह मछुआरों से भी बलवान है और उनका युद्ध निरंतर चलता ही रहेगा। चाहे वे कितनी ही संख्या में सागरी बगले या तलवार मछली से मारे जाएं। किसी दिन, जब सब झरनों की साहसी मछलियां मिल जाएंगी तो वह इतनी शक्तिशाली हो जाएंगी कि उनके कट्टर दुश्मन भी उनके विरुद्ध नहीं बोल सकेंगे। उस दिन संसार की सारी मछलियां स्वतंत्र होंगी।

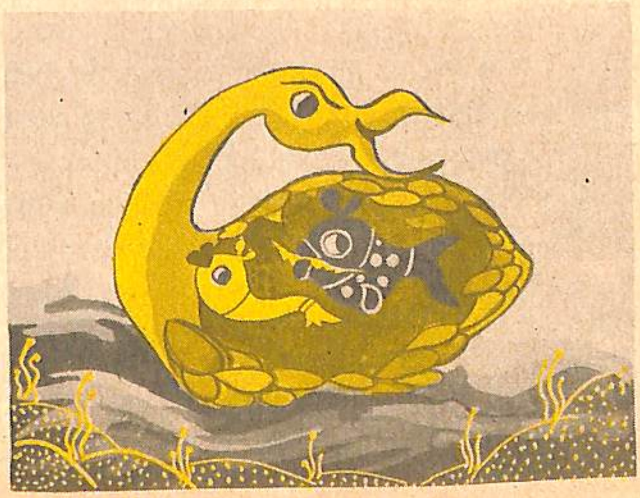

वह इन्हीं विचारों में गोते खा रही थी कि उसे ऐसा लगा जैसे कि वह पानी से ऊपर उठती जा रही है। उसके पीछे से आकर सागरी बगले ने उसकी कमर पकड़ ली थी। छोटी मछली ने छूटने की बहुत कोशिश की लेकिन असफल रही। सागरी बगले ने उसकी कमर इतनी जोर पकड़ी हुई थी कि उसका सांस लेना भी मुश्किल हो रहा था। वैसे भी एक छोटी-सी मछली पानी से कितनी देर बाहर रह सकती थी।

इस पर उस मछली ने अपने मित्रों को आवाज लगाई और बोली, ''देखो, और एक मछली आई है।'' फिर वह छोटी-काली मछली की तरफ मुड़ते हुए बोली, ''मित्र, तुम्हारा हम सब सागर में स्वागत करते हैं।''

उसकी इच्छा थी कि समुद्री बगला उसे निगल जाए, क्योंकि उसके पेट के गीलेपन में वह कुछ देर तो जी सकेगी। वह बगले से बोली, ''तुम मुझे जिंदा ही क्यों नहीं निगल लेते? मैं तो उन मछलियों में से हूं जो मरने के बाद जहरीली हो जाती हैं।''

बगला कुछ बोला नहीं, लेकिन सोचने लगा ''यह मछली काफी चालाक दिखती है। पता नहीं यह क्या करना चाहती है। यह शायद चाहती है कि बोलने के लिए मैं अपनी चोंच खोलूं, जिससे कि यह बाहर कूदकर भाग सके।''

समुद्र तट अब दिखाई देने लगा था और वे उसके और पास पहुंच रहे थे। छोटी मछली जानती थी कि एक बार समुद्र तट पर पहुंचने के बाद बगला उसे जरूर मार डालेगा। वह फिर बगले से बोली, ''मैं जानती हूं कि तुम मुझे अपने बच्चों के लिए ले जाना चाहते हो और तब तक मैं मर चुकी होऊंगी और विष में परिवर्तित हो जाऊंगी। तुम अपने बच्चों के बारे में सोचो।''

''हां,'' बगले ने सोचा, ''सावधानी अच्छी रहेगी। इसलिए मैं इस मछली को खा लेता हूं और बच्चों के लिए दूसरी शिकार करूंगा। लेकिन इसमें यदि कोई चाल होगी तो अभी पता चल जाएगा।''

जब वह यह सोच रहा था तो उसने देखा कि मछली का शरीर ढीला और सुस्त पड़ गया था। ''क्या यह मर गई?'' उसने सोचा। ''यदि यह मर गई तो मैं भी इसे खा नहीं पाऊंगा; मैंने बिना किसी कारण के इतनी अच्छी मछली को बरबाद कर दिया।''

यही सोचकर बगले ने मछली से पूछा, ''छोटी मछली, क्या तुम्हारे में अभी भी थोड़ी जान है जिससे मैं तुम्हें खा सकूं? जवाब दो, छोटी सी-प्यारी....।''

वाक्य पूरा होने से पहले ही मछली ने बगले की हिलती चोंच से छलांग लगा दी। बगला भी उसके पीछे तेजी से भाग रहा था। जैसे ही मछली पानी पर पहुंची और सांस ली कि बगले ने फिर से उसे पकड़ लिया और इतनी जल्दी निगल लिया कि छोटी मछली इतना समझ पाई कि उसके चारों ओर अंधेरा और चिपचिपा सा था। उसे किसी के रोने की आवाज भी आ रही थी। अंधेरे में आंखें अभ्यस्त होने के बाद उसने एक कोने में बहुत ही छोटी-सी बच्ची मछली को मां के लिए रोते देखा। काली मछली उसके पास गई और बोली, ''तुम अपनी मां के लिए रोने से अच्छा यहां से निकलने का कोई उपाय सोचो।''

''तुम कौन हो?'' बच्ची मछली ने पूछा। ''क्या तुम यह नहीं देख सकती कि मैं कितनी मुसीबत में हूं? मां... ऊं... ऊं... मां....''

छोटी-काली मछली बोली, ''क्या तुम अपनी जाति के नाम पर रोकर कायरता का दाग लगाना चाहती हो?''

बच्ची मछली ने तुरंत रोना बंद कर दिया। छोटी-काली मछली बोली, ''हमें इस बगले को मारना होगा जिससे सभी मछलियां निडर होकर अपना कार्य कर सकें और इसके लिए तुम्हें बहुत साहसी होना पड़ेगा।''

''लेकिन, हम तो खुद मर रहे हैं और इस बगले को कैसे मारेंगे?'' बच्ची मछली ने दुखी होकर पूछा। फिर छोटी-काली मछली ने उसे अपना खंजर दिखाया और बताया कि वह बगले के पेट में छेद करेगी।

''अब ध्यान से सुनो,'' वह बोली, ''तुम यहां इधर-से-उधर तेजी से दौड़ो, जिससे बगले के पेट में गुदगुदी होगी और वह उड़ना और हंसना एक साथ नहीं कर सकेगा।''

इसी योजना के अनुसार बच्ची मछली इधर-से-उधर दौड़ने लगी। बगला जोर-जोर से हंसने लगा कि वह पानी में गिरते-गिरते बचा। इसी बीच छोटी-काली मछली ने बगले के पेट में छेद करना शुरू किया। ''जैसे ही मैं छेद पूरा करूंगी, ''काली मछली चिल्लाई, ''तुम कूद कर पानी में चली जाना, ठीक।''

बच्ची मछली, जो बगले को गुदगुदाने में व्यस्त थी, बोली, ''हम जाने से पहले यह देख लेंगे कि बगला पूरी तरह से मर गया है।''

अब छोटी-काली मछली ने इतना बड़ा छेद कर लिया था कि जिसमें से बच्ची मछली भाग सके। बच्ची मछली जैसे ही उसके पास से गुजर रही थी, छोटी मछली ने उसे पकड़कर बाहर पानी में ढकेल दिया। कुछ देर बाद वह बच्ची मछली पानी में तैरते हुए छोटी-काली मछली का इंतजार कर रही थी। काफी देर इंतजार करने के बाद बच्ची मछली ने बगले को चीखते और तड़फते हुए देखा। अंत में उसे बगला पांव झटकता हुआ सागर-तट की ओर गिरते हुए दिखाई दिया। बच्ची मछली ने देखा कि सागरी बगला अब हिल भी नहीं रहा था। वह मर चुका था परंतु

(शेष पृष्ठ 14 पर)

एक मज़ेदार खेल

चोर-पुलिस

इस खिलौने से तुम अपने दोस्तों को आश्चर्य चकित कर सकते हो। इसमें दो टुकड़े हैं जो आपस में जुड़े हुए हैं। जैसे कैदी और पुलिस कोर्ट (अदालत) जाते समय हथकड़ियों से जुड़े रहते हैं। खेल बस इतना ही है कि टुकड़ों को बिना खोले या तोड़े दोनों को अलग करना है। इसमें किसी जादू की जरूरत नहीं पड़ती। तरीका बहुत सरल है- समझने के बाद!!

पहले, खिलौना बना लो। इसके लिए तीन कड़े तार के टुकड़े लो। तार इतना कड़ा नहीं होना चाहिए कि उसको मोड़ना ही मुश्किल हो जाए और इतना नरम भी न हो कि वह टेढ़ा-मेढ़ा हो जाए। एक टुकड़ा 30 सेंटीमीटर लंबा होगा और बाकी दो उससे छोटे, 20 सेंटीमीटर लंबे।

30 सेंटीमीटर लंबे तार को हृदय के आकार में मोड़ लो। उसके दोनों सिरों को आपस में लिपटाकर जोड़ लो।

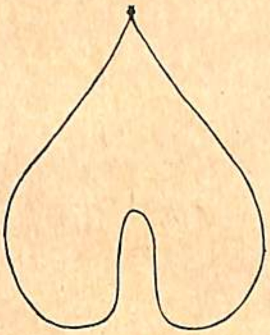

अब 20 सेंटीमीटर वाला एक तार लो। उसको चित्र. में बताए अनुसार धनुष आकार में मोड़ लो। उसके सिरों में गोल घेरा बना लो। तीसरे तार (20 सेंटीमीटर वाला) को इन गोलों में से पिरो लो और उसके दोनों सिरों में भी गोल घेरा बना लो। घेरा इतना बड़ा होना चाहिए कि वह दूसरे में से निकल न जाए।

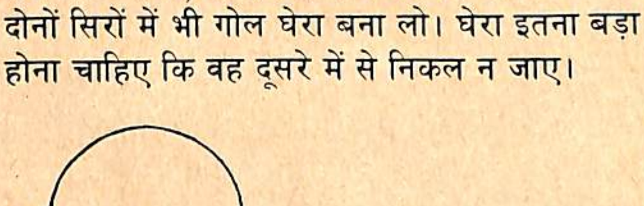

अब तुम्हारे पास तार से बनी दो आकृतियां हैं– एक एक हृदय के आकार वाली, और एक धनुष के आकार वाली। तुम्हें अब एक तरकीब लगानी है। तरकीब यह होगी कि हृदय के आकार वाले तार में धनुष के आकार

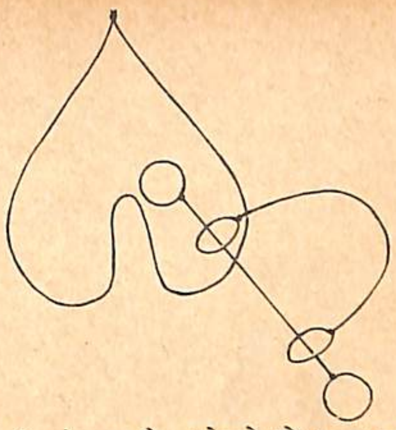

वाले तार को जोड़ना है। जोड़ने के बाद उनको फिर अलग करो।

क्या तुम यह कर सकते हो?

क्यों नहीं? आसानी से। बस, चित्रों को देख कर तरीका समझ लो।

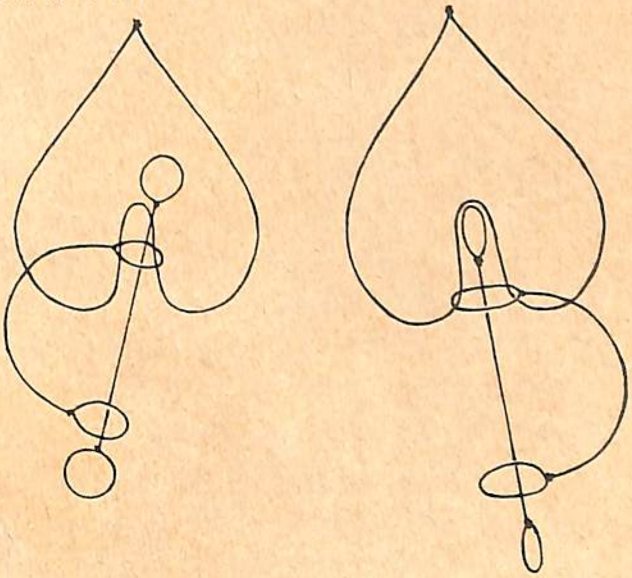

शहनाई (पृष्ठ 4 से)

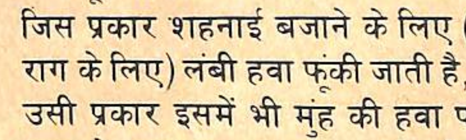

कैसे बजाएं : जहां पतंगी कागज या मकड़ी की झिल्ली बांधी गई है, उस भाग को होंठों में कुछ अंदर कर फूंकना प्रारम्भ करो। लेकिन याद रहे जिस प्रकार शहनाई बजाने के लिए (लंबी राग के लिए) लंबी हवा फूंकी जाती है, ठीक उसी प्रकार इसमें भी मुंह की हवा फूंको। एक-दो बार साधकर तुम गाने भी बजा सकते हो।

संगीत या राग के धुनों में तुम शहनाई का पूरा आनंद ले सकते हो।

कुलदीप राठौर कक्षा सातवीं, बांकी, सिवनी

चित्र : जनगढ़ सिंह श्याम

जब मैंने चुनाव देखा

अभी दिसंबर में लोकसभा के चुनाव भए थे। मैंने जो देखा वह लिख रहा हूं।

चुनाव का मौसम था। कई पार्टी में उम्दा जंग लगी थी। एक दिन मैंने देखा कि एक टांगे में एक आदमी माइक पर चिल्ला रहो थो, 'राजीव गांधी गद्दी पर, अटलबिहारी चड्ढी पर।'

मैंने सोचा कि जो आदमी काय के मारे चिल्ला रहो है। बाके टांगे में बहुत सारे झंडा गड़े थे। मैंने सोचा कि जो झंडा हवा के मारे लगाए गए हैं। इतने में एक जीप आई। वा में भी एक आदमी चोंगा में कह रहो थो कि, 'अटलबिहारी कमल निशान, मांग रहा है हिंदुस्तान।'

मैंने एक आदमी से पूछो कि, "जो आदमी काय के मारे जोर-जोर से चिल्ला रहा है।"

वाने मेंसे (मुझसे) केई (कही) कि, "जो आदमी चुनाव प्रचार कर रहो है।"

मैंने कई कि, जो जोर-जोर से फालतू में चिल्ला रहो है।

इत्ते में एक जीप और आ गई। वा में छह-सात झंड़ा गड़े थे। लोग कह रहे थे 'हटो-हटो नीखरा जी आ रहे हैं।'

मैंने कई कि अबे तक तो मैंने नीखरो दूध को नाम सुनो थो। अब जो नीखरा का बला है। इतने में एक आदमी बहुत सारी माला पहने हाथ जोड़ते आ रहा था। वा के माथे पर बहुत सारी गुलाल लगी थी।

मैंने एक आदमी से पूछा, "जो काय के मारे इतनो कर रहो है?" वाने कई कि, "ये लोकसभा के चुनाव में खड़ो है।"

दूसरे दिन जब मैं सो के उठो तो मैंने देखो, अरे मेरे दईया! जो का हमरे घर की दीवार से मोहल्ला भर में दीवार पर पंजा-पंजा, कमल-कमल लगे थे। मैंने मन-ई-मन में कई कि जे तो बहुत गर्रा रहे हैं। हमरी दीवार अब्बई पुतवाई थी। इन्ने आके वा हे पूरी गूद दई। इनकी तो...! इतने में मेरे मुंह से गारी निकल गई।

दोक (दो-एक) दिन बाद मैंने देखा कि हमरे घर पांच-छै आदमी आए हुए हैं। वे कह रहे हैं कि, "तुम्हारे पापाजी को बुलाना।"

मेरे भैयाजी (पिताजी) तो पहले से ही टकला हैं।

भैयाजी बोले, "क्या बोल रहे हैं।"

मैंने कहा, "जे आदमी वोट की केवे (कहने) के बारे में आए हैं।"

उन्होंने कहा, "अच्छा चुनाव वाले हैं।"

चुनाव वाले हाथ जोड़ कर लल्लो-चप्पो करते हुए बोले, "आप कमल पर ही सील लगइयो।"

मैंने कई कि इनपे कित्ती सील हुएं।

इसके दो-तीन दिन बाद चुनाव प्रचार बिलकुल बंद हो गया। मैंने कई कि कल तो जे कित्ती जोर से चिल्ला रहे थे। अब काय नहीं चिल्ला रहे हैं।

फिर मेरे भैया जी वोट डालने जा रहे थे। मैंने कई, "भैया जी कहां जा रहे हो!"

भैया जी बोले, "मैं स्कूल जा रहा हूं वोट डालने।"

जब भैया जी लौटकर आए तो उनके हाथ में

सिहायी लगी थी। मैंने कई कि जो धब्बा कहां से आ गओ। फिर चुनाव का माहौल शांत हो गया।

चंद्रशेखर चौधरी
कक्षा छटवीं पिपरिया

अगले अंकों में . . .
चित्र कथा : भगत सिंह
तारों की कहानी
हमारा पर्यावरण

जब घर में कथा हुई

आज से करीब तीन साल पहले की बात है। जब मैं कक्षा चार की छात्रा थी। तब मैं मेरे गांव बीकोर जिला नरसिंहपुर में पढ़ती थी। मेरा गांव नर्मदा के किनारे है। अतः वहां पर पूजन-पाठ, कथा-प्रवचन अधिक होते हैं।

एक बार हमारे गांव में काशी से पंडित जी, तिवारी जी के यहां पर आए। तिवारी जी के यहां कथा का प्रोग्राम रखा गया। पंडित जी के मंत्र में ऐसी शक्ति थी कि वे अग्निदेव को प्रगट कर देते थे। उस दिन से सभी तिवारी जी के यहां जाने लगे। उनके घर आदमी, औरतों और बच्चों की भीड़ लगी रहती।

मुझे और मेरी मम्मी को मुश्किल से जगह मिली। मैं तो धीरे-धीरे खिसकती हुई पंडित जी के सामने की लाइन में बैठ गई। कथा सुनाने के बाद पंडित जी ने सभी को कहा, ''अब अग्निदेव को प्रकट करेंगे और हवन कार्य पूर्ण करते हैं।''

इस तरह पंडित जी ने मंत्र पढ़ते हुए शीशी का जल लेकर आम की लकड़ियों पर डाल दिया। वहां पर अचानक ही आग प्रगट हो गई। लकड़ियां चट-चट करती हुई जलने लगीं। सभी आश्चर्य कर रहे थे। मैं तो घबरा कर मम्मी के पास पहुंच गई थी। किंतु सभी गांव के लोग अग्निदेव को प्रणाम कर रहे थे। उस दिन पंडित जी को बहुत पैसे मिले।

दूसरे दिन से कथा करने को पंडित जी को फुरसत ही नहीं मिलती थी। उनकी प्रशंसा होने लगी। वैसे तो कथा का सामान एवं पंडित जी के नेग बहुत महंगे थे। फिर भी अग्निदेव के कारण सभी कथा कराते थे।

मेरे मम्मी-पापा ने भी पंडित जी से कथा कराने को कहा। पंडित जी के पास एडवांस बुकिंग थी। उन्होंने चार दिन बाद का समय दिया। मम्मी ने कहा, ''पंडित जी, मेरा बेटा पास हो जाए, हमें आशीर्वाद दो।''
पंडित जी ने कहा, ''ठीक है, कथा अच्छी तरह होना चाहिए। तुम्हारी मनोकामना पूरी हो जाएगी।''
दूसरे दिन मेरे भैया इंदौर से आ गए। वे उस समय इंदौर के गुजराती कालेज से बी.एस-सी. कर रहे थे। उन्होंने जब यह सुना कि पंडित जी अग्नि प्रगट करते हैं, तो वे बहुत आश्चर्य में पड़ गए। किंतु जब उन्होंने पटेल की कथा में अग्नि को प्रगट होते देखा तो वे कुछ सोचने लगे।

दूसरे दिन हमारे घर पर कथा का आयोजन हुआ। हमने गांव के सभी लोगों को बुलाया। मेरा भाई सुबह से नहाकर पंडित जी के साथ था।
जब कथा प्रारम्भ हुई तो हमने भैया को पंडित जी के साथ बैठा दिया। कथा विधि पूर्वक हुई। हवन की तैयारी होने लगी। सभी सामान से हवन स्थान की पूजा की। फिर पंडित जी पहले की तरह मंत्र पढ़ते हुए शीशी का जल निकालकर आम की लकड़ियों पर डालने लगे। किंतु पहले की तरह आग प्रगट नहीं हुई। इस तरह उन्होंने दो बार और किया, किंतु अग्निदेव फिर भी प्रगट नहीं हुए। यह देखकर पंडित जी का चेहरा उदास हो गया। वे बोले, ''सोनी जी, तुम्हारे घर में कोई ऐसा सदस्य है जिसके कारण अग्निदेव तुमसे नाराज हैं। अतः उनकी शांति के लिए दो दिन का अभिषेक करना पड़ेगा।''

सभी मान गए। गांव के लोग हमारे प्रति तरह-तरह की बातें करने लगे। मैंने थाली में अंगार लाकर दिए। भैया ने पचास पैसे थाली में रखकर मुझे थाली वापिस दे दी। विधि पूर्वक पूजा संपन्न हुई।

रात्रि के समय भैया और पंडित जी का बिस्तर भैया के कमरे में कर दिया था। जब मैं चाय लेकर वहां पहुंची तो भैया पंडित जी को डांट रहे थे। वे पुलिस का भय भी दिखा रहे थे। मेरे को भैया के प्रति बड़ा गुस्सा आया। मैंने जल्दी से पिताजी और मम्मी से कहा। वे दोनों दौड़कर आए।

हम सबने देखा कि पंडित जी भैया के आगे हाथ जोड़ रहे थे। पिताजी ने कहा, ''क्या बात है?''

तब भैया ने उस पाखंडी पंडित की कहानी बताई। भैया बोले, ''मैं पटेल की कथा से ही पीछा कर रहा हूं। इसकी शीशी देख ली और उसका जल चुरा लिया।

उसकी जगह साबुन का घोल बनाकर रख दिया। क्योंकि वह जल क्रोमिक एनहाइड्राइड के साथ ईथाइल अल्कोहल की क्रिया के फलस्वरूप काफी ताप उत्पन्न करता है। परिणाम स्वरूप ईथाइल अल्कोहल जल उठता है। यही घोल पंडित जी शीशी में भरकर रखे हुए थे। उन्होंने चुराए हुए जल को पास में पड़ी हुई टीन पर छिड़का। छिड़कते ही आग प्रगट हो गई। मैं ही नहीं, मम्मी-पापा भी आश्चर्य कर रहे थे। पंडित जी खड़े-खड़े सब देख रहे थे। अब पंडित जी मेरे पिताजी के पैरों पर गिर पड़े। पिताजी ने सोचा यदि इसकी कहानी अभी गांव वालों के लिए बताएं तो गांव वाले पंडित जी की अच्छी मरम्मत करेंगे, जिसका श्राप लगेगा। इसलिए उन्होंने पंडित जी से कहा, ''सुबह के पहले ही तुम इधर से चले जाना।''

जब मैं सोकर उठी तो पंडित जी का पता नहीं था। सुबह गांव वालों को भैया ने रात वाली कहानी बताई। भैया ने वही प्रयोग करके कई बार बताया तो गांव के लोग भैया की ही नहीं मेरे मम्मी-पापा की तारीफ भी कर रहे थे। मैं तो फूली नहीं समा रही थी।

वंदना सोनी
कक्षा सातवीं, पिपरिया

आज सबेरे मां ने हम सबको जल्दी उठाया और कहा, जल्दी से तैयार हो जाओ। आज हमारे घर में सत्यनारायण की कथा है। उन्होंने भैया को कहा, तुम जल्दी से फूल, आम के पत्ते, केले के पत्ते, आनंद बाग से ले आओ। हम सब तैयार होने में और मां घर की सफाई में लग गई। मां ने मुझसे कहा, तुम पड़ोस में और सभी जान-पहिचान वालों से यह कह आओ कि दोपहर दो बजे हमारे घर कथा है।

लगभग दो बजे के करीब मोटे, बड़ी तोंद व लंबा तिलक लगाए एक व्यक्ति आए। जिन्हें देखकर पिताजी चिल्ला उठे, पंडित जी आइए, आइए। पांव लागी करने लगे। सारे घर में एक हलचल सी मच गई। सभी लोग पूजा की तैयारी में जुट गए। पंडित जी सामान बोलते रहे, बेचारी मां एक-एक करके जुटाती रही। पंडित जी के हुकुम का बड़ा तेजी से पालन हो रहा था। अन्य लोगों ने भी आना शुरू कर दिया।

जो भी आता वह भगवान की चौकी की ओर, और पंडित जी को खूब झुककर प्रणाम करता। मैंने जल्दी से दरी बिछाई। दीदी ने आटे को भूंजकर शक्कर मिलाई और कुछ केले व खीरे काटकर प्रसाद बनाया। थोड़ी देर में हमारा घर आदमी, औरतों व बच्चों से भर गया। पंडित जी ने शंख बजाकर और न जाने क्या-क्या बोलकर पूजा शुरू की। उन्होंने पिताजी से, जो पूजा पर बैठे थे, पैसे व रुपए चढ़वाए। पंडित जी के साथ सभी लोगों ने ''सत्य नारायण की जय'' का नारा लगाया। पंडित जी ने एक पोथी से कथा पढ़नी शुरू की।

पंडित जी कथा के साथ-साथ अन्य कथा भी सुना रहे थे। कुछ बाई अपनी बातों में लगी रहीं। पड़ोस की चाची हाथ जोड़ कर कहने लगी, ''भगवान मेरे सतीश की नौकरी लगे तो मैं भी तेरी कथा करूंगी।''

कोने में एक बूढ़ी बुआ बैठी थी। उसे बड़ी जोरों से नींद आ रही थी। वह आंख खोल कर थोड़ी देर चारों ओर देखती और फिर सो जाती। दीदी की सहेलियां खूब बातों में लगी थीं। वे कह रही थीं, ''लीलावती-कलावती की कथा क्या सुनें।''

बाहर बच्चे खूब ऊधम मचा रहे थे। उन्होंने हमारे बगीचे के सभी फूल व पत्तियां तोड़ डालीं और आपस में खूब लड़ रहे थे।

इस प्रकार डेढ़ घंटे बाद कथा समाप्त हुई। सब लोगों ने जोर से आरती गाई। शंख और घंटे बजाए। ऐसा लग रहा था मानो भगवान बहुत गहरी नींद में हों या बहरे हों, जो अधिक चिल्लाने पर ही सुनेंगे। दो आदमियों ने प्रसाद बांटा और एक ने आरती घुमाई। आरती में सब लोगों ने खूब पैसे चढ़ाए।

पिताजी ने पंडित जी को भोजन कराने बिठाया। उनकी थाली में पूरी-खीर और तरह-तरह की मिठाई परोसी। पंडित जी ने खूब खाकर अपनी मोटी तोंद पर हाथ फेरा। पूजा में चढ़ाए गए सभी पैसे, कपड़े, फल आदि समेट कर झोले में रख लिए।

इतने में ही हमारे दरवाजे पर एक आदमी आया। जिसके कपड़े गंदे व बुरी तरह फटे थे। वह खूब हांफ रहा था। रुक-रुक कर गिड़गिड़ा कर बोल रहा था, ''मैं बहुत भूखा हूं। कई दिनों से मेरे मुंह में अन्न का दाना नहीं गया है। मेरा सारा परिवार भोपाल में रिसी गैस के कारण तबाह हो गया। मुझ में भी इतनी शक्ति नहीं रही कि कुछ काम करके भी अपना पेट भर सकूं। मुझे कुछ खाने को दे दो।''

सभी लोग उसकी बात को अनसुनी करके चले जाते। तिवारी अंकल ने तो यह कह दिया, आगे जाओ। पर मेरा हृदय उसे देखकर बड़ा दुखी हुआ। मैं रसोई में गई और कुछ पूरी उठा लाई। आरती में चढ़ाने के लिए मुझे पैसे दिए गए थे। वो पैसे भी मैंने उसे दे दिए। वह जल्दी-जल्दी पूरी खाने लगा। उसे देखकर मुझे लगा कि अगर पिताजी ने जो पैसे, कपड़े, अन्न, पंडित जी को दिए हैं वो इस आदमी को दे देते तो कितना अच्छा होता।

भावना कौशिक
कक्षा आठवीं, पिपरिया

जब मैं घर पर अकेला था

एक बार मेरे घर में सबका फिल्म जाने का प्रोग्राम बना। किंतु मम्मीजी बोलीं, "घर में कौन रहेगा?"

कोई भी घर अकेले रहने को तैयार नहीं हुआ। फिल्म भी अच्छी थी। थोड़ी देर तक बहस का कोई परिणाम नहीं निकला, तो मैं समझ गया कि मुझे घर में अकेला रहना पड़ेगा। इसलिए मैंने कहा ताला लगाकर चलते हैं। बात अच्छी थी। पर दीदी ने कहा, "चोर ताला तोड़कर चोरी कर लेते हैं। तुम ही घर रहो।"

पापाजी और मम्मीजी ने भी कहा। सबका समर्थन हो गया और मैं अकेला रह गया। मैं रोने लगा। पापाजी ने आंखे बताकर और डांटकर कहा, "तेरे रोने से कोई फिल्म नहीं देख पाएगा। तुम घर पर रहो।"

मैं पापाजी से डरता था। मन-मारकर चुप बैठ गया। जो डर था वही हुआ। थोड़ी देर तक उन्हें जाते देखता रहा, जब तक वे आंखों से ओझल नहीं हो गए। सोचा कुछ पढ़ ही लूं। थोड़ी देर तक पढ़ने के बाद पढ़ने में मन नहीं लगा। थोड़ी देर बाद आस-पड़ोस के दोस्त आए। बोले, "आज हाकी का मैच है। भूल गए क्या? चलो तुम तो बहुत अच्छा खेलते हो।"

मैंने कहा, थोड़ी देर रुको। मैं ताला ढूंढकर चलता हूं।"

थोड़ी देर में ताला मिला। ताला लगाकर मैं जाने लगा। तभी दीदी की बात याद आई कि चोर ताला तोड़कर सामान ले जाते हैं। मैच है, कितने घंटे लग जाएं पता नहीं। मैंने सोचकर कहा, "आज मैच मत खेलो। कल खेल लेंगे।"

पर वे मानें तब न। उनमें से एक ने कहा, "मैच हो रहा है। टल थोड़े ही जाएगा। तैयारी पूरी हो गई है। तुम्हें चलना हो तो चलो। नहीं तो तुम्हारी जगह दूसरे को ले लेंगे।"

मैंने कहा, "हमें नहीं जाना। तुम्हीं जाओ।"

इतना सुनना था कि वे चले गए। उस दिन बड़ी कोफ्त हुई। घड़ी ने चार बजाए। ताला खोलकर, सोफा पर आकर कुछ सोचने लगा। सोचा, रेडियो चालू किया जाए। रेडियो चालू किया। पर लाइट ही नहीं थी। लाइट आने तक इंतजार किया। आधे घंटे बाद लाइट आई। थोड़ी देर उस रेडियो का बैंड घुमाते-घुमाते एक जगह लग ही गया। पर गाने, इतने पुराने गाने आ रहे थे कि बस पूछो ही नहीं। कमबख्त अभी पुराने गाने आने थे। मैंने रेडियो बंद कर दिया। सोचा टेलीविजन ही चला लूं। पर कार्यक्रम छै बजे से शुरू होते हैं। मैंने दरवाजा बंद कर लिया और कामिक्स पढ़ना शुरू किया। थोड़ा पढ़ा और नहीं पढ़ सका। पढ़ने में मन लगे तब न। घड़ी देखी। साढ़े चार बज रहे थे। फिल्म का मध्यांतर हुआ होगा। इसके बाद अमिताभ बच्चन, शक्ति कपूर से ढिशुम-ढिशुम करेगा। दरवाजा बंद करा। साइकिल निकाली। पर क्या। साइकिल में हवा ही नहीं थी। मैं दुखी हो गया। भाग्य ने मेरा कहीं साथ नहीं दिया। न देगा, मैंने सोचा। दरवाजा खोला। अंदर आकर सोफा सेट पर बैठ गया।

सोचते-सोचते और मक्खियां मारते हुए साढ़े पांच बज गए। दरवाजे की ओर देखा ही था कि एक टैक्सी आ कर रुकी। उसमें से ड्रायवर निकलकर बोला, "कोई है।"

मैंने कहा, "यहां आ जाओ।"

तब वह बोला, "तुम्हारे पिताजी की तबियत अचानक खराब हो गई है। तुम्हारी मम्मी ने कहा कि तुम मुझे अस्पताल ले आओ।" ठंड के दिन थे। सूरज डूब रहा था। अंधेरा बढ़ने लगा था। उसकी बात सुनकर मुझे चंपक में पढ़ी कहानी याद आ गई। तब तो मुझे बहुत डर लगने लगा। उसका चेहरा भी भयानक था। मैंने कहा, "मैं अभी आया।"

यह कहकर मैंने दौड़कर, अंदर घुसकर, दरवाजा बंद कर लिया और खिड़की खोलकर कहा, "भाग जाओ नहीं तो मैं पुलिस को खबर कर दूंगा।"

यह सुनकर वह टैक्सी लेकर भाग गया। थोड़ी देर बाद किसी ने दरवाजा खटखटाया। मैं डर के मारे कांप गया। मैंने कहा, "कौन है।"

डर के मारे आवाज बहुत धीमी निकली। परंतु जब मैंने दरवाजा खोला, देखा पापाजी और सब खड़े हैं।

पापाजी बोले, "इतनी देर तक क्या-क्या गुल खिलाए बच्चू।"

मैं कुछ नहीं बोला। रात के खाने के वक्त सब बात बताई। तो पापाजी बोले, "तुमने समझदारी से काम लिया। घर लुटने से बचा लिया। अब तुम्हें घर अकेला छोड़कर नहीं जाएंगे।"

यह कहकर पापाजी ने गले लगा लिया। और कहा, "शाबास बेटे।"

अभिषेक अग्रवाल
कक्षा आठवीं
पिपरिया

जब मैं घर पर अकेला था

मम्मी-पापा गए बाजार
हम बच्चे थे घर पर चार
फिर शुरू खेल किया हमने
लिया गुड्डे को मुन्नु भैया ने
और गुड़िया को मुन्नी रानी ने

एक दिन मुन्ना-मुन्नी गए बाजार
वहां हुई दोनों की मुलाकात
हुई वहां दोनों की बातें दो-चार
फिर तय हुआ गुड्डा-गुड्डी का ब्याह

गुड्डा-गुड़िया के नए कपड़े आए
खूब मिठाई पकवान बनाए
और सबको निमंत्रण दे आए

एक दिन दुल्हन बनी गुड्डी रानी
लगती सुंदर-सलोनी जैसे हो परी की रानी

गुड्डा भी होकर तैयार
बनकर राजा घोड़े का सवार

फिर शुरू हुआ कार्यक्रम जयमाला
दोनों ने डाली एक दूसरे के गले में माला
हम सब ने भी खूब नाचा गाया
इस प्रकार हुआ गुड्डा-गुड्डी का ब्याह

तभी आए मम्मी-पापा
घर की दशा देखकर मम्मी बोलीं
कि इतनी देर से कर रहे थे क्या?
हम सब बोले, "गुड्डा-गुड्डी का ब्याह"

हेमलता परसाई
कक्षा आठवीं, सोहागपुर

मछली... (पृष्ठ 8 से)

अभी छोटी-काली मछली का पता ही नहीं था।

"और आज तक बच्चो," बूढ़े नानाजी बोले, "आज तक उस छोटी-काली मछली का कोई पता नहीं चल सका।" फिर उन्होंने बारह हजार बच्चों से कहा, "अब कहानी खत्म हो गई है और रात भी काफी हो गई। इसलिए, सब सोने जाओ।"

बच्चो ने पूछा, "लेकिन नानाजी, उस नन्ही-काली मछली का क्या हुआ? यह तो आपने बताया ही नहीं।" नानाजी बोले, "वह एक लंबी कहानी है। उसे मैं किसी और दिन बताऊंगा। जाओ, अब सोने का समय हो गया है।"

ग्यारह हजार नौ सौ निन्यानवे छोटी मछलियां शुभ रात्रि कहकर सोने चली गईं। नाना और नानी भी सोने चले गए। लेकिन एक छोटी-सी लाल मछली को नींद नहीं आ रही थी। रात भर वह नन्ही-काली मछली सागर के बारे में सोचती रही। (समाप्त)

समद बहरंगी की कहानी 'एक नन्ही-काली मछली' तुमने पढ़ी। समद बहरंगी इरान के एक मशहूर क्रांतिकारी लेखक थे। 13 वर्ष पहले उनकी मृत्यु हो गई।

स्वाभाविक रूप से सवाल उठ सकता है कि इस क्रांतिकारी लेखक ने बच्चों के लिए एक साधारण परीकथा टाइप कहानी क्यों लिखी? इसमें जरूर कुछ और बातें छिपी होंगी। शायद क्रांति की बातें भी- रूप बदलकर!!

क्या तुम कुछ ऐसी बातें पकड़ पाए? चाहो तो कहानी एक बार फिर पढ़ लो और शामिल हो जाओ एक प्रतियोगिता में। जो बातें तुमने पकड़ीं वे समाज, भूगोल या जीवविज्ञान से संबंधित भी हो सकती हैं। जो तुमने समझा, हमें लिख कर भेज दो। तुम अपनी समझ कहानी या कविता के रूप में भी भेज सकते हो। पुरस्कृत रचनाओं को प्रकाशित किया जाएगा और इनाम में किताबें बांटी जाएंगी।

सपने की बात

मैंने देखा था वो सपना।
वो कभी न हुआ अपना।।
शाला के प्रांगण में देखा।
कक्षा के गणित कालखंड में देखा।।
परीक्षा के गणित पेपर में देखा।
करते हुए नकल मुझे गुरुजी ने देखा।।
फिर तो देखा था मैंने पानी वो।
जो बरसात का था, न ओस का।।
टपकते जिसमें से देखा।
पसीना मैंने स्वयं का देखा।

अनिल कुमार पटवा
कक्षा आठवीं, पिपरिया

गोविंद सिंह पाली कक्षा सातवीं, जुन्हैटा

ऐसे सीखा साइकिल चलाना

जब मुझे साइकिल चलाना नहीं आता था, तब मैं सोचता था कि मैं भी साइकिल चलाऊं। लेकिन, पैर पैडल तक न पहुंचने के कारण मन मारकर रह जाता। फिर मैं अपने आप से कहता, "हे भगवान, मुझे जल्दी बड़ा कर दे, जिससे साइकिल आसानी से चला सकूं।"

एक बार में हरसूद गया। वहां के लड़कों ने मुझसे कहा कि तुम्हें छोटी साइकिल चलाना चाहिएं। हम तुझे छोटी साइकिल चलाना सिखा देंगे। मैं बहुत खुश हुआ। मैं किराए की साइकिल ले आता और चलाता। कई बार चलाते समय सामने बड़ा पत्थर या ऊंचा टीला आ जाता तो मैं ब्रेक लगाने की जगह दोनों पैर जमीन पर रख कर ऊंचा हो जाता। साइकिल आगे निकल जाती और गिर जाती।

एक बार साइकिल का फिरबील (फ्रीवील-चका घूमना) गोल हो गया। मैं बड़े आइडिए से साइकिल दे कर भाग आया। जब मैं वापिस पिपरिया लौटा तो सोचा कि बड़ी साइकिल कैंची चलाना चाहिए। हमारे घर के बगल में अग्निहोत्री सर रहते थे। उनके तीन लड़के थे। बड़े का नाम गयाशंकर था। उसी ने मुझे साइकिल कैंची चलाना सिखाया। साइकिल चलाने में मैं गिरा भी कई बार लेकिन, मुझे साइकिल कैंची चलाना आ गया तो मैं सोचने लगा कि अब मैं सब सीख गया।

एक बार की बात है। बरसात के दिन थे। वर्षा हुई, वर्षा थमी, तो मैं साइकिल लेकर निकला और चल दिया। मैं मस्ती में जा रहा था। अचानक मोड़ आ गया। मैंने सोचा, क्यों न चलाते हुए मुड़ूं? पहले मैं उतर कर मुड़ता था। वही हुआ, जिसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी। साइकिल का अगला पहिया खतरनाक तरीके से सिलिप हुआ। मेरे हाथ पैर बुरी तरह छिल गए। मुंह भी छिल गया था। किसी तरह मैं रोते हुए घर पहुंचा।

मम्मी मुझे तुरंत अस्पताल ले गई। मरहम-पट्टी करके घर आ गया। घर पर मैं लेटा था। कुछ दिन बाद घाव भर गया। मैं फिर अच्छा हो गया। फिर मैं साइकिल चलाने लगा। मेरे एक दोस्त प्रभात ने कहा कि अगर सीट पर बैठ कर चलाना है तो पहले साइकिल तेज कर ले। फिर चेन कवर पर पैर रख कर दोनों तरफ पैर डाल ले और सीट पर बैठ जा। मुझे तेज साइकिल चलाने में डर लगता था। इसलिए पहले तो कठिनाई हुई। लेकिन बाद में मुझे साइकिल चलाना आ गया।

एक बार मेरे सामने ही बस से दो लड़कों का एक्सीडेंट हो गया। मैं कांप गया। जल्दी से घर पर आया। साइकिल अंदर रखी और बैठ गया। जब मम्मी स्कूल से आई तो उन्होंने कहा, "बेटा, तुम्हें मालूम है कि साइकिल चलाते लड़कों का बस से एक्सीडेंट हो गया है।" मैंने कहा कि यह एक्सीडेंट तो मेरे सामने ही हुआ है। मम्मी ने सोचा कि साइकिल को गांव पर भिजवा देना चाहिए और मम्मी ने साइकिल गांव भिजवा दी।

मुझे बहुत दुख हुआ। मैं हर समय गुम-सुम बैठा रहता। एक बार मैं जाने के लिए बाहर निकल रहा था कि एक दोस्त को साइकिल चलाते देख कर मैंने कहा, "मुझे बाजार तक छोड़ आ।" उसकी साइकिल बिना केरियर की थी। उसने कहा साइकिल पर पीछे खड़ा हो जा। मैं खड़ा हो गया। अचानक मुझे झटका लगा और हड़बड़ाहट में मेरा पैर साइकिल में फंस गया। पैर खून से सन गया। मैं तुरंत घर गया। बगल वाली आंटी ने पाउडर लगा दिया था। उन्होंने कहा कि टिटनस का

इंजेक्शन लगवा लेना वरना, टी.बी. हो जाएगी। शाम को पापा मुझे अस्पताल ले गए मरहम-पट्टी की और इंजेक्शन लगाया।

मैंने घर आकर सोचा कि अब उल्टी-सीधी साइकिल कभी नहीं चलाऊंगा!!

मनीष कुमार मेहरा
कक्षा आठवीं, पिपरिया

(मनीष, टिटनस इंजेक्शन टिटनस रोग (धनुष टंकार) से बचने के लिए लगाया जाता है। टी.बी. रोकने के लिए नहीं। टी.बी. के लिए बी.सी.जी. वैक्सीनेशन (टीका) लगाया जाता है। टिटनस रोग जंग लगी वस्तु से चोट लग जाने पर हो सकता है। इसका कारण एक बैक्टीरिया है। इस रोग का मुख्य असर मांसपेशियों पर पड़ता है। वे खिंचने और फैलने लगती हैं, खासकर जबड़े में। इसमें बहुत दर्द होता है और कभी-कभी मृत्यु भी हो जाती है। टी.बी. (क्षयरोग) भी बैक्टीरिया द्वारा होता है। इसमें फेफड़े खराब हो जाते हैं। मुंह से खखार में खून आने लगता है। इसमें भी मृत्यु हो सकती है। इसका इलाज लम्बे समय तक चलता है। **सं.**)

जब मैं करीब आठ वर्ष का था तब मैं यह आश्चर्य समझता था कि दो चाक की साइकिल चलते समय सीधी क्यों चलती जाती है, इधर-उधर गिरती क्यों नहीं? मुझे साइकिल चलाने के बारे में बहुत-कुछ विचार उठने लगे। लोगों की साइकिल जब मेरे सामने से कट मारती हुई निकलती तो मेरे मन में ऐसा लगता कि मैं भी साइकिल चलाना सीखूं। मैं भी इसी ढंग से साइकिल चलाया करूंगा।

मैंने अपने भाई साहब की साइकिल को धीरे-धीरे ढुड़काना शुरू किया। क्रमशः दो-तीन दिन तक समय मिलने पर मैं कैंची साइकिल चलाने को तैयार हुआ। मैं कैंची साइकिल चलाते समय कितनी बार गिरा, इसकी गिनती तो शायद भगवान भी नहीं लगा सकता। क्योंकि मैंने साइकिल दो बार काटों की बागड़ में घुसेड़ दी। दो खतरनाक एक्सीडेंट भी किए। एक बिचारे सोते कुत्ते के पैर पर से चला दी।

इस प्रकार मैंने कैंची साइकिल सीखी। इसी प्रकार मुझे साइकिल सीखते-सीखते करीब दो माह हो गए। लेकिन साइकिल कैंची चलाते ही बनती थी। स्वप्न में भी मैं साइकिल चलाया करता था। साइकिल इतनी भारी वेग से चल रही है कि हटो-हटो-हटो की आवाज मुंह से निकलती। तो फिर घर वाले मुझे सुबह बताते कि रात में तुमने स्वप्न में क्या देखा? हटो-हटो-हटो की आवाज निकाल रहा था.....।

खैर, इस प्रकार मुझे साइकिल का भारी चस्का लगा हुआ था। छोटे होने के कारण सीट पर बैठकर साइकिल चलाना आसान काम नहीं था। पर मैंने अभ्यास को ही गुरू समझकर चलाने की कोशिश की। नदी के

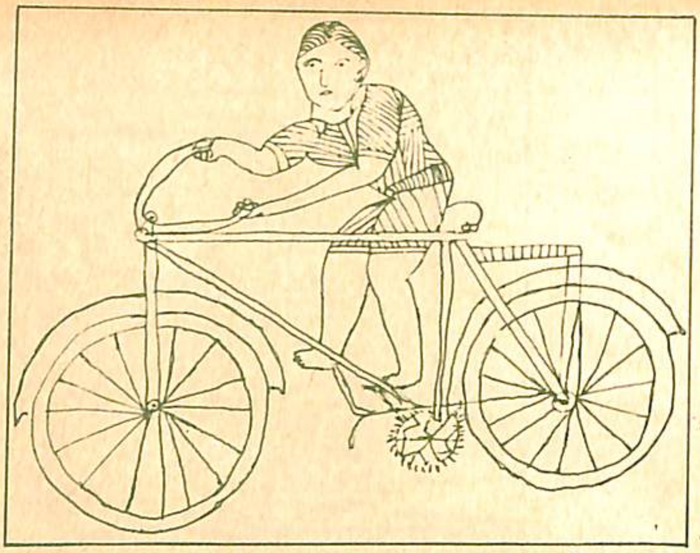

चित्र : जनगढ़ सिंह श्याम

किनारे समतल मैदान था। वहां पर एक पांच-छह मीटर की ढलान पर से साइकिल नीचे दौड़ाकर फिर सीट पर बैठना चाहता। पर इसी प्रकार करीब पचास बार करने पर मैं सीट पर बैठ पाया।

अब जहां तक ढलान थी वहीं तक साईकिल जाती। पर फिर मैंने धीरे-धीरे पैडल का सहारा लेना शुरू किया। इस बार मुझे गिरने से कुछ राहत मिली। साइकिल चलाने में मैंने खास काम हैंडिल एवं बैलेंस को समझा। इस बार में दो-तीन बार ही गिरा।

साइकिल की भारी परेशानी पड़ती थी। घर वाले मुझे साइकिल नहीं देते थे। जब कभी बड़े भाई घर से बाहर होते, उस समय उनकी नजर बचा कर मैं साईकिल ले भागता। अब मैं भी एक कुशल साइकिल चालक बन गया हूं। मेरी साइकिल चलाने की भी एक कहानी बन गई, जो मुझे याद रही।

महेंद्र सिंह मेहर
कक्षा सातवीं
जुन्हैठा, होशंगाबाद

सपने की बात

नींद में देखा मैंने, प्यारा सा एक सपना,
स्कूल के मैदान में लगी हुई विज्ञान की कक्षा।
इंद्रधनुष का सतरंगा पुल बना है,
तितली रानी कर रही हैं उसकी रक्षा।

चींटी-जूं-खटमल और बिच्छू खेल रहे हैं खेल,
किंतु हो नहीं पाया है, मेंढक-सांप में मेल।
हैंड लैंस लेकर में देख रही हूं उनका खेल,
कहीं चल रही उनकी मोटर और कहीं पर रेल।

मम्मी ने आवाज लगाई, "भोर हुई गुड़िया जागो,"
सपना टूटा, उठ बैठी मैं, "बस्ता ले स्कूल को भागो।"

अंजना सांवल
कक्षा छठवीं, सोहागपुर

सपने की बात

सपने में मैंने एक रेडियो खरीदा। मैंने उसको चालू किया। कई प्रकार के गाने और समाचार आए। मैंने कहा, "इस रेडियो में न जाने कितने आदमी भरे होंगे।" मैंने उन आदमियों को कभी नहीं देखा। मैंने गुस्से में उसे फेंक दिया। रेडियो में से आदमी बाहर निकल-निकल कर भागने लगे।

मैंने शांत होकर पूछा, "भाई, भाग क्यों रहे हैं?"

उनमें से एक घायल आदमी बोला, "हम सब लोग आपके फेंकने से अस्पताल भाग रहे हैं।"

अपनी जान बचाने के लिए वे सब लोग अस्पताल में भरती हो गए। सब को कहीं-न-कहीं चोट आईं थी।

अस्पताल में मैंने उन आदमियों से कहा, "जल्दी ठीक हो जाओ।"

वे लोग कहने लगे, "हम तो आप की कृपा से राइट हो जाएंगे। अब हमको नहीं पटकना।"

मैंने हंसते हुए कहा, "आप लोगों को नहीं पटका। मैंने तो रेडियो फेंका था।"

रेडियो फिर बिगड़ गया। वह रेडियो 150 रुपए वाला दिल्ली मॉडल था। मैंने नदी में फेंक दिया।

वे लोग सब-के-सब कहने लगे, "हाय, बचाओ! हाय, बचाओ!"

मैंने कहा, "दिल्ली मॉडल रेडियो लेके बह जाओ!"

उन लोगों में से एक बिना घायल उस रेडियो के अंदर था। रेडियो के अंदर से नदी से बाहर निकल गया। मुझे नदी की गहराई अधिक दिखाई पड़ रही थी। उसने मुझे नदी में ढकेल दिया। और वह आदमी कहने लगा, "मेरे साथी सब बहते मिलेंगे।"

मैंने रोते हुए कहा, "अगले जन्म में हम बड़े होकर तुम्हें भी नदी में ढकेलेंगे।"

सचमुच, यह बहुत अच्छा सपना है। इसमें जो कुछ गलत होगा, उसे आप क्षमा करेंगे जी।

मुन्नालाल धानक
कक्षा सातवीं, गाडरवारा

•••

मैंने एक बार सपने में देखा कि मैं नदी नहाने गई हूं। आगे बढ़ती जा रही हूं। सभी मना कर रहे हैं कि डूब जाओगी। मैं नहीं मानी, आगे चली गई। तभी एक हिलोर आई, मैं बह गई।

जब होश आया तो देखा कि सामने बहुत बड़ा महल बना है। वहां की सेना व्यंजन की है। मुझे मालूम नहीं था। मैंने उन्हें पकड़कर खा लिया जो कि रसगुल्ले की सेना थी।

आगे बढ़ी, देखा द्वार पर दो रसगुल्ले खुरमा के स्टूल पर बैठे थे। उनके हाथ में बताशे के हथियार थे। मैंने उन्हें हथियार सहित खा लिया। अंदर गई, देखा, तो वहां दो-चार चाकलेट के वृक्ष लगे थे। मैंने दो चाकलेट तोड़कर खा ली। आगे बढ़ी, देखा, तो वहां एक छोटा सुंदर कमरा बना था। जिसकी दीवार बिस्कुटों की थी। मैंने बिस्कुटों की दीवार उठाकर खा ली। सामने देखा, बहुत से लड्डू-पेड़े लुड़कते आ रहे थे। मुझसे बोले, "तुम्हें राजा ने बुलाया है।"

मैं उनके साथ चली गई। देखा कि आलू बड़े के गोल गद्दे पर, चमचम के तकिया लगाए, राजा मलाई के रसगुल्ले विराजे थे। तभी दौड़ते-दौड़ते श्री मंत्री जी, मैथी के लड्डू, आए और अभी घटी घटना बताई। महाराज गुस्से में बोले, "इसे मौत की सजा मिलेगी। ले जाओ और तहखाने में डाल दो। खतरनाक सैनिकों के हाथ सौंप दो।"

मैं तहखाने में गई। देखते-देखते मैंने सारे सैनिक हड़प कर लिए। राजा ने फिर आज्ञा दी, "ले जाओ इसे समुद्र में फेंक दो।"

मुझे प्यास लगी थी। समुद्र में गिरते ही मुझे स्वाद मिला कि समुद्र का पानी तो शरबत है तथा समुद्र एक छोटी टंकी है। तभी मैंने देखा कि एक समोसा की नाव माल लिए चली आ रही है। मैंने उसे माल सहित खा लिया। सारा शरबत पीकर बाहर आ गई।

तभी मुझे एक जोरदार चांटा पड़ा और आकाशवाणी हुई, "इतनी देर से जगा रही हूं, जागती नहीं, उठो, जरीना बुलाने आई है।"

रंजीता दीक्षित
कक्षा सातवीं, गाडरवारा

•••

अपनी प्रयोगशाला

तुम सभी ने बहुत से जादू के खेल देखे होंगे। वे वास्तव में कोई चमत्कार या जादू नहीं होते। ये खेल सिर्फ हाथ की सफाई का कमाल होते हैं या किसी रासायनिक प्रक्रिया का फल।

आओ, हम ऐसी ही रासायनिक प्रक्रियाओं से संबंधित एक ही पदार्थ के तीन 'चमत्कार' देखते हैं। पदार्थ है सिर्फ "मरक्यूरिक क्लोराइड"।

चमत्कार. 1

तुमने कई लोगों से सुना होगा, या फिर देखा होगा, कि किसी महात्मा ने तस्वीर से भभूत निकाली। तुम भी किसी तस्वीर से भभूत निकाल सकते हो। इसमें कोई जादू या चमत्कार नहीं है। इसके लिए ऐसी तस्वीर लेनी होगी जिसकी फ्रेम एल्युमिनियम की बनी हो। देवता कोई भी हो सकते हैं।

अब एक कांच का गिलास लो। इस गिलास में 'पानी' भर लो। एक पान का पत्ता डाल लो। इस पान के पत्ते से पानी के छींटे तस्वीर पर डाल कर पूजा करो। पानी के छींटे इस प्रकार डालो कि छींटे एल्युमिनियम की फ्रेम पर जरूर पड़ें। फिर तुम आंख बंद करके ऐसा प्रदर्शित करो, जैसे देवता से प्रार्थना कर रहे हो। दो-तीन मिनट बाद आंख खोलने पर पाओगे कि फ्रेम में से भभूत निकल-निकल कर तस्वीर के नीचे इकट्ठी हो रही है। देखने वाले तुम्हारे चमत्कार से जरूर प्रभावित हो जाएंगे। संभव है तुम्हें दक्षिणा देना और प्रणाम करना भी शुरू कर दें।

चमत्कार. 2

इसी तरह तुम पांच दस पैसे के सिक्के से भी भभूत निकाल सकते हो। अपनी मित्र-मंडली के सामने ऐसा करके आश्चर्य चकित कर सकते हो। इसके लिए तुम किसी भी मित्र से कोई सिक्का मांग लो (बस, यह सावधानी रखो कि सिक्का पांच या दस पैसे वाला हो और वह भी हल्का।) इस सिक्के को सभी मित्रों को बतला कर कहो, कि सिक्का गंदा है। मैं इसको पानी से धो देता हूं। इस बहाने तुम उसे कांच के गिलास में रखे 'पानी' से धो लो। अब सिक्का किसी मित्र के हाथ में देकर कहो, कि वह उसे मुट्ठी में बंद कर ले। फिर नाटकीय ढंग से उसकी मुट्ठी के आस-पास हाथ घुमा-घुमा कर होंठों में मंत्र की तरह कुछ बुदबुदाओ। पांच मिनिट बाद तुम मित्र की मुट्ठी खोलकर सिक्का सबको बतलाओ। तुम देखोगे कि सिक्के से बहुत सी भभूत निकल कर हथेली पर इकट्ठी हो चुकी है।

इसे जरूर पढ़ो

रसायन खतरनाक होते हैं और कभी-कभी जानलेवा भी। भोपाल में पिछले साल हजारों लोग विषैली गैस की सांस लेने से मर गए। कई हजार अभी भी बीमार हैं। तुमने अम्ल के बारे में भी सुना होगा। वे भी यदि शरीर या कपड़ों पर गिर जाएं तो नुकसान पहुंचाते हैं। कई रसायन बहुत अधिक जहरीले होते हैं। जैसे मरक्यूरी, पोटेशियम सायनाइड आदि। ये रसायन स्कूल की प्रयोगशाला में भी उपयोग किए जाते हैं। इसलिए रसायनों को इस्तेमाल करने में सावधानी बरतना बहुत जरूरी है। ध्यान रखो कि रसायन शरीर या कपड़ों पर न गिरें। अम्लों को, खासकर सांद्र अम्लों को कभी मत सूंघना। प्रयोग या उपयोग के बाद हाथों को साबुन से धोओ। उंगलियों को मुंह में मत डालो। अच्छा रहेगा यदि तुम इन प्रयोगों को अपने शिक्षक या इस संबंध में जानकारी रखने वाले व्यक्ति की उपस्थिति में करो।

चमत्कार. 3

इस चमत्कार में एक एल्युमिनियम की हल्की पुरानी कटोरी लो। कटोरी टूटी-फूटी भी हो सकती है। मित्रों से पूछो कि वह कितना हलवा खाना चाहते हैं— एक या दो किलो?

मित्रों को मालूम है कि तुम्हारे पास न तो हलवा है, न ही हलवा बनाने का सामान। तुम मित्रों को कटोरी दिखाओ और समझाओ कि मैं जादू से इस कटोरी में हलवा बनाकर खिलाता हूं। जब मित्र खाने के लिए तैयार हो जाएं, तब उनसे कहो कि मैं पहले कटोरी को पानी में धो लेता हूं। कांच के गिलास में रखे 'पानी' से उसे धो लो। धोने के बाद कटोरी को किसी दोस्त के हाथ में दे दो। फिर दो-तीन मिनिट तक हाथ घुमा-घुमा कर होठों में कुछ बुदबुदाओ, और ऐसा प्रदर्शित करो जैसे तुम मंत्र पढ़ रहे हो।

तुम देखोगे कि थोड़ी-सी देर में मित्र कटोरी को नीचे गिरा देगा। क्योंकि कटोरी बहुत गरम हो जाएगी। अपने मित्र को समझाओ कि यह तुम्हारे जादू का कमाल है। पर अब हलवा नहीं बनेगा, क्योंकि तुमने (मित्र ने) कटोरी गिरा दी।

अब तक तुम समझ ही गए होगे कि कांच के गिलास में जो 'पानी' तुम लोगे वह साधारण पानी नहीं है। वास्तव में यह 'पानी', पानी में मरक्यूरिक क्लोराइड का घोल है। मरक्यूरिक क्लोराइड एल्युमिनियम से क्रिया करके बहुत अधिक मात्रा में उष्मा पैदा करता है, तथा साथ ही भभूत जैसा पदार्थ एल्युमिनियम क्लोराइड निकालता है।

इस घोल को तैयार करने के लिए एक कप पानी में एक चम्मच मरक्यूरिक क्लोराइड घोल लो। बस घोल जादू दिखाने के लिए तैयार है।

पर तुम ये चमत्कार का खेल सावधानी से करना। क्योंकि मरक्यूरिक क्लोराइड जहर है। खेल दिखाने के बाद साबुन से अच्छी तरह हाथ जरूर धो लेना।

ओमप्रकाश पायक
मंदसौर

रानो शर्मा
कक्षा छठवीं, बनखेड़ी

मेरा घर

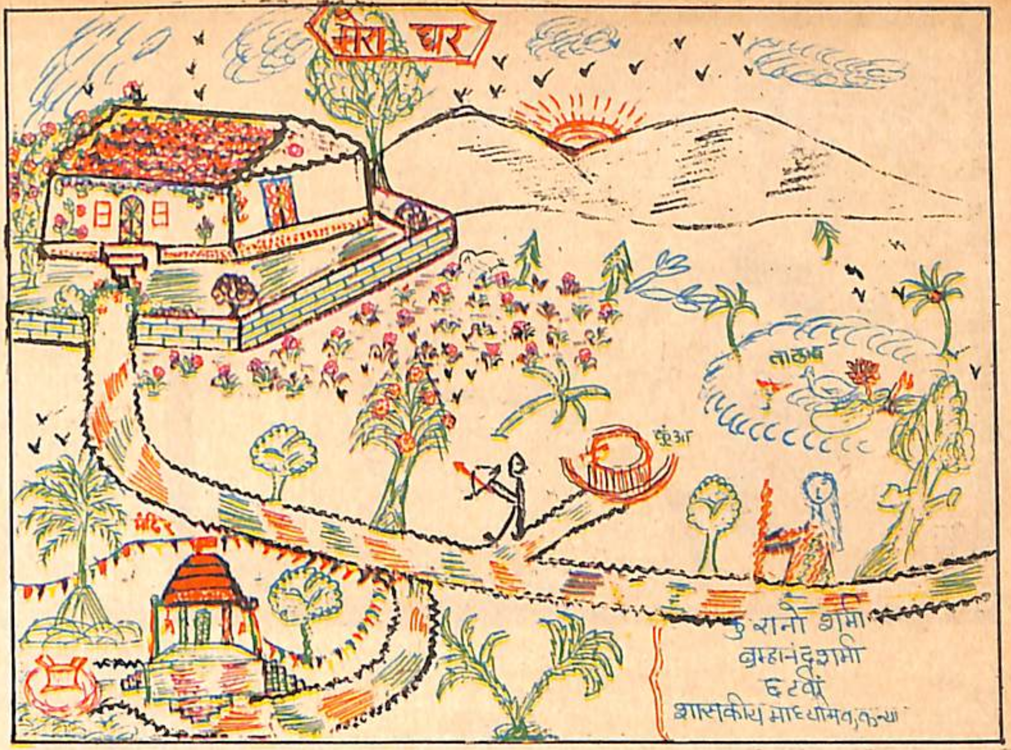

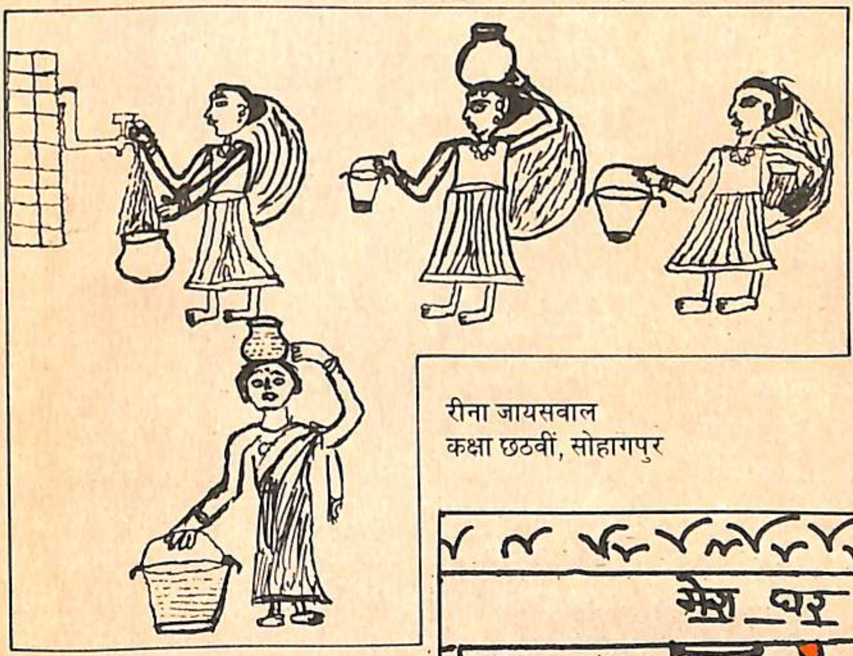

टप..टप..
नल आया

रीना जायसवाल
कक्षा छठवीं, सोहागपुर

मेरा घर

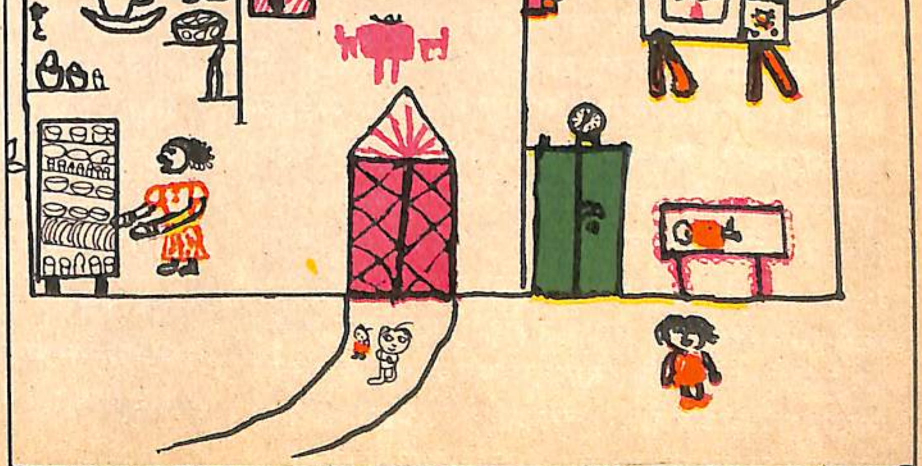

कान्ता आसवानी
कक्षा आठवीं, सोहागपुर

बाल मुकुन्द
कक्षा आठवीं, पिपरिया

मैं हूं गोपाला

सपना जैन
कक्षा सातवीं, सोहागपुर

पौं.... पौं..

बस आती है

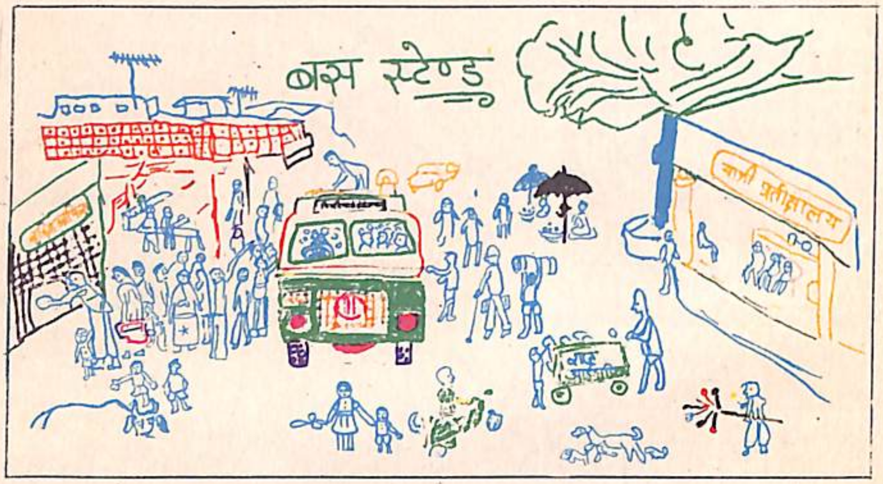

पानी बिन सब सून

संध्या जवार
कक्षा आठवीं, पिपरिया

बाल मुकुन्द
कक्षा आठवीं, पिपरिया

यह है मेरा खेत

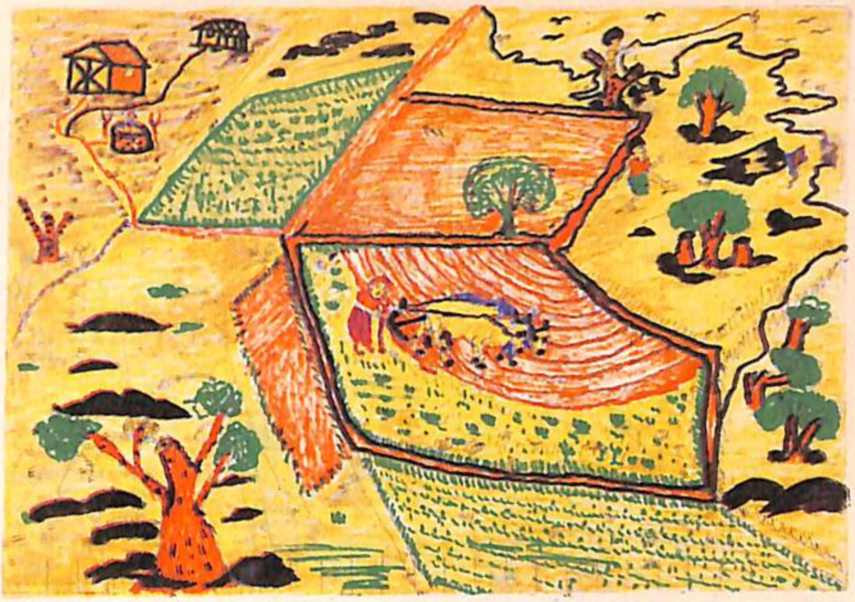

धनराज कुमार पटेल
कक्षा आठवीं, जुन्हैठा

हाट का दिन

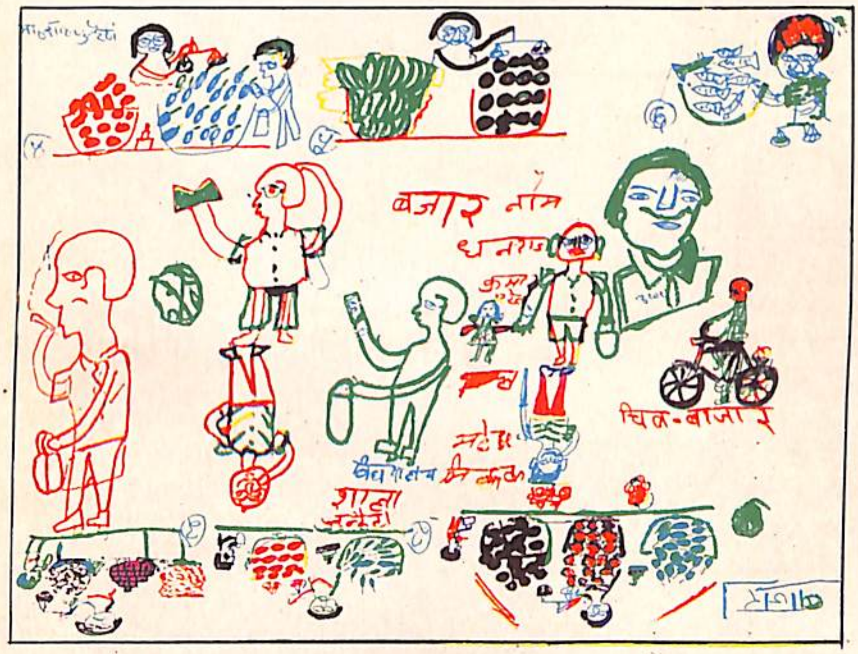

जंगल में चरती हैं गैया

सीमा कुमारी जवार
कक्षा आठवीं, पिपरिया

चौधरी, भोपाल

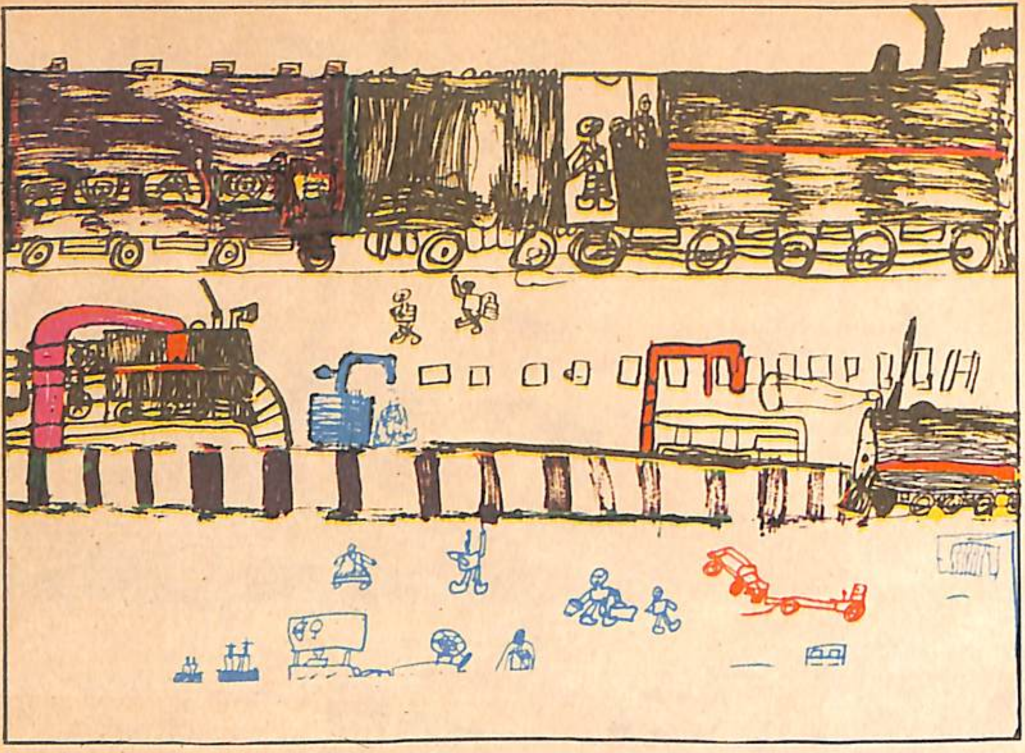

राघवेंद्र सिंह पटेल
कक्षा सातवीं, गाडरवारा

छुक..छुक.. गाड़ी

राजा पाराशर
कक्षा आठवीं, गाडरवारा

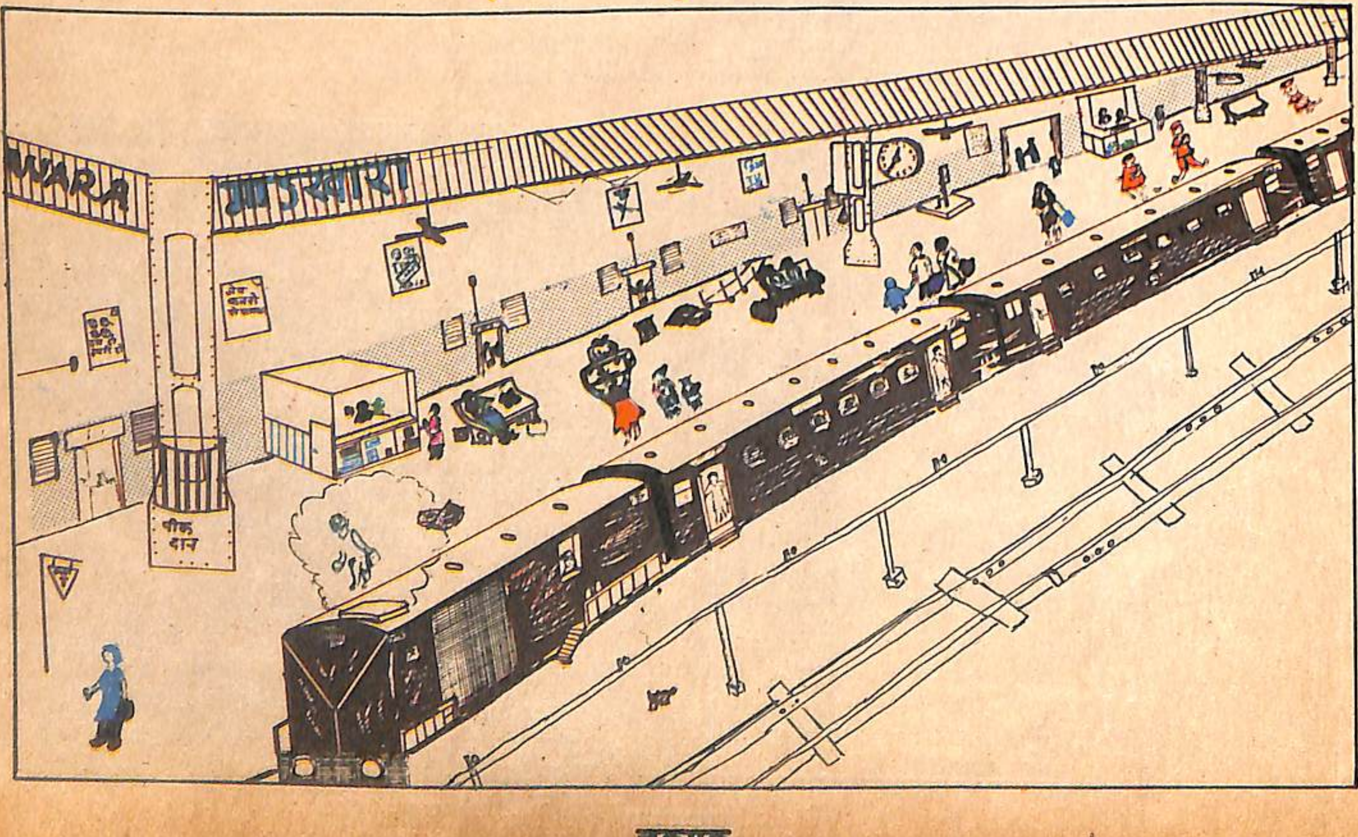

1...2...3...

भारत के बच्चे

क्या तुम बता सकते हो कि तुम्हारे गांव या शहर में कितने बच्चे हैं? हाईस्कूल में पढ़ने वाले लड़के-लड़कियों को छोड़ो। एक वर्ष से लेकर 14 वर्ष तक की उम्र के कितने बच्चे होंगे?

आओ, यही हिसाब करते हैं। मान लो तुम्हारे गांव में 400 घर हैं और कुल जनसंख्या 3000 है। तुम पाओगे कि इस 3000 की आबादी में करीब 1000-1200 बच्चे होंगे जो 14 वर्ष की उम्र तक के हैं।

हिसाब को आगे बढ़ाओ। तुम्हारे जिले में ऐसे कितने गांव होंगे? राज्य में कितने? देश भर में कितने?

भारत के 62 करोड़ लोगों में से 25.5 करोड़ बच्चे हैं जो 14 साल से कम उम्र के हैं।

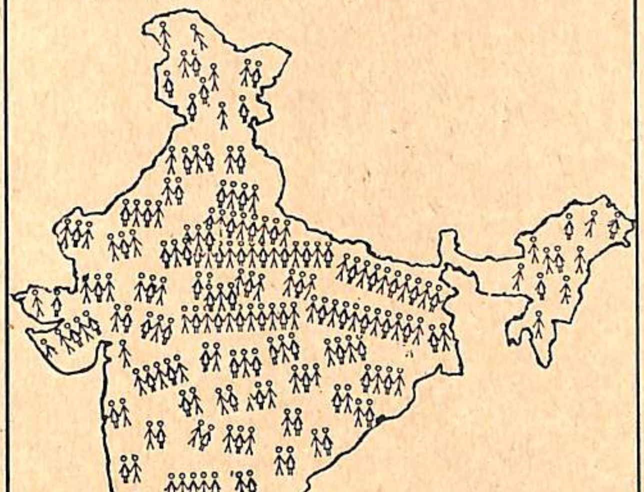

हमारे देश में करीब 62 करोड़ लोग रहते हैं। इनमे से करीब 25.5 करोड़ बच्चे हैं जो 14 से कम उम्र के हैं। यदि हम 21 वर्ष तक के युवक-युवतियों को भी शामिल करते हैं तो हम पाएंगे कि 62 में से करीब 40 करोड़ लोग इस समूह में आएंगे।

असल में बच्चों की संख्या और अधिक हो यदि सब बच्चे जिंदा रहें। बहुत सारे बच्चे जन्म लेते ही खत्म हो जाते हैं। जन्म के समय हर 100 बच्चों में से 13 बच्चे मर जाते हैं।

जो बचते हैं वे सब बड़े नहीं हो पाते। 100 में से कम-से-कम 5 बच्चे, 4 साल की उम्र के पहले ही मर जाते हैं। ऐसा क्यों होता है यह हम आगे बताएंगे।

ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा बच्चे मरते हैं। इसका क्या कारण हो सकता है? तुम खुद सोचो।

अकसर यह देखा गया है कि जन्म के समय मरने वालों में लड़कियां ज्यादा होती हैं, लड़कों की अपेक्षा। क्या इसका एक कारण यह नहीं हो सकता कि अधिकांश लोग लड़का चाहते हैं, लड़की नहीं। इसलिए वे लड़कियों के स्वास्थ्य पर कम ध्यान देते हैं। तुमने कभी सोचा है कि ऐसा क्यों होता है? क्यों लड़कों को अधिक पसंद किया जाता है? क्यों लड़कों और लड़कियों को बराबरी से नहीं देखा जाता है? क्या यह स्थिति ठीक है?

अब चलो, यह देखें कि बच्चे क्यों मरते हैं। हम वापस अपने गांव पर ध्यान केंद्रित करें। गांव के 400 घरों में से 300 घरों में बच्चों के जन्म के समय डाक्टर या कोई प्रशिक्षित दाई नहीं पहुंच पाती है। फलस्वरूप बच्चे बीमारी या अन्य कारणों से मर जाते हैं।

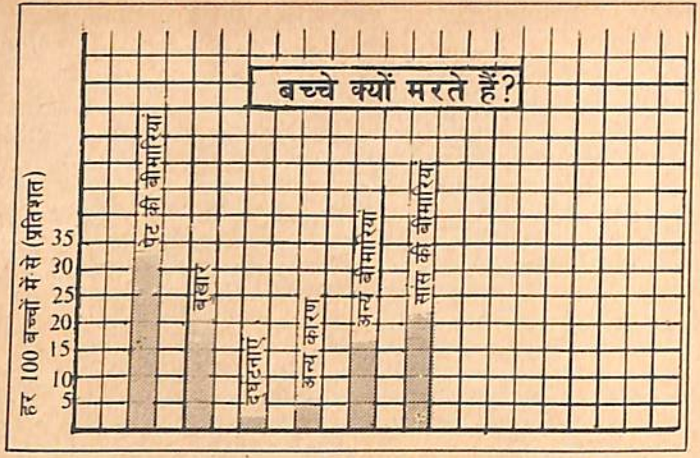

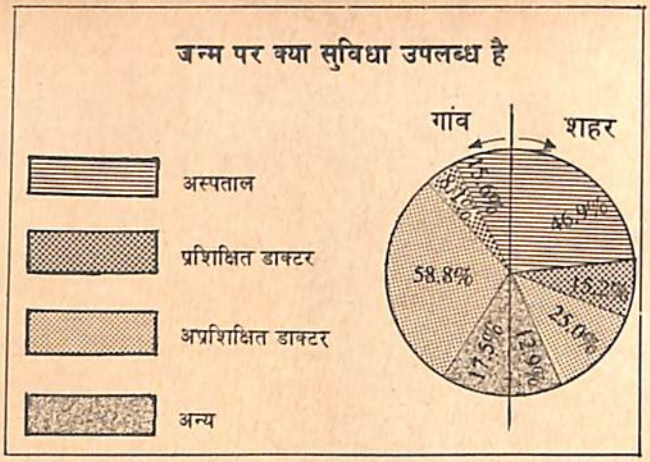

ये बीमारियां कई प्रकार की होती हैं। मुख्यतः ये पेट की बीमारियां (दस्त आदि), सांस की तकलीफ (फेंफड़ों की बीमारियां), जुकाम और अन्य लक्षण हैं। हर 100 मौतों में से 92 इन्हीं कारणों से होती हैं। बीमारी का एक मुख्य कारण है अपर्याप्त भोजन।

विशेषज्ञों के अनुसार पर्याप्त भोजन की परिभाषा यह है कि प्रति व्यक्ति को दिन में कम-से-कम 2400 कैलोरी भोजन द्वारा मिलना चाहिए। कैलोरी ऊर्जा का नाप है (जैसे सेंटीमीटर लंबाई का नाप है)। यह ऊर्जा शरीर के लिए कई कारणों से जरूरी है। पहली, शरीर की कोशिकाओं के वृद्धि और मरम्मत के लिए। दूसरी, नई कोशिकाएं बनाने में और तीसरी, काम करने के लिए।

यदि हम अपने गांव का उदाहरण लें तो पाएंगे कि 400 घरों में से 195 घरों के सदस्यों को पर्याप्त भोजन नहीं मिलता। थोड़ी और बारीकी से हिसाब करने पर इन घरों की संख्या 230 हो जाती है। इनमें से 20 घर बहुत बुरी हालत में हैं। इनके सदस्य भुखमरी से अक्सर बीमार रहते हैं। अपर्याप्त भोजन के असर पर हमने पृष्ठ 28 पर विस्तार से चर्चा की है।

अब देखें, कितने बच्चे स्कूल पहुंच पाते हैं? इनमें से कितने बच्चे हाईस्कूल में दाखिल हो पाते हैं?

हर 100 बच्चों में से करीब 50-60 बच्चे प्राथमिक स्कूल में भरती होते हैं। इनमें से 20-25 बच्चे माध्यमिक शाला पहुंचते हैं। हाईस्कूल तक तो केवल 5-10 बच्चे ही पहुंच पाते हैं। कालेज में तो 1-2 बिरले ही पहुंचते हैं। तुमने देखा कि प्राथमिक शाला से लेकर कालेज तक आते-आते संख्या धीरे-धीरे घटती जाती है। ऐसा क्यों

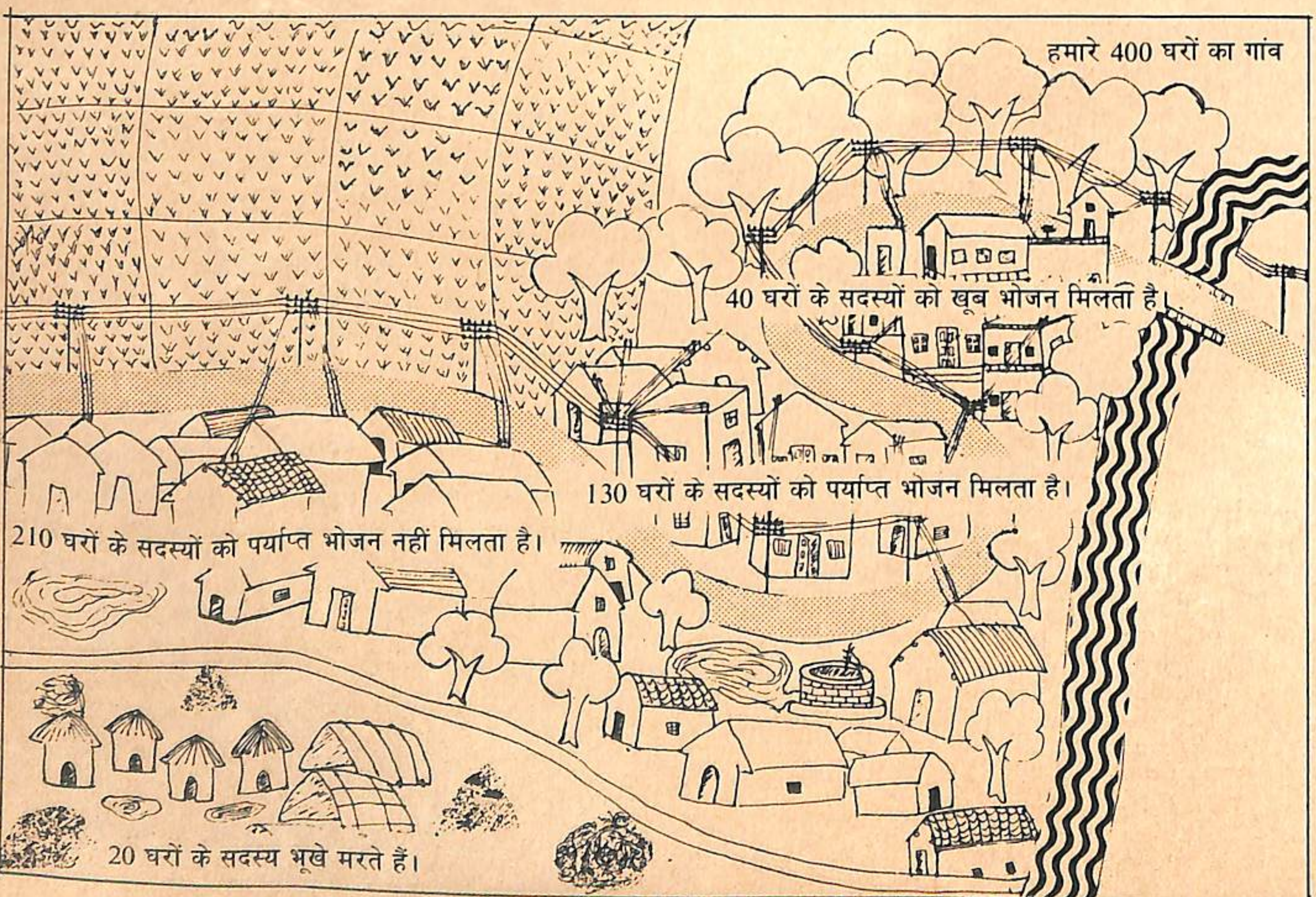

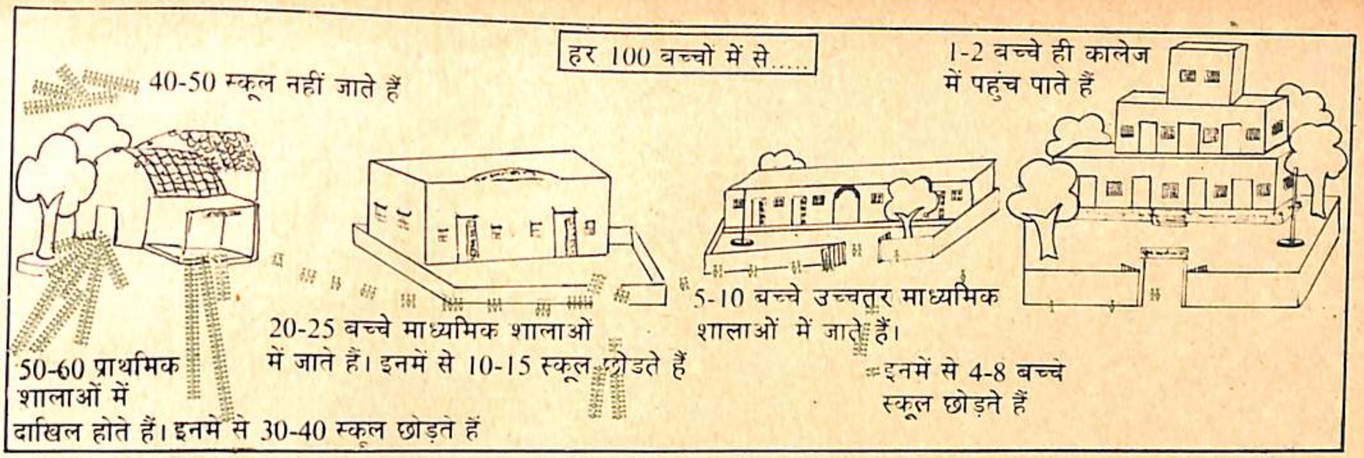

होता है?

ये बच्चे स्कूल नहीं जाते, या स्कूल जाना एक-दो साल के लिए बंद कर देते हैं। ये स्कूल क्यों छोड़ते हैं? छोड़ने के बाद वे क्या करते हैं और क्यों?

10-14 वर्ष की उम्र के हर 100 बच्चों में से 30 लड़के और 20 लड़कियां मजदूरी करते हैं। ये मुख्यतः खेत, बगीचे, खदान आदि में काम करते हैं। इसके अलावा बहुत सारे छोटे-छोटे बच्चे अपने घरों के लिए लकड़ी-कंडे बीनने में लगे रहते हैं, या ढोर चराने में।

अब, फिर से ये सवाल सामने आते हैं।

बच्चे क्यों मरते हैं?
बच्चे क्यों स्कूल नहीं जाते हैं?
बच्चे क्यों भूखे मरते हैं?
बच्चे क्यों बीमार हो जाते हैं?
बच्चे क्यों मजदूरी करते हैं?

इन सब का एक मुख्य कारण है गरीबी!! ये बच्चे और इनके परिवार क्यों गरीब हैं? तुम इस पर सोचो; भविष्य में कभी जरूर बात करेंगे।

(इस लेख में दिए गए आंकड़े 1981 की जनगणना पर आधारित हैं। ये आंकड़े यूनिसेफ की 'चाइल्ड एटलस ऑफ इंडिया' से लिए गए हैं।)

तुम खुद पता करो

इस लेख में हमने कुछ प्रतिशत बताए हैं। उदाहरण के लिए 100 बच्चों में से 13% जन्म के समय ही मर जाते हैं, केवल 40% बच्चे प्राथमिक पढ़ाई पूरी करते हैं आदि। हमने यह भी बताया कि देश में कुल 22.5 करोड़ बच्चे हैं।

अब तुम हिसाब लगाओ कि देश में कुल कितने बच्चे,

- जन्म के समय ही मर जाते हैं?
- चार साल की उम्र के पहले ही मर जाते हैं?
- भूखे रहते हैं?
- स्कूल नहीं जाते हैं?
- मजदूरी करते हैं?

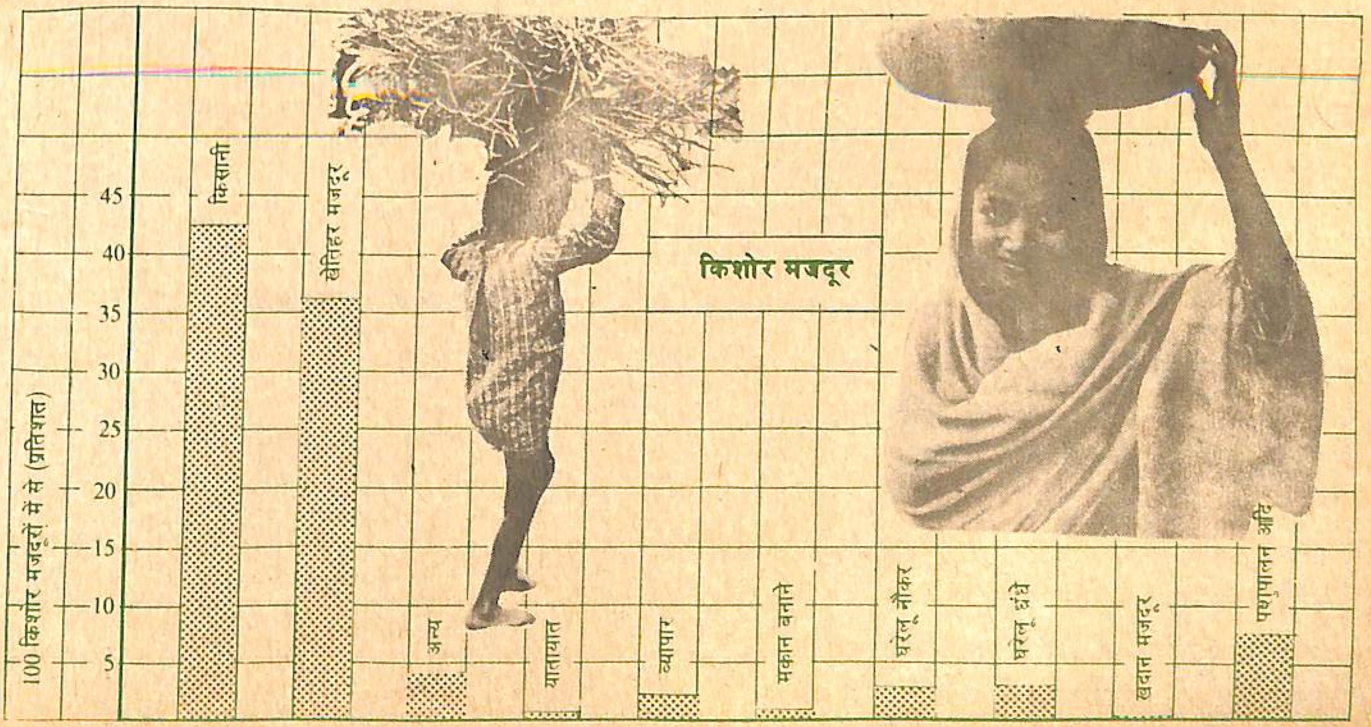

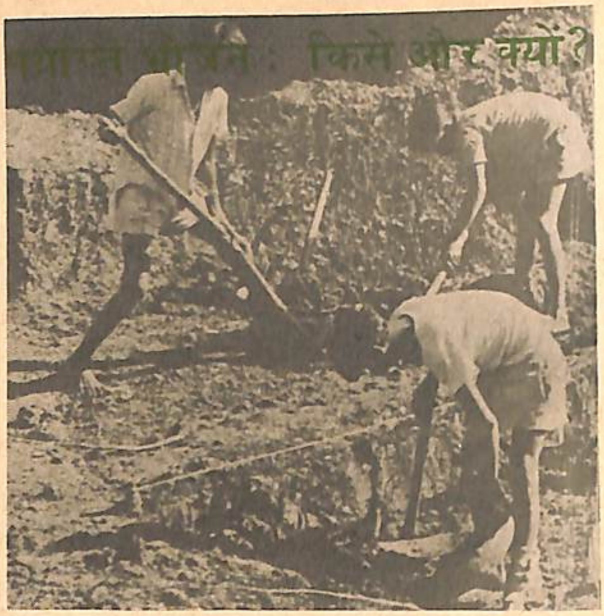

विश्व पंचायत में चर्चा हो रही थी। अमेरिका का प्रतिनिधि बड़े जोर से बोल रहा था, 'विश्व के हर इंसान का जन्म अधिकार है कि उसे पर्याप्त भोजन मिले।'

इस पर भारत के प्रतिनिधि ने सवाल किया कि, 'आखिर पर्याप्त भोजन है क्या?'

उसको यह उत्तर मिला:
एक व्यक्ति के लिए एक समय का खाना

अन्न	400 ग्राम
तिलहन/फली/दाना	100 ग्राम
तेल/चरबी	25 ग्राम
दूध	200 ग्राम
आलू	100 ग्राम
सब्जी	50 ग्राम
अंडा/मांस	25 ग्राम

(इस हिसाब से चाय, शक्कर, मिर्च-मसाले, के अतिरिक्त लकड़ी/तेल (ईंधन) आदि का हिसाब शामिल नहीं है।)

"इतने भोजन से आदमी स्वस्थ रह सकता है।" अमेरिकी प्रतिनिधि ने कहा।

"इस पर कितना खर्च करना पड़ेगा?" भारतीय प्रतिनिधि ने चिंतित स्वर में पूछा।

अमेरिकी प्रतिनिधि ने कागज पर कुछ हिसाब करके कहा, "हमारे यहां के फैक्टरी मजदूर को अपनी दैनिक कमाई का केवल 3% इस पर खर्च करना होगा।"

"और हमारे यहां केवल 7%।" इंग्लैंड और इसराइल के प्रतिनिधियों ने कहा।

फिर अन्य देशों के प्रतिनिधि भी बोलेने लगे।
"केवल 6%।" आस्ट्रेलिया के प्रतिनिधि ने कहा।

"केवल 4%।" यह कैनाड़ा का प्रतिनिधि था।
"हमारे मजदूर को अपनी दैनिक आय का 38% खर्च करना होगा।" मलेशिया के प्रतिनिधि ने कहा।

"फिलीपींस का प्रतिनिधि थोड़े चिंतित स्वर में बोला, "हमारे मजदूर को 42% खर्च करना पड़ेगा। वह भी केवल एक समय के भोजन के लिए।"

भारतीय प्रतिनिधि चुप था। उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी कुछ बोलने की। अन्य प्रतिनिधियों ने पूछा, "क्या बात है?"

भारतीय प्रतिनिधि बोला, "असंभव है। हमारे मजदूर को अपनी दैनिक कमाई तो खर्च करना ही पड़ेगी, साथ ही उधार भी लेना पड़ेगा। तब कहीं जाकर इतना भोजन उसे मिलेगा।"

यह एक काल्पनिक बातचीत है। पर इसमें दिए गए आंकड़े काल्पनिक नहीं हैं बल्कि हकीकत हैं।

क्या इसका यह मतलब निकलता है कि भारत के निवासी अपर्याप्त भोजन पाते हैं?

हां, अधिकांश लोगों को कम भोजन मिलता है, कुछ खाते-पीते घरों को छोड़कर।

इस विवरण से कुछ सवाल उभरते हैं :

कम भोजन का शरीर पर क्या असर हो सकता है?
कम भोजन का मानसिक असर क्या हो सकता है?
कम भोजन मिलने का कारण क्या हो सकता है?

अमेरिका के लोग पर्याप्त भोजन आसानी से प्राप्त कर सकते हैं, जबकि भारतीय नहीं। ऐसा क्यों?

अमेरिका में भी कुछ लोग क्यों भूखे मरते हैं? (हां! इतना धनी देश होने के बावजूद भी वहां भारत जैसी गरीबी है, लेकिन कम मात्रा में)।

भारत में भी कुछ ही लोग पर्याप्त भोजन पा सकते हैं, जबकि अधिकांश नहीं। आखिर क्यों?

ऐसे कई और सवाल हैं।
क्या इनके उत्तर ढूंढ सकते हो? कैसे ढूंढोगे? यही सोचने की बात है!!!

पर्याप्त भोजन पर कितना खर्च?

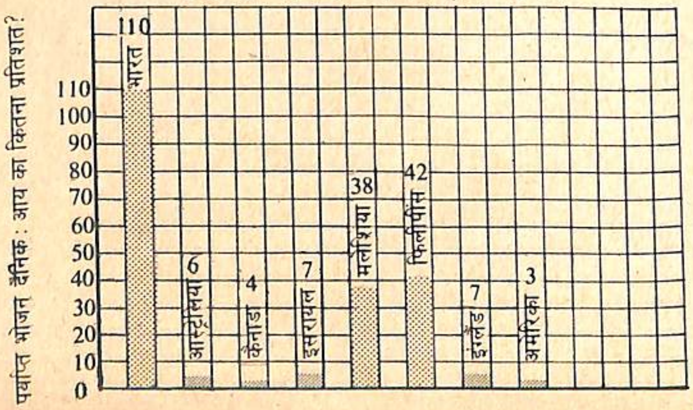

उड़ी-उड़ी रे पतंग

नीरज मेहता
कक्षा आठवीं, गाडरवारा

प्रदीप कुमार सिलाबट
कक्षा सातवीं, पिपरिया

दीपा सोनी
कक्षा सातवीं, गाडरवारा

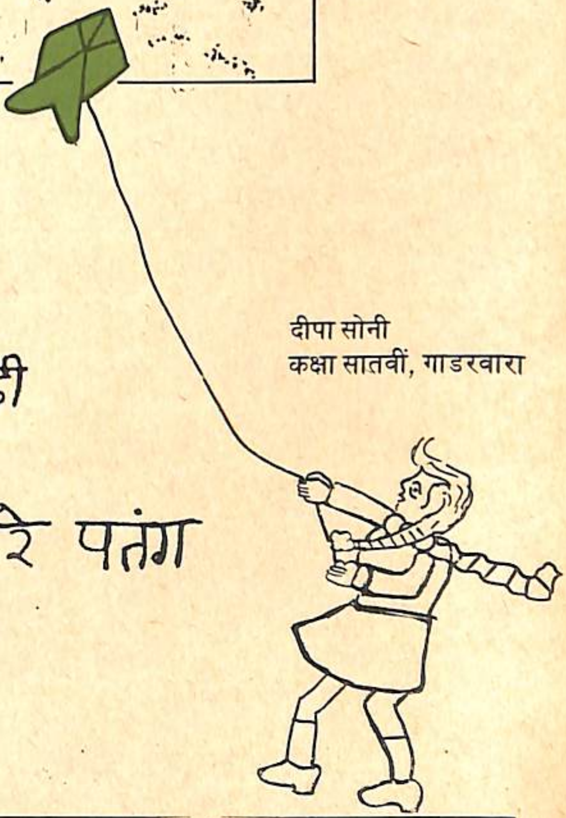

विश्वास कुमार
कक्षा आठवीं, रामपुर

गरीबी और पोषण

कुछ दिन पहले एक लड़की ने सवालीराम को एक पत्र लिखा। पत्र में एक प्रश्न पूछा था। बेचारे सवालीराम उस प्रश्न का उत्तर खोजते-खोजते परेशान हो गए।

प्रश्न था, लोग गरीब क्यों हैं? लड़की ने पत्र में और बहुत कुछ लिखा था। संसार में कुछ लोग अमीर और ज्यादातर लोग गरीब क्यों होते हैं? इस विज्ञान के युग में लोग क्यों भूखे मरते हैं, जबकि कृषि में हरित क्रांति फैली हुई है? विज्ञान के इस युग में गरीब लोग क्यों मक्खी जैसे मरते हैं, जबकि चिकित्सा क्षेत्र में कई भयानक बीमारियों पर काबू पा लिया गया है? इस विज्ञान के युग में गरीबों के पास साधन और पैसों की कमी क्यों है, जबकि इतने सारे बड़े-बड़े विकास कार्यक्रम उनके नाम पर चलाए जा रहे हैं? गरीबों को विज्ञान और तकनालॉजी का लाभ क्यों नहीं मिलता। क्यों आज, पहले के मुकाबले, ज्यादा संख्या में गरीब-भूखे लोग हैं? विज्ञान और तकनालॉजी के आशीर्वाद, सहयोग जब ज्यादा मिल रहे हैं तब भूख और गरीबी बढ़ने का क्या कारण है?

हमने सोचा, चलो, सवालीराम की कुछ मदद कर दें। हमने ढेर सारे लोगों से प्रश्न किए कि, ''लोग गरीब क्यों हैं?'' हमें दो प्रकार के जवाब मिले।

पहले प्रकार के जवाबों का मतलब कुछ इस प्रकार था : ''दुनिया में आज जनसंख्या बहुत बढ़ गई है। पर उसके मुकाबले हमारे पास जो जमीन है, प्राकृतिक और तकनीकी साधन हैं, वे बहुत कम हैं। इस वजह से सभी को खाना नहीं मिल पाता।''

इन बच्चों के शरीर में क्या अजीब बात देखते हो? इनकी बीमारी के लक्षण पहचान सकते हो?

सूखारोग (मारस्मस)

भोजन की कमी से इस बच्चे को पर्याप्त कैलोरी नहीं मिल पाई।

बच्चे की चमड़ी सूखी और खुरदरी है।

बच्चा हमेशा भूखा रहता है।

बच्चा वृद्ध जैसा दिखता है।

बच्चे का पेट फूला रहता है।

बच्चा दुबला-पतला है।

शरीर में सिर्फ हड्डी और चमड़ी।

क्वासी ओकार

भोजन की कमी से इस बच्चे को, पर्याप्त प्रोटीन नहीं मिल पाया।

बच्चे के बाल भूरे हैं।

बच्चे की आंखों की चमक चली गई है।

बच्चे की चमड़ी यहां-वहां से कटी-फटी है।

बच्चे की मांसपेशियां नष्ट हो गई हैं।

बच्चे की टांगों और हाथों में द्रव भरने से सूजन बनी रहती है।

बच्चे की बांहें दुबली-पतली हैं।

शरीर में सिर्फ हड्डी, चमड़ी और पानी।

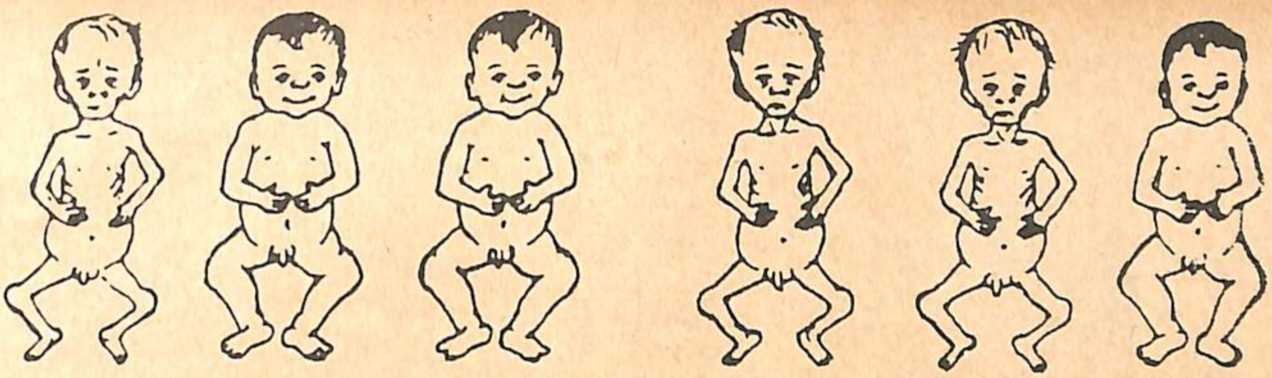

क्या तुम जानते हो कि दुनिया में हर तीन में से एक बच्चा ऐसा है, जिसे भरपेट भोजन नहीं मिलता? कई देशों में तो हर तीन में से दो बच्चों को पौष्टिक भोजन नहीं मिलता है। ऐसे देशों में अक्सर पाया जाता है कि कुछ लोग बहुत ही धनवान होते हैं, और अधिकांश लोग इतने गरीब कि वे रोज के खाने-पीने के साधन भी नहीं जुटा पाते। जैसे, हमारे देश भारत में अपर्याप्त अथवा अपूर्ण आहार का मुख्य कारण लोगों का निम्न आय स्तर है, लोगों की गरीबी है। असमान वितरण व्यवस्था है।

दूसरी तरह के जवाब इस प्रकार के थे : ''अधिकतर जमीन, साधन, पैसा कुछ लोगों के हाथ में है और बचे हुए ढेर सारे लोगों के पास न जमीन है, न साधन, न पैसा, इसलिए वे गरीब हैं।''

एक बात हमने देखी। पहले प्रकार के जवाब जिन्होंने दिए, वे लोग ऐसे थे जिनके पास खाने के लिए पर्याप्त था और जो भूखे नहीं थे। जिन्होंने दूसरे प्रकार के जवाब दिए थे, उनमें अधिकतर लोग गरीब थे। जिनके पास न जमीन थी न साधन, और न ही भविष्य के लिए कोई आशा ही।

गरीबी का असर बहुत भयानक होता है। नीचे दिए चित्रों को देखो। ये बच्चे बीमार हैं। इनकी बीमारी का मुख्य कारण भरपेट व संतुलित भोजन का न मिलना हो सकता है। भोजन की कमी से उनको पूरी मात्रा में न तो मंड मिल पाया और न प्रोटीन। विटामिन आदि का सवाल ही छोड़ो। पर्याप्त भोजन न मिलने का कारण गरीबी है।

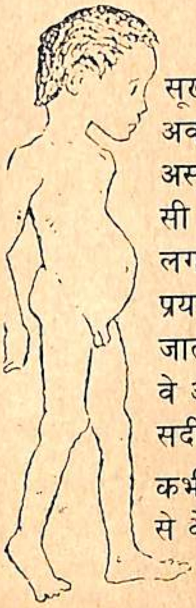

सूखा रोग और क्वाशिओकर कुपोषण की गंभीर अवस्था है। इस अवस्था तक पहुंचने के पहले ही बच्चे अस्वस्थ रहते हैं। ऐसे बच्चे हमेशा रोते-झींकते हैं। जरा-सी बात पर फूट पड़ते हैं। देखने में उदास और सुस्त लगते हैं और शीघ्र खीज पड़ते हैं। ऐसे बच्चे चलने का प्रयत्न भी नहीं करते हैं। उनके शरीर की वृद्धि धीमी हो जाती है। वे दुबले और छोटे रहते हैं। कमजोरी के कारण वे अन्य बीमारियों से बच नहीं पाते हैं। उनको अक्सर सर्दी और दस्त की बीमारी होती है।

कभी-कभी निमोनिया या क्षय रोग (टी.बी.) होने से वे मर भी जाते हैं।

बच्चे

कुछ बच्चे, स्कूल जाते बच्चे,
कुछ बच्चे, कप प्लेट धोते बच्चे,
कुछ बच्चे, कामिक्स पढ़ते बच्चे,
कुछ बच्चे, कार साफ करते बच्चे,
कुछ बच्चे, बोर्नविटा पीते बच्चे,
कुछ बच्चे, सूखी रोटी चबाते बच्चे,
कुछ बच्चे, हंसते खिलखिलाते बच्चे,
कुछ बच्चे, आंसू भींगे बच्चे,
कुछ बच्चे, दौड़ते खेलते बच्चे,
कुछ बच्चे, चोरी, जेबकतरी करते बच्चे,
कुछ बच्चे, गाते गुनगुनाते बच्चे,
कुछ बच्चे, गालियां बकते बच्चे,
कुछ बच्चे, बचपन जीते बच्चे,
कुछ बच्चे, असमय बूढ़े हो जाते बच्चे।

निशा व्यास

माथापच्ची

एक कटोरी की कीमत है 25 पैसे।
एक लोटे की कीमत है 1 रुपए।
एक तपेली की कीमत है 12 रुपए।
हमें 100 बर्तन 100 रुपए में लेना है।
बताओ, इसमें कितनी कटोरी, लोटे और तपेली होंगी।

● ● ●

एक किसान के पास बहुत सारी बकरी, गाय और भैंस हैं।
एक बकरी औसतन 250 ग्राम दूध देती है।
एक गाय औसतन 1 लीटर दूध देती है।
एक भैंस औसतन 5 लीटर दूध देती है।
अब समस्या यह है कि 20 लीटर दूध 20 जानवरों से लेना है।
बताओ, इस संख्या में कितनी बकरी, गाय और भैंस होंगी।

● ● ●

मेरे पास चवन्नी-अठन्नी का एक ढेर है।
उसमें से 3 रुपए निकालना है। शर्त यह है कि केवल 9 सिक्के ही उठा सकते हो।
बताओ, इन 9 सिक्कों में कितनी अठन्नी और चवन्नी होगी।

● ● ●

आठ, आठ के अंकों को किस तरीके से जोड़ें (गुणा/ भाग/ जोड़/ घटाना) ताकि 152206 संख्या आए।

कृष्ण कांत पाटीदार
जगदीश चंद्र पाटीदार
सुल्तानपुर, इंदौर

क्या तुम इन नौ बिंदुओं को बिना पेंसिल उठाए, और बगैर किसी लाइन को दोहराए जोड़ सकते हो?

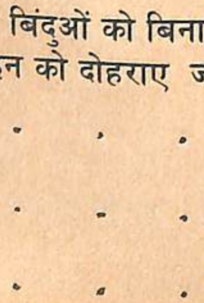

पिताजी एक डिब्बा लाए,
न कुछ पिए, न कुछ खाए,
कान मरोड़ो तत्काल बोले,
हर देश की सैर कराए।

● ● ●

एक बिल्ली है लाल सी,
वह जिस घर में खैर से जाए,
लाखों मन पानी पी जाए,
और समान सब घर का खाए।

● ● ●

पांच अक्षरों का मेरा नाम
उल्टा सीधा एक समान।

जन्मजय रजव
कक्षा नवमीं, ढ़ीमरखेड़

● ● ●

दोनों फाड़ बराबर क्यों?
बीच में काली टीकी क्यों?
हाथ उठाए धमके क्यों?
इसका अर्थ बता दे क्यों?

● ● ●

एक पुरुष के हमने देखे,
छाती ऊपर दांत,
बिन मुख के गाए राग रागिनी,
करे रसीली बात।

सुनीता श्रीवास्तव
होशंगाबाद

नीचे दिए चित्रों में छह राकेट हैं। यह छह राकेट दो समूहों में बंटे हैं। हर राकेट के पंख और पूंछ पर एक संख्या दी गई है। इन संख्याओं के मेल-जोल से राकेट के अगले सिरे की संख्या बनती है। यह नियम पूरे समूह पर लागू होता है, पर दोनों समूहों का अलग-अलग नियम है। तुम दोनों समूहों का नियम पता करके, दोनों समूहों के तीसरे राकेट की संख्याएं पता करो।

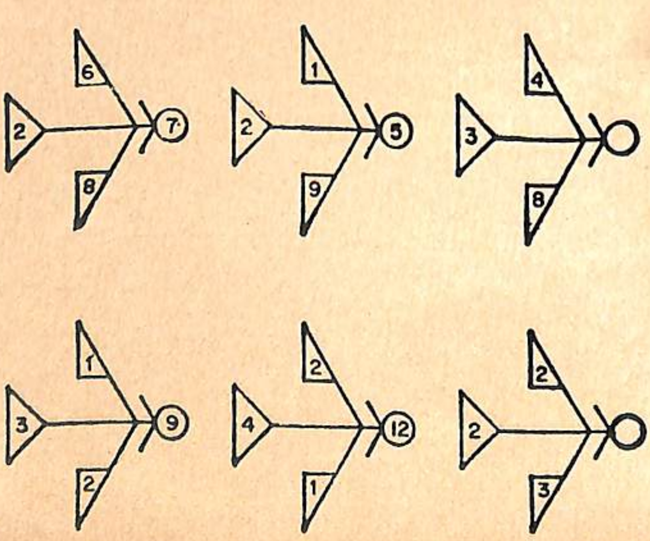

यदि पांच मुर्गी पांच दिन में पांच अंडे देती हैं, तो बीस मुर्गी कितने दिन में बीस अंडे देंगी?

● ● ●

तुम 24 को तीन 8 से ऐसे दर्शा सकते हो : 8+8+8 क्या यह किसी और संख्या को तीन बार इस्तेमाल करने से संभव है? ऐसे ही तुम 30 को तीन 5 से ऐसे दर्शा सकते हो : 5 × 5 + 5. क्या किसी और संख्या को तीन बार इस्तेमाल करने से यह संभव है?

● ● ●

इन चित्रों को पूरा करो :

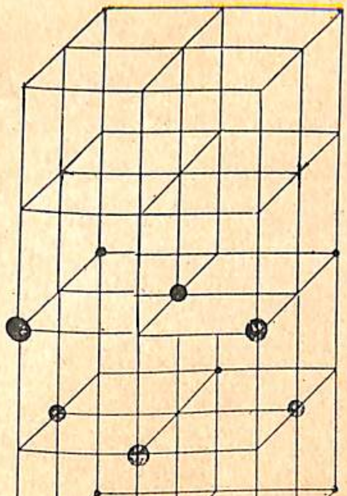

नीचे पांच अक्षर दिए गए हैं। हर एक अक्षर से शुरू करके पांच ऐसे वाक्य बनाओ जिनमें कम-से-कम पांच शब्द हों।

क द प र च

● ● ●

इस चित्र में कितने गोल, त्रिभुज, चौकोर और आयताकार हैं?

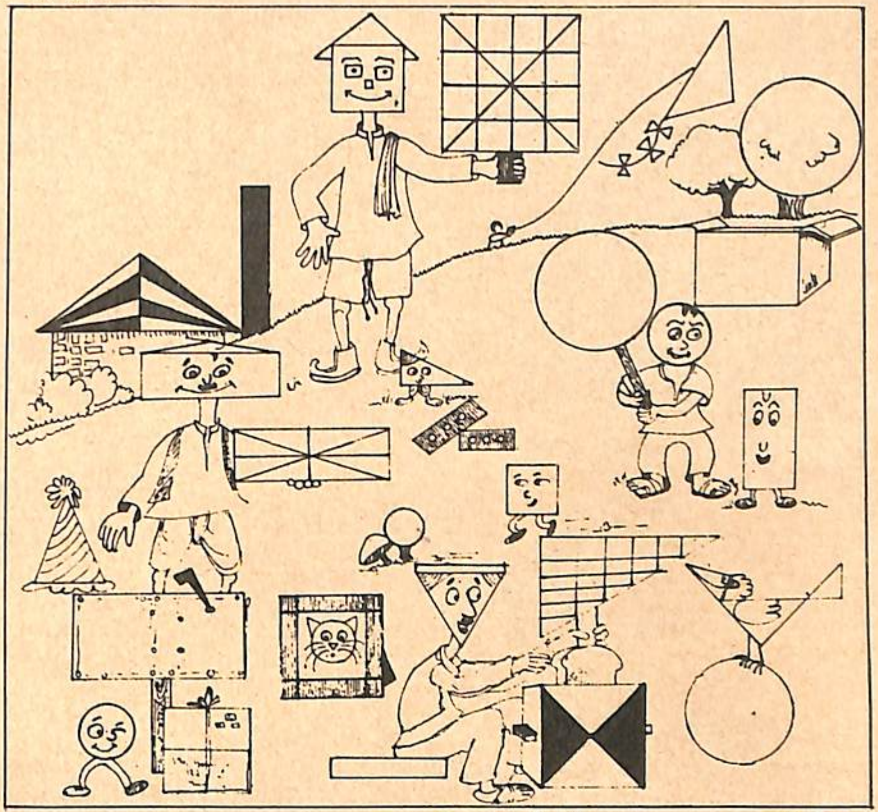

एक लड़का मछली पकड़ने निकला, पर वह इसी चित्र में कहीं खो गया है। क्या तुम उसको ढूंढ सकते हो? जब इतना कर ही रहे हो तो लगे हाथ इसी चित्र में खोए दो मेंढक, दो कुत्ते, दो मछली, दो घोंघे, एक बतख और एक आदमी भी ढूंढ निकालो।

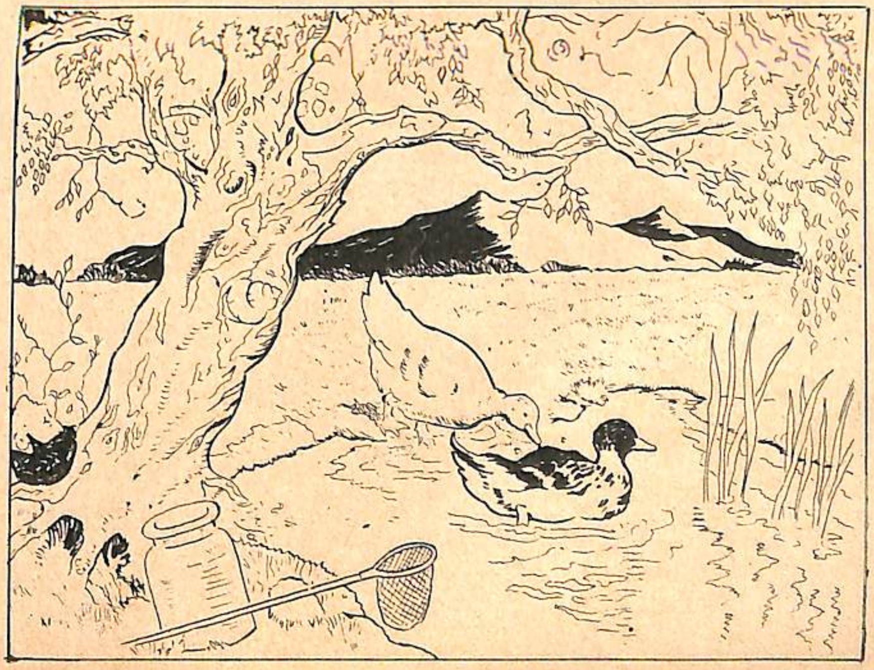

कविता का पन्ना

बिजली रानी

बिजली रानी, बिजली रानी,
हाय तुम्हारा क्या कहना।
सूरज, चांद हमारे भैया,
तुम हो सबकी बहना।
बिजली रानी न्यारी है,
जगवालों की प्यारी है।
चिमनी में हम पढ़ते भाई,
यह दुखड़ा भी सुनलो भाई।
बार-बार अब बिजली रानी,
रूठ-रूठ जाती है।
कभी देर तक जलती रहती,
या घंटों गुल हो जाती है।
बिजली रानी, बिजली रानी,
बात हमारी सुनना।
अंधियारे को दूर भगाकर,
उजियारा ही करना।

वर्षा जोशी
उज्जैन

लड्डू

गोल-मोल है सबसे न्यारा,
लड्डू प्यारा, लड्डू प्यारा।
मन कहता उसको खा जाऊं,
किंतु कहां से पैसा पाऊं?
मीठा इतना क्यों कर होता,
क्यों वह सबका धीरज खोता।
देखो जिसे वही ललचाता,
कोई उससे नहीं अघाता।
लड्डू लेकर चटपट खाना,
है यह कैसा काम सुहाना।
हलवाई जो इसे बनाता,
क्यों न सभी को मुफ्त खिलाता।
यही मिठाई का है राजा
खाता वही बजाता बाजा।
हरदम है वह तान उड़ाता,
एक बार जो है पा जाता।
लड्डू की है किस्मत भारी,
जिसे चाहते हैं नर-नारी।

पुरुषोत्तम सराठे,
कक्षा दसवीं, इटारसी

चूहे मामा

चूहे मामा चूहे मामा
चने फुटाने खाते आप
बिल्ली मौसी आती है तो
झट बिल में घुस जाते आप।
नए-नए कपड़ों की भी
हालत खस्ता कर जाते आप
धीरे-धीरे कुतर-कुतर कर
चिंदी सी कर जाते आप।
पाठ्य निगम से क्या दुश्मनी
पुस्तक कापी नहीं छोड़ते
चट उनको कर जाते आप
लाखों की पुस्तकें खाते आप।
छोटे से दिखते हो, लेकिन
हमको खूब छकाते आप।
खा-खा कर अपना पेट बढ़ाते
बढ़िया मौज मनाते आप।

अंजली टिकलकर
कक्षा दसवीं, हरदा

सच्चाई

सामने रखी थी अंगूरों की थाली,
मुंह में जोरों से आ रहा था पानी,
दिखने में रस भरे,
पर खाने में बिलकुल खट्टे।

अपर्णा मेहरा
कक्षा आठवीं, भोपाल

सर्कस वाले

वे अपना गम भुला कर
दूसरों के लिए मुस्कराते हैं
जान की परवाह न कर
हमें मनमोहक करतब दिखलाते हैं
यही जिंदगी है उनकी
न कोई सुख, न कोई दुख का साथी
रूखा-सूखा खाकर भी जोखिम भरे
साहसी कार्य कर दिखलाते हैं
एक दिन अपना जीवन समाप्त कर
सारा गम साथ लिए चले जाते हैं
ये हैं प्यारे सर्कस वाले
न्यारे और दुलारे सर्कस वाले।

उषा राव
कक्षा ग्यारहवीं, हरदा

आदमी

आदमियत के दामन से गिर गया है प्यार।
रोकड़ा तो पास उनके यहां चढ़ रहा उधार।।
रो-रो के सुबह-शाम करता है आदमी।
मसनद में बैठ कहकहे लगाता है आदमी।।
आदमी की जान का सौदागर है आदमी।
शोषित और भूखा, मुफलिस है आदमी।।
जुल्मों सितम की कहर बरसाता है आदमी।
घुट-घुट के सह रहा है वह भी है आदमी।।
आदमी के भीतर भी रहता है आदमी।
आदमी के बाहर भी रहता है आदमी।।
मैं कर रहा इंतजार कि नेक हो जाए आदमी!
मिलकर ये पूरा भारत एक हो जाए आदमी।।

शिवप्रसाद डडसेना
कैथा, बिलासपुर

हेमलता परसाई
कक्षा आठवीं, सोहागपुर

चरवाहा

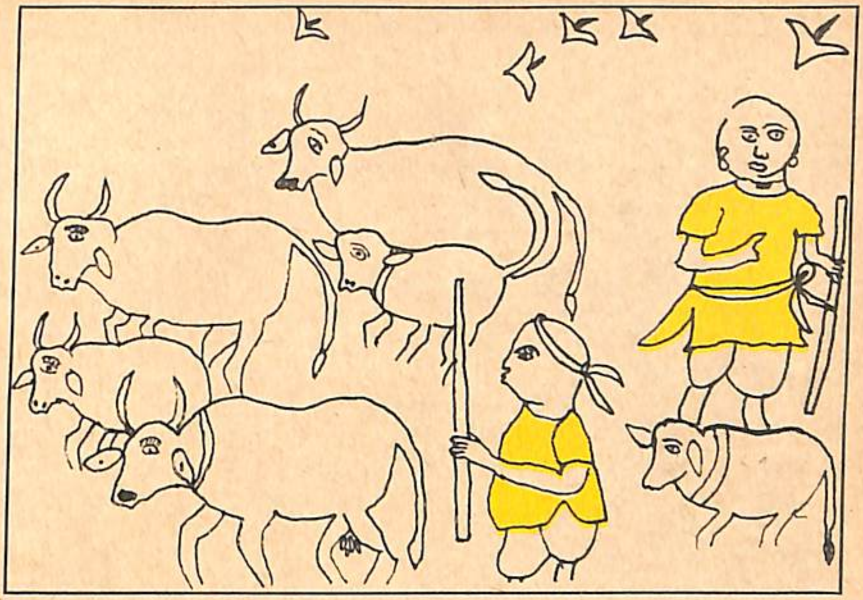

देविका पर्यूणा
9 वर्ष, भोपाल

पनघट पर मिली ...गुईयां

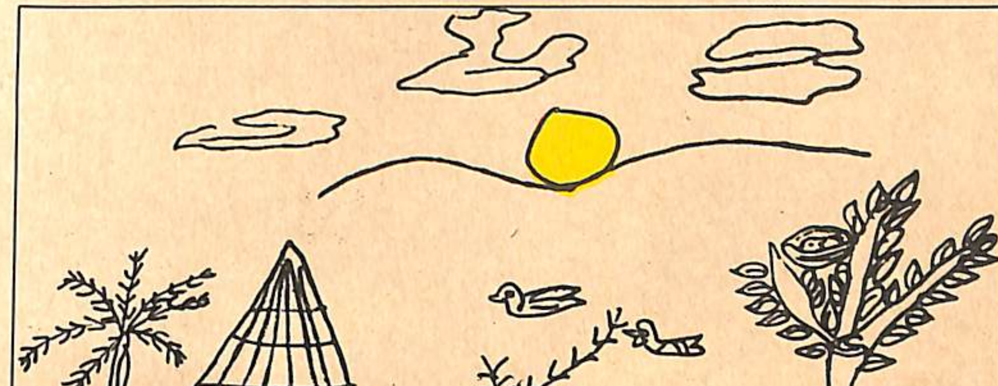

सब्जी वाला भैया

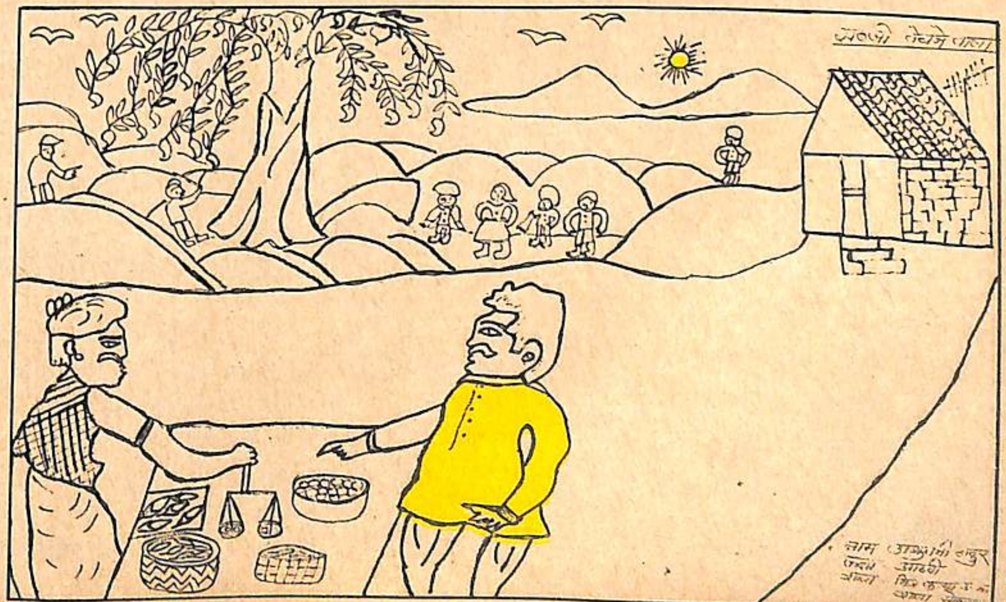

अशुरानी ठाकुर
कक्षा आठवीं, सोहागपुर

खेल खेल में

कांटे का डिवाइडर

तुम चार बबूल के कांटों और साइकिल वाल्व ट्यूब के टुकड़ों से यह डिवाइडर बना सकते हो। तुम जानते ही हो कि बबूल एक कांटेदार पेड़ होता है जिसका इस्तेमाल गांव वाले खेत-खलिंहानों की बागुड़ के लिए करते हैं।

इस डिवाइडर में तीन बबूल के कांटों को वाल्व ट्यूब के टुकड़ों से इस तरह जोड़ते हैं ताकि 'A' आकार बन जाए। डिवाइडर को अंगुलियों से पकड़ने के लिए एक और कांटे को इस 'A' के ऊपरी सिरे में जोड़ा जाता है।

चलो, तुम खुद इस डिवाइडर को बनाओ।

दो लंबे कांटे लो जिनकी लंबाई समान हो। उनके मोटे सिरों को एक वाल्व ट्यूब के दोनों तरफ पिरो दो; अब यह चिमटी जैसा होगा। इस के सिरे के वाल्व ट्यूब में एक कांटा फसा दो। अब इन तीन कांटों के बीच में वाल्व ट्यूब के टुकड़े फसा दो। ध्यान रहे कि यह वाल्व ट्यूब के तीनों टुकड़े एक सीध में रहें। अब एक कांटा आड़ा करके इन तीनों वाल्व ट्यूब में पिरो दो। आड़े कांटे से तुम्हारा डिवाइडर हिलेगा नहीं और मजबूत रहेगा।

यह लो, तैयार हो गया तुम्हारा डिवाइडर।

तुम पाओगे कि इस डिवाइडर की नोक कंपास बाक्स के डिवाइडर से भी नुकीली है। इसको इच्छानुसार अलग-अलग दूरियों पर आड़े कांटे की मदद से जमा सकते हो।

तुम चाहो तो इस डिवाइडर को परकार में भी बदल सकते हो। इसके लिए तुम एक बाल पेन की रिफिल लो। बिलकुल खाली रिफिल मत लेना; उसमें थोड़ी सी स्याही जरूर होना चाहिए, लाइन बनाने के लिए। रिफिल को लिखने वाले सिरे की ओर से 1 इंच पर काटो। इसको अब डिवाइडर की एक टांग में फसा दो। लो अब बन गया तुम्हारा परकार।

अरविंद गुप्ता

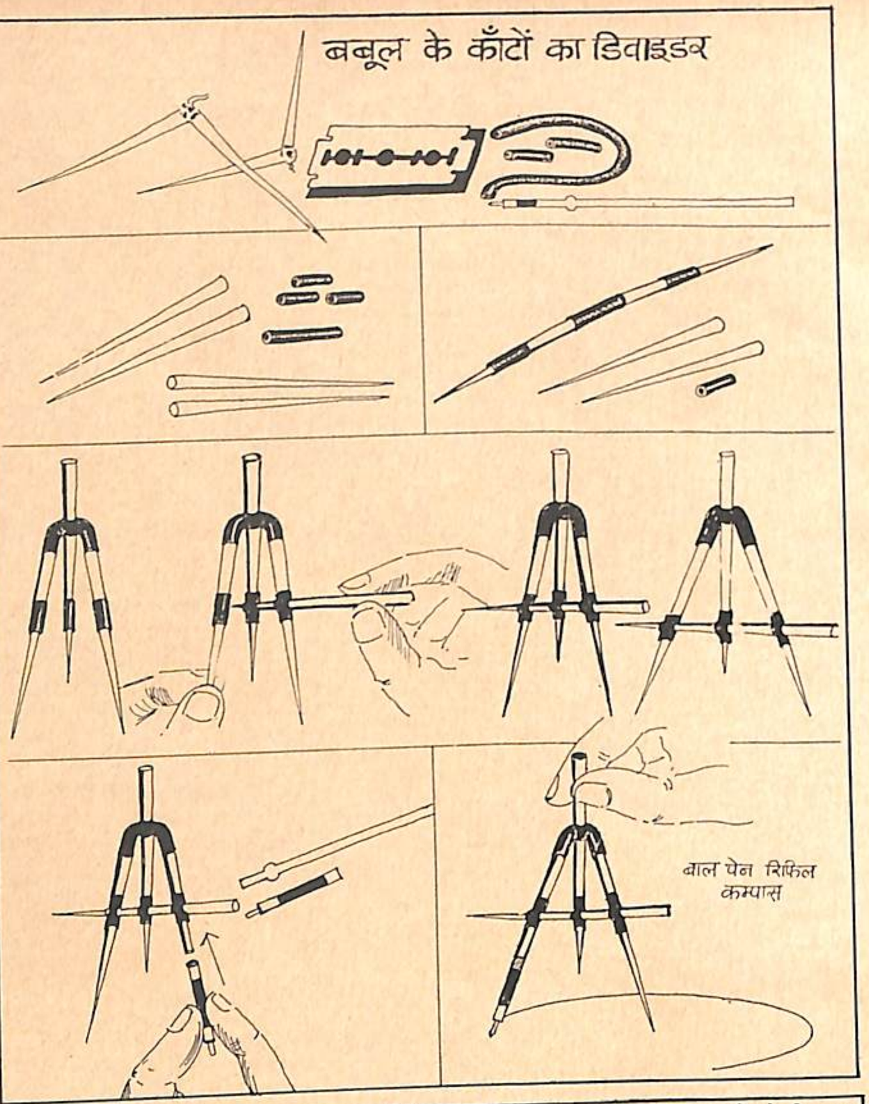

पुच्छल तारा

तुमने कभी पुच्छल तारा देखा है? क्या तुम जानते हो कि पुच्छल तारा क्या है? यह जानने के लिए तुम चकमक का अगला अंक (दिसंबर 1985) जरूर पढ़ो। इसमें हम पुच्छल तारों पर एक लेख दे रहे हैं। खासकर एक विशेष और मशहूर पुच्छल तारे के संबंध में।

इस पुच्छल तारे का नाम है हेली का पुच्छल तारा। हेली एक खगोल शास्त्री थे जिन्होंने करीब ढाई सौ साल पहले इस पुच्छल तारे का विस्तृत अध्ययन किया था।

यह पुच्छल तारा भी सभी पुच्छल तारों की तरह सूर्य का चक्कर काटता है। अपने इस सफर में करीब हर 76 साल बाद पृथ्वी के पास से गुजरता है। पिछली बार यह तारा 1910 में पृथ्वी के पास आया था। यहां प्रकाशित चित्र उसी समय कोडाइकनाल की वेधशाला से खींचा गया था। यह वेधशाला तमिलनाडू में आनामलाई पर्वत पर स्थित है।

अब 76 साल बाद यह तारा फिर दिखाई देगा। हां! तुम भी बिना दूरबीन के अपनी आंखों से यह पुच्छल तारा देख सकते हो—जनवरी 86 में।

यदि तुम उज्जैन, धार, हरदा, पिपरिया, होशंगाबाद या भोपाल में रहते हो और पुच्छल तारे का सूक्ष्म अध्ययन करना चाहते हो तो अच्छा मौका है। तुम अपने शहर के एकलव्य केंद्र से संपर्क करो (इन केंद्रों के पते चकमक के जुलाई अंक में छपे हैं)। इन केंद्रों पर दूरबीन उपलब्ध हैं। ये दूरबीन सबके उपयोग के लिए हैं, बच्चों से बूढ़ों तक।

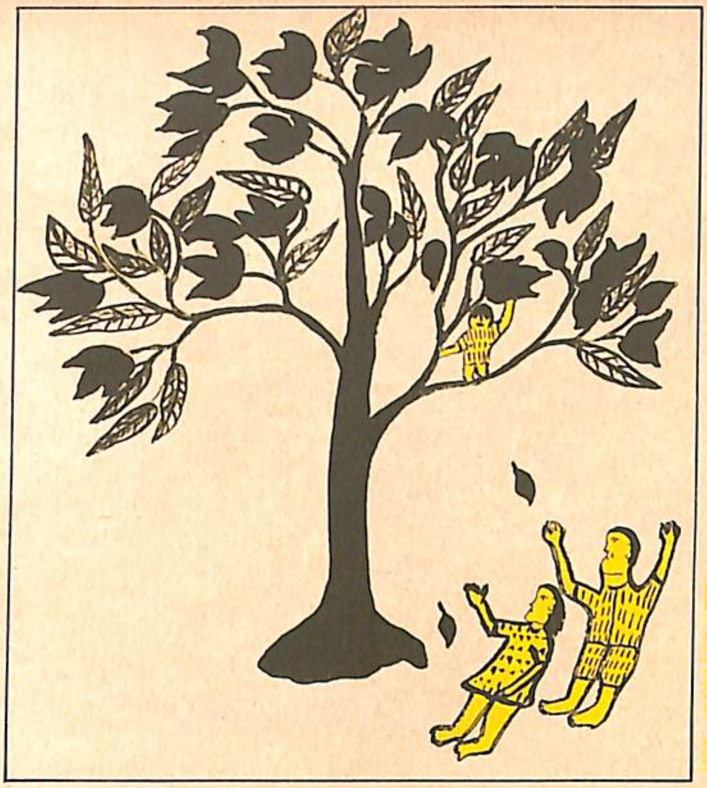

कैरी खाने की जुगाड़

एक बार हम सब दोस्त बैठे थे। तो हमने सोचा कि हमारे पास के बगीचे में कैरी उग आई होगी। तो फिर हम उधर गए। तो उधर पर माली बैठा था। हमने सोचा, कैसे जाना चाहिए? फिर एक दोस्त ने कहा, कि पीछे का दरवाजा खुला है। तो फिर हम पीछे गए। हम धीरे-धीरे घुस गए और कैरी तोड़ने के लिए जैसे ही पत्थर उठाया, वैसे ही माली आ गया। और हम भाग गए।

फिर हमने सोचा, अब कैसे अंदर घुसें?

फिर हमने सोचा, कि एक बड़ा सा लड़का जाकर उस से बातें करने लगे। फिर हम अन्य घुस कर कैरी तोड़ लेंगे। फिर एक बड़ा लड़का गया। वह उससे बात करने लगा। हम सब पीछे के दरवाजे से चले गए। हमारे एक दोस्त ने इतनी तेज पत्थर मारा कि माली के सिर पर पड़ा।

फिर माली दौड़ता हुआ आया और उसने लकड़ी फेंक के मार दी और वह बहुत नाराज हुआ। फिर हम छिप गए और हमको कैरी नहीं मिली। तो हमको भी बड़ा गुस्सा आ रहा था।

उस बगीचे के माली के सिर पर बाल नहीं थे। तो हमने उसके पास जाकर कहा।
''चिकनी मुण्डी चाय गरम
पीने वाला बेसरम।''
ऐसा कहकर हमने चिढ़ाया। फिर उसने गुस्से में लकड़ी बहुत जोर से मारी। तो हमने उसकी लकड़ी रखा ली और हमने उस से कहा, ''जब तक तुम हमको कैरी नहीं दोगे तो हम तुम्हारी लकड़ी नहीं देंगे। और अगर कैरी दे दोगे तो चिढ़ाएंगे भी नहीं।''
तो इस प्रकार उसने हमको कैरी दे दी।

सुनील कुमार अग्रवाल
कक्षा आठवीं, पिपरिया

हमारे गांव, सेमली तला में वैशाख में आम, कैरी का मौसम रहता है। फालतू बैठे-बैठे हमारे साथियों ने सोचा पटेल के बगीचा में जाकर चोरी करें, कैरी की।

हमने सोचा चार लड़के बगीचा में घुस जाना और कुछ बगीचा के दादा को बीड़ी पिलाकर पोट लेंगे। तुम कैरी अपनी झोली में भरकर लाना। फिर मजे से नोन के साथ और मसाले के साथ खाएंगे।

हम दादा को ऐसी -वैसी बातें करके गप्पों में लगाते रहे और वे लड़के कैरी तोड़ कर थैली में भर लाए। हमने सोचा चलो नमक-मिर्ची लगाकर अपन आम खाना शुरू करें। हम खाने लगे। हमको डर भी लग रहा था कि कहीं दादा न आ जाए। इतने में दादा आ गया। हमने कहा, ''दादा राम-राम।'' हम दादा को बैठाकर गप्प देते रहे। चार-छै लड़के आमों को गड़ा रहे थे। दादा ने देख लिया। दादा ने मारना शुरू किया। हम पानी में घुस गए। फिर दादा वे चोरी के आमों को खीसे में भरकर हमारे घर कहने गया।

हम दोपहर को घर गए। हमारे घर वालों ने हमें खूब मारा। उस दिन से हमने आम की चोरी बंद कर दी। उस दिन से हमारी गांव में चैंग बन गई और लोग हमें चिढ़ाते हैं।

लाखनसिंह पटैल
कक्षा आठवीं, पिपरिया

उन्होंने कहा.....

यदि तुम कुछ प्राप्त करना चाहते हो तो अर्पित करना सीखो।

— नेताजी सुभाष चंद्र बोस

शत्रु के लिए अपनी भट्टी इतनी गरम मत करो कि वह तुम्हें ही भूनकर रख दे।

— शेक्सपीयर

संकलन : विष्णु सिंह बड़कुड़
कक्षा छठवीं, जुलवानिया

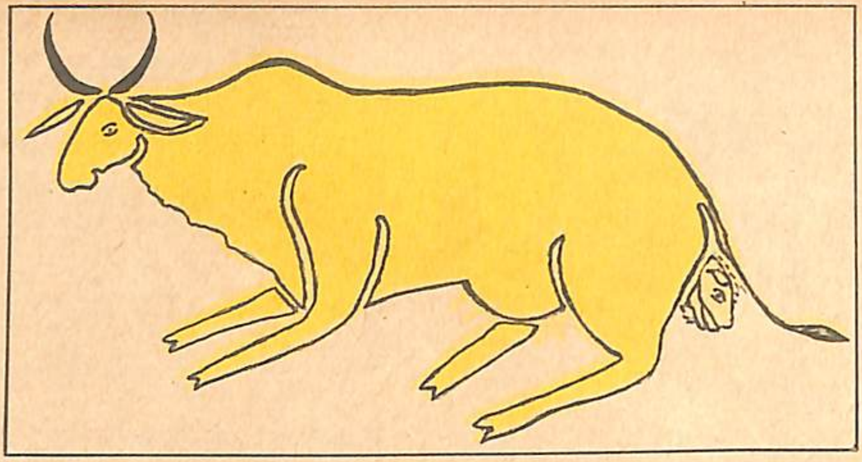

चित्र : जनगढ़ सिंह श्याम

जब हमारी गाय जनी

आज सुबह चार बजे से ही मम्मी का यहां-से-वहां आना-जाना और कुछ-कुछ, खटर-पटर करना लगा था। मेरी नींद तो खुल सी गई थी, पर मैं आलसी जो ठहरी। रजाई में, मुंह छिपाकर सोती रही। पूछा भी नहीं कि, 'मम्मी आप इतनी जल्दी क्यों उठ गई।

डर यह था कि, कहीं पूछने पर मुझे ही कुछ काम न लगा दें।

करीब पांच बजे मेरी छोटी बहिन प्रियंका अपने बाजू में मम्मी को न पाकर रोने लगी। उसका रोना सुनके मम्मी ने उसे समझाते हुए कहा, ''बेटी आज अपने यहां छोटा सा 'मन्ना' आया है।''

''सच मम्मी!'', यह कहते हुए मैं भी बिस्तर से उछल पड़ी।

मम्मी बोली, ''हां-हां बेटे! प्रियंका को तुम ले चलो। मैं जरा गरम पानी कर लूं।''

हम दोनों बहनें वहां गए, जहां गाय बंधी थी। बच्छा उसके सामने था। गाय उसे चाट-चाट कर साफ कर रही थी। इतने में मेरा छोटा भाई नीतेश भी उठ गया। अब हम तीनों यह सोचने लगे कि 'मन्ना' को कैसे अपने पास लाएं। क्योंकि गाय तो हमें मारने दौड़ रही थी।

भैया बोला, ''दीदी अपनी नंदा तो कभी मारती ही नहीं है। आज यह मारने क्यों दौड़ रही है?''

इतने में पापाजी मुंह-हाथ धोकर आ गए। वह भी तीन-चार बजे से लगे थे। हम लोगों को उत्सुक देखकर बड़े प्रसन्न हुए। बोले, ''कहो बच्चो, अपने घर कौन आया है?''

भैया ने पूछा, ''पापा आज नंदा मारने क्यों दौड़ रही है?''

पापा ने कहा, ''बेटा, गाय को अपने बच्चे पर स्नेह होता है। सोचती है ये लोग मेरे बच्चे को मारेंगे तो नहीं? इसीलिए पास नही आने देती?''

मैंने पूछा, ''क्यों पापा, आज मंगलवार है?''

पापा ने कहा, ''हां है! क्यों?''

''तब पापा अपने मन्ने का नाम भी मंगला ही रखेंगे ना!'' मैं बोली।

इस पर पापा बड़े खुश हुए। मम्मी को बताते हुए कहा, ''भई बच्चों ने तो बच्छे का नामकरण ही कर लिया। अब इसी खुशी में चाय मिल जाए। चार घंटे से परेशान हो रहे हैं।''

इतने में मम्मी चाय का प्याला लिए ही आ गईं। हम सभी को निर्देश देकर अंदर भेजा कि जाओ मुंह-हाथ धोकर दूध पियो।

दूध पीकर हम लोग फिर गाय के पास आ गए थे। और कहीं मन ही नहीं लग रहा था। अब मंगला नहा चुका था और आंगन में बैठा था। हम तीनों भाई-बहिन उसे हाथ फेर-फेर कर खिला रहे थे। प्रियंका तो भुसा उठा लाई और हाथों में रखकर उसके मुंह के पास ले गई। कहने लगी, ''खा लो मंगला तुम्हें भूख नहीं लगी?''

तब मां ने समझाया, ''बेटा वो अभी दूध ही पीता है। छोटा है न! इसलिए भूसा नहीं खाता।

हम लोगों का मन स्कूल जाने का नहीं हो रहा था। पर क्या करें, छैमाही परीक्षाएं पास ही आ गईं थीं। अतः मम्मी के समझाने पर मन मार कर स्कूल रवाना हुए। उस दिन स्कूल में भी मन नहीं लगा। शाम को स्कूल से आते ही बस्ते टेबिल पर डालकर मंगला के पास पहुंच गए। मंगला अब सुबह वाला मंगला नहीं रह गया था। हाथ रखते ही उठा खड़ा हुआ। फिर तो उसने उछलना शुरू कर दिया। हम लोग रात तक उसी के पीछे पड़े रहे। बार-बार मम्मी-पापा के जिद करने पर सोए। ऐसा था हमारा यह दिन, जिस दिन हमारी नंदा गाय जनी।

अभिलाषा गजौरिया
कक्षा आठवीं, पिपरिया

भूरी भैंस बियानी है

भूरी भैंस बियानी है, औ भैया
चिकी जमा दैयो!
जब बा भैंस ने पड़िया जनी है,
ओ की खुरीयां खोटी हैं
औ भैया......
पड़िया सपरा लचका दीनों,
भैंस ने जर को मिटाई है
औ भैया......
रामभरोसे ने चारो चरावो
जर को घूरे गड़ाई है
औ भैया......
जब बा पड़िया को दूध पिलाओ
दुहनी में चिकी लगाई है
औ भैया......
देव को चढ़ाई दैवतन को चढ़ाई
माता को दूध नहाई है
औ भैया......

एक पतीली में चिकी जमाई
मास्टर साहब को खिलाई है
औ भैया......
चार दिना में दूध जो हो गओ
दही की मटकी जमाई है
औ भैया......
जब दही मथ के मक्खन निकारो
तपा घी को निकारो है
औ भैया......
घी की कढ़ैया में पूड़ी पकाई
माता को धूप लगाई है
औ भैया......
खीर-पूरी के भोजन बनाए
गुरुजी को भोजन कराए हैं
औ भैया......

चंद्र भूषण परसाई
कक्षा छटवीं, रानी पिपरिया

(बुंदेलखंड के प्रसिद्ध लोकगीत 'मोरी बहू हिरानी है' की तर्ज पर)

भैंस जनने के पहले हमारी भैंस को बहुत बैचेनी होती है। इसके बाद भैंस के पेट में से पड़ेरू निकल आता है। पहले, पड़ेरू के अगले दोनों पैर और मुंह निकलते हैं। पड़ेरू निकल जाने के बाद भैंस पड़ेरू को चाटने लगती है। चाटने के पहले उसके नाखून खैट (काट) दिए जाते हैं। खैटने के बाद भैंस को दलिया या दाल-खली खिलाने से जर (वह रचना जिससे बच्चा-मां से जुड़ा रहता है) डाल देती है। जर डालने के बाद जर को एक टुकनिया या बोईया में रखकर घूरे या सर्प की पोल में डाल देते हैं। इससे क्या होता है कि उसको कुत्ते या बिल्ली न निकाल पाएं। इसके बाद पड़ेरू को थोड़ा-सा दूध पिलाते हैं। क्योंकि यदि हम ज्यादा दूध पिलाएं तो उसके फटा याने दूध लग जाता है।

इसके बाद भैंस को लगाते हैं। इसके पहले पांच दीया में लगाकर ग्वाल महाराज के यहां धरने जाते हैं। हम भैंस की लगभग 5 दिन चिकी खाते हैं और इसके आठ दिन बाद अठोरिया पूजा जाता है। आठ दिन के दूध में जितना घी निकलता है, उसमें अठोरिया के दिन पूड़ी बनाते हैं। पूड़ी बनने के बाद ग्वाल महाराज की पूजा की जाती है। अठोरिया पूजने के दिन नारियल फोड़ते हैं और बस्ती या मुहल्ला में प्रसाद बांटते हैं।

भैंस या गाय से बहुत लाभ होता है। हमारी भैंस प्रतिदिन पांच किलो दूध देती है। इस दूध में से जितना बिकता है बेच देते हैं। बाकी दूध का जाऊन यानी दही डालते हैं। और जब बहुत सारा जुड़ जाता है उसे खुरचकर या भांकर (मथकर) नहनू निकाला जाता है। नहनू को एक करैया में डालकर पंद्रह-बीस मिनट गरम करने से उसमें घी नीचे रह जाता है और मही ऊपर छा जाता है। भैंस से बहुत लाभ होता है। बोदा पैदा होता है, किसानी के काम आता है। पड़िया ब्या जाती है तो उससे और भी पड़ेरू बढ़ते हैं। घी खाने को मिलता है।

बशीर खां
कक्षा आठवीं, उमरधा

एक शिक्षक ने छात्रों को समझाते हुए कहा कि कई नालियों को मिलकर एक नाला बनता है। उसके पश्चात् उन्होंने एक छात्र से पूछा तो वह तुतलाकर बोला ''कई नानियों से मिलकर एक नाना बनता है।''

जन्मजय रजक
कक्षा नवमीं, ढीमरखेड़ा

खेत में लगाया लबोदा

चित्र : जनगढ़ सिंह श्याम

ज्येष्ठ-आषाढ़ के महीने में हम रोपा डालते हैं और उसके सूखने के बाद हम उसमें आग लगा कर जला देते हैं। जलाकर फिर उसको हम बखर देते हैं। फिर थोड़ा पानी गिर जाने के बाद हम थरो डालते हैं।

धान की पौद फिर उग आती है। उगने के बाद वो थोड़ा-बहुत बड़ा हो जाता है। फिर उसमें खाद डालते हैं। गोबर की खाद भी हम बाल्टी में घोल कर डाल देते हैं। निमोनिया की खाद भी डालते हैं। इससे वो जल्दी बढ़ जाता है। फिर खेत में पानी नहीं होता तो हम कुओं से पानी लेकर खेत मचाते हैं।

बखर जैसा रहता है, उसमें आठ खूटियां रहती हैं, उससे सब कचड़ा साफ हो जाता है। फिर हम सब पौद उखाड़ते हैं। उखाड़कर ले आते हैं। और बंधिया की महड़ के पास रख देते हैं। मुठ्ठी में पौद ले लेते हैं और बहुत सी औरतें लबोदा लगाती हैं। वे सब बंबुलियां वगैरा गाती जाती हैं। फिर हमारी लबोदा लग जाती है। फिर 15 दिन के बाद उसका चारा नींदते हैं। चारा नींदने के बाद फिर से उसमें खाद डाल देते हैं। जिससे वह जल्दी पक जाए।

क्वार-कार्तिक के महीने से हम धान की फसल काटना शुरू कर देते हैं। घर से हम लोग हंसिया ले आते हैं। हम सब लाइन बार बैठकर काटते हैं। और कोई नौहर (झुककर) के काटते हैं। आपस में बातचीत करते रहते हैं और काटते जाते हैं।

काटने के बाद फिर सब लोग पूरा बांधते हैं जिससे कि अपनी खलिहान में उठाकर ला सकें। इसके पहले हम खलिहान का चारा-आरा, कचड़ा साफ करते हैं। जिससे हम धान खलिहान में ला के रख लें। फिर उसकी दावन करते हैं। उसमें चार-छह बैल जुटाते हैं और एक आदमी उनके पीछे से हांकता है। फिर उस दावन को खूरते-खकूड़ते हैं। जिससे कि उसकी सब धान के कनूका झर जाएं। धान झर जाने के बाद फिर उसका पुआर झरा-झरा कर अलग रख देते हैं। एक ऊंचा गांज बना देते हैं। फिर उस धान को इकट्ठी करते हैं। फिर उसकी सेढ़ पर एक नर्मदा जल की शीशी रखते हैं। एक दीपावली की गोधन का कंडा भी रखते हैं।

फिर उसको सूपा में भर-भर कर उड़ाते हैं। ऊंचे हाथ करके उसको हिलाते हैं और सूपा से उसकी फटकनी मारते हैं। सब उड़ा-फटक कर के फिर उसे ढंगते हैं। फिर उसे हम लोग घर की कुटिया में रख देते हैं। और उसको दरा देते हैं। जिससे चावल निकलते हैं। चावल हम लोग खाते हैं। भात बनाते हैं। फिर उसका पुआर बैल, गैया, भैंस को चराते हैं और उसके कोंड़े को बैलों को खुवा देते हैं। इसी तरह हमारी लबोदा लगती है। इसी तरह धान की फसल काटते हैं।

ओमप्रकाश कहार
कक्षा सातवीं, जुन्हैटा

(ओमप्रकाश, शब्द 'निमोनिया' नहीं, बल्कि 'अमोनिया' है। किसान अमोनिया नहीं, अमोनियम सल्फेट डालते हैं। इस खाद में नाइट्रोजन होता है जो पौधों की वृद्धि के लिए आवश्यक है। नाइट्रोजन अन्य रासायनिक खादों से भी प्राप्त हो सकता है, जैसे यूरिया, सुफला, डाइअमोनियम फास्फेट आदि। रासायनिक खाद से पौधों को पोटाश, फॉस्फोरस तथा अन्य आवश्यक रसायन भी प्राप्त होते हैं। सं.)

सवालीराम

सांप बीन की धुन पर क्यों नाचता है?

"**सं**पेरा आया, संपेरा आया....।" सारे बच्चे भाग-भाग कर गांव के चबूतरे पर पहुंचे। संपेरा अपनी टोकरियों को जमा रहा था। बच्चे एक दूसरे को धकेलते हुए टोकरी के अंदर झांकने की कोशिश में मग्न थे। तभी सपेरे ने एक टोकरी का ढक्कन हटाया। अंदर सांप कुंडली बनाकर सोया हुआ था। संपेरे ने टोकरी को एक-दो बाद हिलाया और बीन बजाना शुरू किया। बच्चे सांप को देखकर सम्मोहित हो गए। सांप टोकरी में खड़ा होकर झूमने लगा। सांप ने अपना फन फैला लिया था। ऐसा लग रहा था मानो बीन की धुन पर नाच रहा हो।

क्या वास्तव में सांप बीन सुनकर नाचता है? सांप के बारे में इस तरह की कई मजेदार भ्रांतियां प्रचलित हैं। कभी-कभी यह भ्रांतियां इतनी सही लगती हैं कि असलियत जानना मुश्किल हो जाता है। बीन की धुन के स्वरों को पहचानना तो दूर, सांप बीन सुन भी नहीं सकता। फिर यह क्यों नाचता है? क्यों सीधा खड़ा होकर फन लहराता है?

सांप के खड़े होने का कारण स्पष्ट है। यदि तुम्हें एक छोटे से कमरे में रातभर बंद किया जाए तो तुम कमरा खुलते ही खुशी के मारे दौड़ते-भागते कमरे से निकलोगे। वैसे ही सांप भी बहुत समय तक टोकरी के अंदर बंद रहने के बाद रोशनी की झलक पाकर अपना शरीर पसारता है और सीधा खड़ा होकर लहराने लगता है।

कभी-कभी सांप टोकरी से निकलने में देरी करता है तो संपेरे महाशय की सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती है। टोकरी को बार-बार ठोक-पीट कर वह सांप को बाहर निकलने के लिए मजबूर करने लगते हैं। जब सांप बाहर निकलकर खड़ा हो जाता है तब वह आंखों के सामने बीन देखता है। तुमने देखा ही है कि बीन बजाते समय संपेरा बीन की लय के साथ-साथ अपने शरीर और बीन दोनों को हिलाता है। हिलती हुई बीन देखकर सांप भी हिलने लगता है, डर के मारे कभी बीन से बचने के लिए और कभी बीन को काटने के लिए। देखने वालों को लगता है कि सांप बीन की धुन सुनकर नाच रहा है।

एक और मजेदार बात है इस संबंध में। सांप रेंगकर चलता है। रेंगते समय सारा शरीर जमीन के संपर्क में आ जाता है। शरीर की त्वचा में कई तंत्रिकाएं होती हैं जो बहुत संवेदनशील होती हैं। ये जमीन में चलने वाले हल्के-से-हल्के कंपनों को भी पहचान लेती हैं। सांप के कान नहीं होते और न ही सुन सकता है। लेकिन उसकी संवेदनशील त्वचा और उसकी कंपन पहचानने की शक्ति उसके सुरक्षा साधन हैं। जब कोई मनुष्य या अन्य प्राणी जमीन पर चलते हैं तो सांप उनके पैरों से उत्पन्न कंपनों को 'सुनकर' एक तरफ हो जाता है ताकि वह कुचल न जाए।

यदि तुम सांप से बच कर रहना चाहते हो तो चलते समय पांव को फटकारते चलो, या लाठी जमीन पर ठोकते हुए चलो। हां, लाठी से सांप को खत्म मत करो। सांप मनुष्य से डरता है और तब काटता है जब उसे लगे कि उसकी जान खतरे में है। नहीं तो वह चुपके से झाड़ियों में खिसक जाता है। दूसरी बात यह है कि सभी सांप जहरीले नहीं होते हैं। चूहे आदि खाकर सांप किसान और मनुष्य की सेवा करता है।

(अगले किसी अंक में हम सांप के बारे में एक विस्तृत लेख देंगे।)

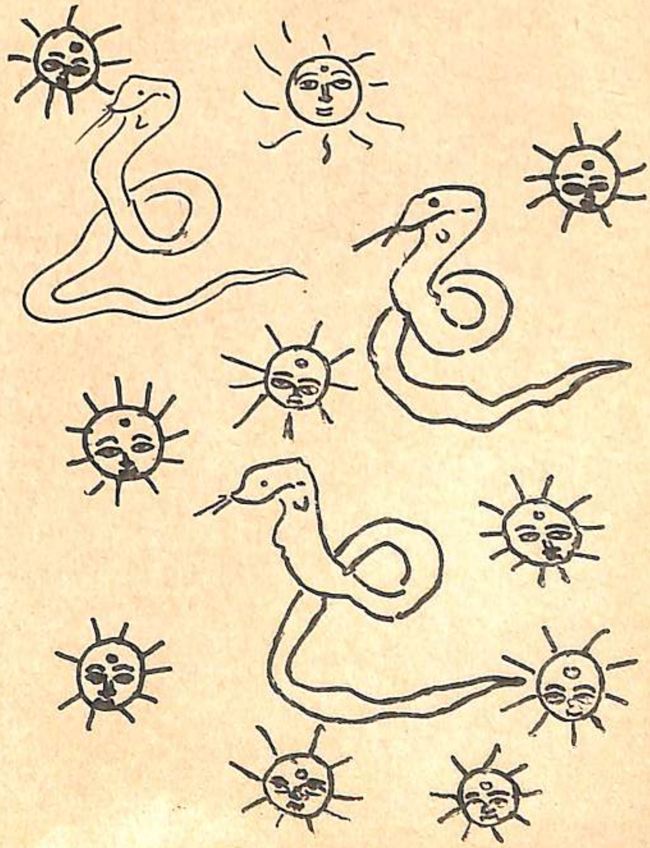

दो बड़े मित्र

एक बंदर और खरगोश बड़े मित्र थे। एक दिन उन्होंने एक आदमी को देखा जो कि अपने सिर पर फलों से भरी टोकनी ले जा रहा था। बंदर केले खाना चाहता था। खरगोश बहुत होशियार था। वह उस मनुष्य के सामने से गया। जब उस मनुष्य ने खरगोश को देखा तो टोकनी को जमीन पर रख दी और उसे मारने के लिए उसके पीछे दौड़ा। इतने में बंदर फलों की टोकनी लेकर भाग गया और एक झाड़ी में छिप गया। खरगोश बहुत तेजी से भाग गया। वह आदमी उसे न मार सका। बंदर ने एक-के-बाद-एक सब केले खा लिए। खरगोश को एक भी केला न मिला। वह बंदर पर बहुत नाराज हुआ। बंदर ने कहा, ''कौन जानता था कि तुम जीवित लौट आओगे।''

उर्मिला कुमारी सोनी
कक्षा छठवीं, गाडरवारा

सबूत पेश करो

विभागीय जांच चल रही थी। रामकिशन (गांव का एक किसान) ने शिकायत की थी कि बाबू ने एक सौ पच्चीस रुपए रिश्वत लेकर उसका ऋण मंजूर किया था। जांच अधिकारी ने शुरू में साफ कह दिया था, ''देख भाई, मैं एकदम ईमानदार और कठोर अफसर हूं। शिकायत सही साबित की गई तो मैं उस बाबू को छोड़ूंगा नहीं। हां,तो सबूत पेश करो।''

''हजूर, इस बाबू ने ऋण मंजूर करने के एक सौ पच्चीस रुपए मुझसे लिए।'' रामकिशन ने कहा।

अधिकारी ने कहा, ''क्या सबूत है?''

''साहब, मैंने खुद इसे एक सौ पच्चीस रुपए दिए थे।'' रामकिशन ने कहा।

अधिकारी ने कहा, ''क्या सबूत है?''

''हजूर, यह आदमी मेरा भाई राजेंद्र सिंह है, इसी से मैंने रुपए उधार लेकर बाबू को दिए थे।'' रामकिशन ने कहा।

अधिकारी ने कहा, ''फिर भी क्या सबूत है?''

रामकिशन चकरा गया, सोचने लगा अब क्या सबूत लाए। एकाएक उसके भाई के दिमाग में सूझा। उसने जेब से डेढ़ सौ रुपए निकाले और धीरे से अधिकारी की मुट्ठी में सरका दिए।

''यह क्या है?'' अधिकारी ने कहा।

रामकिशन ने कहा, ''सबूत है, हजूर।''

अधिकारी द्वारा जांच का निर्णय दिया गया कि– 'सबूतों से यह प्रमाणित होता है कि बाबू ने रिश्वत ली थी।'

संकलित : कमल सिंह राठोर
कक्षा ग्यारहवीं, तिरला, धार

मुल्ला जी की पगड़ी

चित्र : गणेश मालवीय, होशंगाबाद

अकबर बादशाह के दरबार में कई मुल्ले भी शरीक थे। उन्हीं में से एक मुल्ला जी का नाम प्रसिद्ध था। अकबर के दरबार में बीरबल नामक एक होशियार चतुर व्यक्ति भी था। मुल्ला जी बीरबल से प्रकट में तो हंसी-मजाक किया करता था। परंतु भीतर-ही-भीतर उसे छिपाकर अपनी प्रधानता चाहता था।

एक दिन दरबार भरा हुआ था। तब बादशाह ने सबके सामने बीरबल की पगड़ी की तारीफ की। मुल्ला जी बीरबल से जलते थे। और जैसे ही उन्होंने बीरबल की पगड़ी की प्रशंसा सुनी तो और भी जल उठे। परंतु अपना भीतरी भाव छिपाकर बादशाह से बोले, ''यह कौन-सी बड़ी बात है? मैं इससे भी अच्छी पगड़ी बांध कर बता सकता हूं।''

मुल्ला जी को दूसरे दिन पगड़ी बांधने की कला दिखाने की आज्ञा देकर बादशाह ने दरबार बरखास्त किया। मुल्ला जी मन-ही-मन खुश था। सुबह होते ही मुल्ला जी पगड़ी बांधकर सभा में हाजिर हुए। बादशाह को मुल्ला जी की पगड़ी बांधने की कला पसंद आई और सभा में बैठे सभी लोगों के सामने प्रशंसा की। यहां तक कि बीरबल की पगड़ी से भी अच्छी बताई।

तब बीरबल बोला, ''जहांपनाह, यह इसकी करतूत नहीं है। बल्कि इसका श्रेय इसकी पत्नी को मिलना चाहिए। उसी की मदद से मुल्ला जी ने यह बाजी मार ली है। यदि मेरी बातों पर विश्वास न हो तो सबके सामने फिर से पगड़ी बांधकर दिखलवाएं।''

मुल्ला जी की पगड़ी उतार दी गई। परंतु वे दर्पण की सहायता के बिना फिर वैसे पगड़ी बांध न सके। और उन्हें बादशाह के सामने शरमाना पड़ा। इस पर बादशाह को हंसी आ गई। और वे बोले, ''धन्य है मुल्ला जी। जो काम आपसे नहीं बनता वह आप अपनी जोरू से करवाते हैं।''

संकलित : गणेश प्रसाद मालवीय
कक्षा ग्यारहवीं, होशंगाबाद

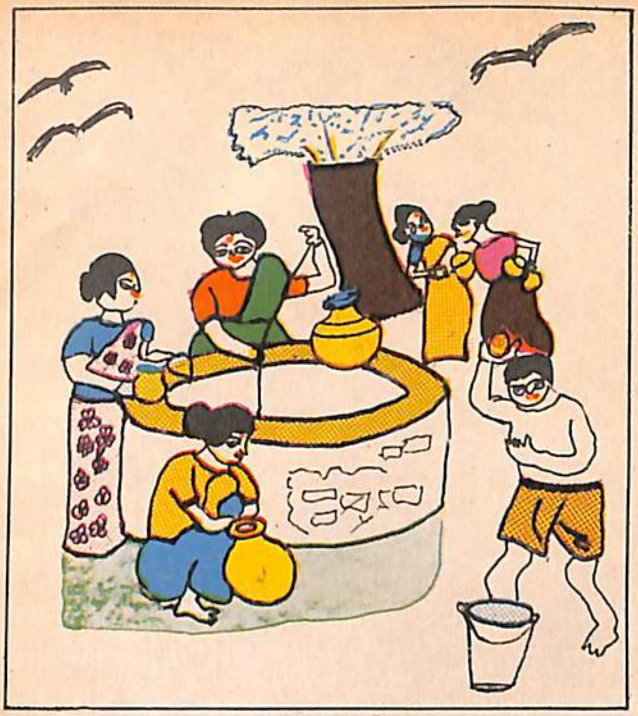

अनीता ओंकारी
कक्षा आठवीं, सेमरी हरचंद

कितना है
गहरा..

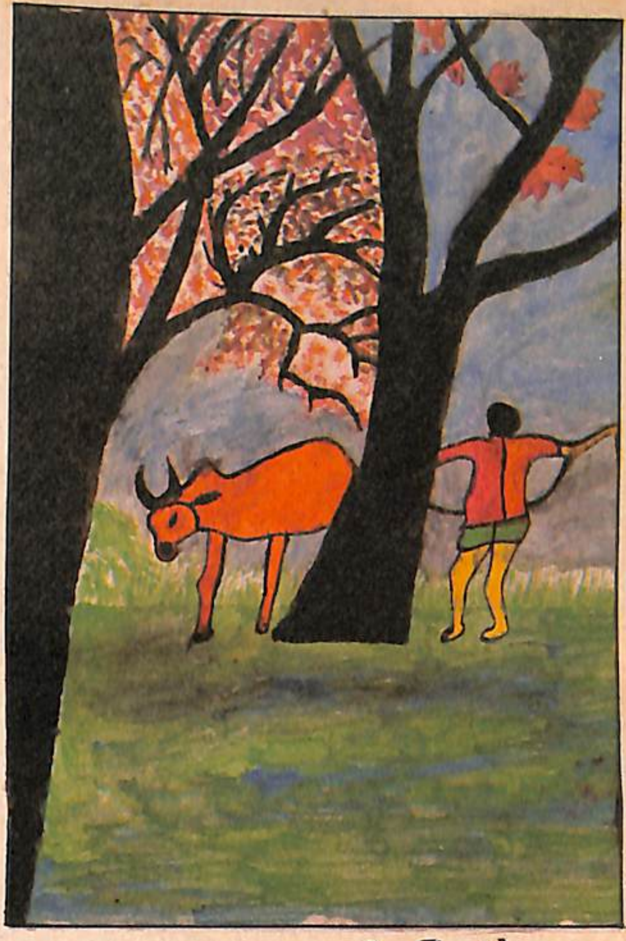

निशा जैन
कक्षा आठवीं, पिपरिया

चल मेरी गैया...

बोता है खेतों में जीवन तू ही तो हर साल
किंतु महाजन हर मौसम में करता तुझे हलाल

अनुज कुमार पटेल
कक्षा सातवीं, पिपरिया

पंजीयन क्रमांक 1317/नी. 85

एकलव्य के लिए रेक्स डी. रोजारियो द्वारा प्रकाशित एवं भंडारी आफसेट प्रिंटर्स भोपाल द्वारा मुद्रित

डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431